वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
1992-93

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

विषय सूची

संकल्पना 3

न्यास का निर्माण 4

संगठन 4

कार्यकलाप 5

कला निधि 9

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय 9

कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक 14

कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार 19

कार्यक्रम घ : क्षेत्र अध्ययन 21

कला कोश 23

कार्यक्रम क : कलातत्त्वकोश 24

कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र 24

कार्यक्रम ग : कलासमालोचन 28

कार्यक्रम घ : कला विश्वकोश 29

जनपद सम्पदा 31

कार्यक्रम क : मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह 32

कार्यक्रम ख : बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां 33

कार्यक्रम ग : जीवन शैली अध्ययन 34

कार्यक्रम घ : बाल जगत 39

कला दर्शन 41

कार्यक्रम क : संग्रह 41

कार्यक्रम ख : संग्रहालय और प्रदर्शनियां 41

कार्यक्रम ग : प्रलेखन तथा प्रकाशन 43

कार्यक्रम घ : वार्ताएं एवं व्याख्यान 43

सूत्रधार 44

क : कार्यालय 44

ख : आपूर्ति एवं सेवाएं 44

ग : शाखा कार्यालय 44

घ : चित्र एवं लेखे 44

ङ : आवास 45
च : शोधवृत्ति योजना 46
छ : राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संबंध स्थापन 46
ज : अन्तर्राष्ट्रीय संवाद 47

भवन परियोजना 50

अनुबन्ध 51
1. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य 51
2. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्य 54
3. अधिकारियों की सूची 55
4. वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं और परामर्शदाताओं की सूची 57
5. वर्ष 1992-93 के दौरान हुई संगोष्ठियां कार्यशालाएं 59
6. वर्ष 1992-93 के दौरान हुई प्रदर्शनियां 60
7. मार्च, 1993 तक के प्रकाशनों की सूची 61
8. वीडियो व ऑडियो प्रलेखन 72
9. अप्रैल, 1992 से 31 मार्च, 1993 तक हुई घटनाओं की तालिका 74
10. विभिन्न सम्मेलनों संगोष्ठियों कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए भेजे गए अधिकारियों का ब्यौरा 79
11. सदस्य सचिव डॉ. कपिला वात्स्यायन द्वारा वर्ष 1992-93 के दौरान भाग लिए गए सम्मेलनों, संगोष्ठियों की सूची 82

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

संकल्पना

श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में स्थापित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कल्पना एक ऐसे संस्थान के रूप में की गई है जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप उसका एक अलग अस्तित्व रखते हुए भी पारम्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में, प्रकृति, सामाजिक संरचना और क्रियाशील व्यवस्था के साथ पारस्परिक रूप से संबद्ध हो।

कलाओं के विषय में यह दृष्टिकोण जो मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखंड रूप से जुड़ा है, और इसके लिये आवश्यक भी है, श्रीमती गांधी की इस मान्यता पर आधारित है कि कलाओं की भूमिका मनुष्य के लिये व्यक्तिगत रूप में तथा एक सामाजिक प्राणी के रूप में उनके अंतरंग गुणों को विकसित करने के लिये आवश्यक है। यह दृष्टिकोण सम्पूर्ण विश्व को एक समझने की (विश्वबंधुत्व) एवं विश्व की अखंडता की भावना (वसुधैव कुटुम्बकम्) में समाविष्ट है जो भारतीय परंपरा में सर्वत्र मुखरित है और जिस पर महात्मा गांधी तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे आधुनिक भारतीय मनीषियों ने भी बल दिया है।

यहाँ कलाओं के क्षेत्र को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है जिसमें शामिल हैं; लिखित तथा मौखिक रूप में उपलब्ध सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक साहित्य, काव्यकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखांकनकला से लेकर लोकप्रिय भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएं, अपने अधिक से अधिक व्यापक अर्थों में संगीत, नृत्य, नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाएं और मेलों, उत्सवों तथा जीवन शैली में उपलब्ध वह सब कुछ जो किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारंभ में केन्द्र अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित करेगा, लेकिन आगे चलकर वह अपना क्षेत्र अन्य सभ्यताओं तथा संस्कृतियों तक बढ़ा लेगा। अनुसंधान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सर्जनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेगा। अपने समग्र कार्य में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक तथा अंतर्विषयक दोनों प्रकार का होगा। केन्द्र के समग्र उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. कलाओं, विशेषकर लिखित, मौखिक और दृश्य स्रोत सामग्री के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना;
2. मुख्यतः स्थिर रूप से वैज्ञानिक अध्ययनों और सजीव प्रदर्शनों का आयोजन करने के लिये क्रोड संग्रह के साथ साथ जनजातीय और लोक कला प्रभाग स्थापित करना;
3. कला, मानविकी और सामान्य सांस्कृतिक परिवेश से संबंधित संदर्भ ग्रंथों, शब्द-कोशों, शब्दावलियों, विश्वकोशों के अनुसंधान और प्रकाशन के कार्यक्रम हाथ में लेना;
4. प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, गोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के माध्यम से विभिन्न परम्परागत तथा समकालीन कलाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद विचार-विमर्श के लिये एक मंच उपलब्ध करना;
5. दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी समसामयिक विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना ताकि बौद्धिक समझ-बूझ के उस अंतर को दूर किया जा सके जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञानों और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिनमें परम्परागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल है, के बीच उत्पन्न हो गया है;

6. भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसंधान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन के लिये मॉडल तैयार करना;

7. विविध सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल लेने-देने के रचनात्मक तथा गतिशील तत्वों को स्पष्ट करना;

8. भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता को बढ़ावा देना;

9. कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार माध्यमों का विकास करना और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर के संबंध में अनुसंधान कार्य करने और उनको मान्यता प्रदान करने के लिये भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों और अन्य शिक्षा संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

विशेष कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के माध्यम से कलाओं में अन्योन्याश्रय और कलाओं तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अन्य रूपों के बीच अन्योन्याश्रय संबंध, विभिन्न क्षेत्रों के बीच परस्पर प्रभाव तथा जनजातीय, ग्रामीण और शहरी तथा स्थानीय एवं वैश्विक परम्पराओं के बीच पारस्परिक संबंधों का पता लगाया जाएगा और उनको अभिलिखित तथा प्रस्तुत किया जाएगा।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, कला विभाग के संकल्प संख्या एफ. 16-7/86-कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसरण में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास को नई दिल्ली में दिनांक 24 मार्च, 1987 को विधिवत् रूप से गठित व पंजीकृत किया गया था।

प्रारम्भ में एक 7 सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया था। बाद में भारत सरकार की अधिसूचनाओं के द्वारा न्यासी मंडल में नए सदस्य जोड़े गए। वर्ष 1991-92 के दौरान न्यासियों की संख्या बढ़ाकर 21 कर दी गई। वर्ष 1992-93 के दौरान जो इक्कीस न्यासी पदभ्रहण किए हुए थे उनकी सूची अनुबंध 1 पर दी गई है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की जो कार्यकारिणी समिति 11 फरवरी, 1991 को गठित की गई थी उसके सदस्यों की सूची अनुबंध 2 पर दी गई है।

संगठन

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पात्मक योजना में वर्णित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए और अपने प्रमुख लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए केन्द्र अपने पांच प्रभागों के माध्यम से कार्य करता है जो संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त होते हुए भी कार्यक्रमों के आयोजनों के मामले में परस्पर जुड़े हुए हैं।

इंदिरा गांधी कला निधि : इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान के लिए प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिये बहुविध संग्रहों से सुसज्जित सांस्कृतिक संदर्भ पुस्तकालय है, जिसे संबल प्रदान करने के लिये (ख) कलाओं, मानविकी विषयों तथा सांस्कृतिक परम्पराओं (धरोहर) पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक और (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार तथा वाचनालय, विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह और क्षेत्र अध्ययन की व्यवस्था है।

इंदिरा गांधी कला कोश : यह प्रभाग आधारभूत अनुसंधान कार्य करता है। यह ऐसे दीर्घकालिक कार्यक्रम आरम्भ करता है, जिनमें (क) कला और शिल्प की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा बुनियादी तकनीकी शब्दों का संग्रह और अंतर्विषयक शब्दावलियां, (ख) भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रंथों की श्रृंखला (कलामूलशास्त्र),

(ग) भारतीय कलाओं के विषय में समीक्षात्मक कृतियों के पुनर्मुद्रण की श्रृंखला (कला समालोचन) और (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखंडीय विश्वकोश सम्मिलित हैं।

इन्दिरा गांधी जनपद सम्पदा : यह प्रभाग (क) लोक तथा जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री का संग्रह तथा प्रलेखन करता है, (ख) बहुविध संचार माध्यमों के जरिए प्रस्तुतियां करता है, (ग) जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए व्यवस्था करता है जिससे कि समग्र भारतीय सांस्कृतिक दृश्य प्रपंच और पर्यावरणात्मक, पारिस्थितिक, कृषि विषयक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार किए जा सकें, इनके अलावा, (घ) इसने एक बाल शिक्षाशाला स्थापित की है और (ङ) एक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करेगा।

इन्दिरा गांधी कला दर्शन : कला एवं संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अंतर्विषयात्मक संगोष्ठियों एवं प्रदर्शनियों के लिये एक मंच की व्यवस्था करता है। इसके भवनों में तीन वीथिकाएं (थियेटर) और बड़ी दीर्घाएं होंगी

सूत्रधार : अन्य सभी प्रभागों को प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता तथा सेवाएं प्रदान करता है।

संस्था के अकादमिक प्रभाग अर्थात् कला निधि तथा कला कोश अपना ध्यान प्रमुख रूप से बहुविध प्राथमिक एवं गौण सामग्री के संग्रह पर लगाते हैं, आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करते हैं, रूप के सिद्धान्तों का पता लगाते हैं और पारिभाषिक शब्दावलियों को स्पष्ट करते हैं। वे यह कार्य सिद्धान्त और पाठ (शास्त्र) और बौद्धिक चर्चा (विमर्श) और निर्वचन (मार्ग) के स्तर पर करेंगे। जनपद सम्पदा और कला दर्शन प्रभाग लोक, देश तथा जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन कार्य तथा जीवन शैली और मौखिक परम्पराओं पर ध्यान देते हैं। चारों प्रभागों के कार्यक्रम सम्मिलित रूप से कलाओं को उनके जीवन तथा अन्य विषय संबंधी मूल संदर्भों में प्रस्तुत करते हैं।

प्रत्येक प्रभाग में अनुसंधान करने, कार्यक्रम बनाने और अंतिम निष्कर्ष निकालने की रीतियां एक जैसी हैं। हर प्रभाग का कार्य दूसरे प्रभागों के कार्यक्रमों का पूरक होता है।

वार्षिक रिपोर्ट

1 अप्रैल 1992 से मार्च 1993 तक

कार्यकलाप

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के लिये, वर्ष 1992-93 सर्वतोमुखी प्रगति तथा विकास का वर्ष रहा। अपनी कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष श्री पी.वी. नरसिंह राव के मार्गदर्शन में केन्द्र ने विभिन्न दिशाओं में बहुत तेजी से प्रगति की।

1992-93 एक ऐसे वर्ष के रूप में पूर्णित हुआ, जिसमें इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपनी प्रदर्शनियों, फिल्म प्रदर्शनों, पुस्तिकाओं कार्यक्रमों, अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों और व्याख्यान मालाओं के माध्यम से अपेक्षाकृत अधिक दर्शकों तथा श्रोताओं तक पहुंचा।

प्रदर्शनियां

पहली प्रमुख घटना थी मई, 1992 में "पत्थरों में संवाद: बृहदीश्वर तथा गोविन्ददेव मंदिरों की वास्तुशिल्पीय चित्रकारियां" शीर्षक प्रदर्शनी का आयोजन। "छायांकन के माध्यम से" शीर्षक योजना के अन्तर्गत डॉ. फ्रांसिस्को दि ओराजी फलावोनी की प्रदर्शनी "गवांगी" और हेनरी कार्टिए ब्रेस्सों की प्रदर्शनी "भारत" क्रमश: 7-13 सितम्बर, 1992 और 11-25 नवम्बर, 1992 में लगाई गई। दोनों प्रदर्शनियां काफी लोकप्रिय सिद्ध हुई। ये फिर बंबई में भी लगाई गई।

स्त्रियों द्वारा बनाये गए मधुबनी चित्रों के साथ स्टूल द्वारा किए गए संग्रह की एक फोटोग्राफिक प्रदर्शनी जो सरदार पटेल विद्यालय में लगाई गई थी और माईकल मेस्के द्वारा प्रस्तुत किया गया पुतलियों का खेल "एक अकेला कान", बच्चों के लाभ के लिए प्रदर्शित किए गए - दोनों को उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया।

वर्ष 1992-93 की बहु-विषयक तथा बहु-माध्यमिक प्रदर्शनियों में प्रमुख प्रदर्शनी थी: "प्रकृति: मानव महाभूतों के साथ संवाद" में जो जनवरी, 1993 में आयोजित की गई। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र परिसर के प्राकृतिक परिवेश में आयोजित इस प्रदर्शनी ने अपनी जटिलता में निहित सरलता के द्वारा कला जगत को चकित कर दिया। विद्वानों, पर्यावरणवादी विशेषज्ञों, समालोचकों तथा जन साधारण सभी ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और अनेक दैनिक समाचार पत्रों ने प्रशंसात्मक टिप्पणियां प्रकाशित कीं।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की एक अन्य प्रदर्शनी जिसने विवेकशील भावकों में व्यापक रूप से प्रतिक्रिया एवं प्रशंसा अर्जित की वह थी "निजाकली"। इसमें एक 82 वर्षीय ग्रामीण कलाकार श्रीमती मनोकला दुधल द्वारा महाभारत के प्रसंगों को लेकर की गई, स्वयंस्फूर्त रचनाशीलता चित्रकारियां प्रदर्शित की गई थीं। बाल भवन सोसाइटी के परिसर में आयोजित इस प्रदर्शनी को देखने के लिये अनेक अतिविशिष्ट महानुभाव पधारे और आबालवृद्ध सभी ने इसका आनन्द लिया।

फिल्में

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की प्रथम दो फिल्में "लाई हरोबा" जो श्री अरिबाम श्याम शर्मा द्वारा बनाई गई थी, और "बाहुला" जो श्री बासु चटर्जी द्वारा बनाई गई थी, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में दिखाई गई। इनमें से अन्तिम अर्थात् "बाहुला" ने पालोमर्स फिल्मोत्सव में राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता में रजत कमल पुरस्कार जीत कर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को विजयश्री दिलाई।

संगोष्ठियां

वर्ष 1992-93 के दौरान केन्द्र द्वारा तीन उल्लेखनीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियां आयोजित की गईं। केन्द्र ने सितम्बर, 1992 में "इक्ता कला पुस्तकालय कार्यशाला" आयोजित की, जनवरी, 1993 में "प्रकृति और मानव-एक समग्र दृष्टि" विषय पर संगोष्ठी आयोजित की, और फरवरी, 1993 में "संचार संपर्क (नेटवर्किंग) के लिये दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्र के सदस्य देशों के विशेषज्ञों की द्वितीय परामर्श बैठक" बुलाई।

व्याख्यान

व्याख्यान तथा विचार विमर्श के माध्यम से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त विशेषज्ञों एवं विद्वानों के साथ विचारों का आदान-प्रदान केन्द्र में वर्ष भर चलता रहा। विषयों की व्यापकता, वक्ताओं की विविधता और विचारों की नवीनता ने अनेक विषय-विधाओं के विशेषज्ञों के बीच एक उच्च स्तरीय बौद्धिक शास्त्रार्थ का वातावरण प्रस्तुत किया। इन व्याख्यानों तथा परिचर्चाओं के माध्यम से केन्द्र ने अंतर्विषयक संवाद के लिये एक समुचित मंच की व्यवस्था की है।

अकादमिक कार्यक्रम

वर्ष 1992-93 के दौरान प्रत्येक प्रभाग में विभिन्न कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिये आधारभूत ढांचा और मजबूत किया गया। परियोजनाओं की रूपरेखाओं की जांच करने और उनमें आवश्यक संशोधन करने का काम बराबर जारी रहा और दीर्घकालीन तथा प्रायोगिक परियोजनाओं के मेल से विशिष्ट मॉड्यूल तैयार किए गए।

पुस्तकालय में नई नई सामग्री प्राप्त होती रही। इसके मौजूदा भण्डार में प्रतिभास मुद्रित पुस्तकें, पाण्डुलिपियां, लघुचित्रों तथा चित्रकारियों की अनुलिपियां, छायाचित्र, स्लाइडें, टेप तथा वीडियो सामग्री जुड़ती गई। पहले की तरह, द्विपक्षीय करारों के अंतर्गत तथा सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रमों के अन्तर्गत भी, विभिन्न देशों से बहुमूल्य सामग्रियां प्राप्त हुईं। प्राप्त सामग्री को दर्ज करने, इनका वर्गीकरण करने तथा कम्प्यूटर संचालित कैटलॉग तैयार करने का काम अबाध गति से चलता रहा। पुस्तकालय में संगृहीत सभी प्रकार की सामग्रियों तथा कम्प्यूटर संचालित कैटलॉगों ने अनेक देशों के विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया। भारत तथा विदेशों से अनेक महानुभाव पुस्तकालय में पधारे।

केन्द्र के अनुसंधान कार्यक्रम जो अंतर्लोगत्वा शब्दकोशों, अनूदित तथा संपादित प्राथमिक ग्रंथों के प्रकाशन, विद्वतापूर्ण कलाकृतियों के पुनर्मुद्रण तथा कला इतिहास विदों के समालोचनात्मक लेखों के रूप में परिणत होते हैं, वर्ष भर चलते रहे। इंडियाना विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका के लेविस रौबेल ने "भारत की कला का प्रलेखन" शीर्षक अपने समीक्षात्मक निबंध में लिखा:

"कलातत्त्वकोश परियोजना ..... जब पूरी हो जाएगी तो शब्दकोश में, भारतीय कला वाङ्मय की धारा में आधारभूत पारिभाषिक शब्दों (तत्त्वों) पर लगभग 250 निबंध होंगे। यह परियोजना इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की सदस्य सचिव डॉ. कपिला वात्स्यायन के प्रधान सम्पादकत्व में चल रही है, ...

"ये निबंध एक समान रूपरेखा का पालन करते हैं: (1) संकल्पना का सामान्य सर्वेक्षण, (2) पारिभाषिक शब्द की व्युत्पत्ति, उससे संबद्ध व पर्यायवाची शब्द और उसके प्रमुख विपरीतार्थी, (3) संकल्पना का मूल अर्थ, (4) विभिन्न ग्रंथों तथा विचार धाराओं में उसका ऐतिहासिक विकास, (5) कलाओं में विभिन्न अभिव्यक्तियां, (6) रूप का वर्गीकरण और उनका उपविभाजन, (7) प्रक्रम के संबंध में शब्द के विशेष अर्थ; और (8) निष्कर्ष .....

''सर्वोपरि बात यह है कि कलातत्त्वकोश के प्रारंभिक खंड इस श्रृंखला की यह मूल उद्भावना प्रस्तुत करते हैं कि सभी भारतीय कलाएं भारतीय संस्कृति के एक जीवन्त वटवृक्ष की शाखाएं हैं : उनको चिंतन तथा विज्ञान के अन्य आयामों, शिल्पक तथा कारीगरी, आध्यात्मिक तथा लौकिक परम्पराओं से अलग रखकर नहीं समझा जा सकता''।

जनपद सम्पदा प्रभाग द्वारा भारत के विभिन्न जनजातीय अंचलों में विशिष्ट क्षेत्र अध्ययनों की परियोजनाएं चलाई जाती रहीं। उसने विभिन्न इस क्षेत्रों में जनजातीय लोगों पर अपने अनुसंधान कार्यक्रम कार्यान्वित किए और विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट समूहों के लोक साहित्य का संग्रह किया। विभिन्न सांस्कृतिक समुदायों तथा क्षेत्रों से संबंधित बहु-विषयक स्वरूप की इन परियोजनाओं में से कुछ के परिणाम अब संकलित किए जा रहे हैं।

कला दर्शन प्रभाग के कार्य को भी विशेष रूप से ''कला'' संगोष्ठी तथा प्रदर्शनी के संबंध में लेविस रैचेल द्वारा कहे गए शब्दों में संक्षेप में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है :

''सम्मेलनों तथा संगोष्ठियों का रूप कला दर्शन प्रभाग को सौंपा गया है, और कला विषयक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने के लिये ग्यारह देशों के लगभग 65 विद्वान् नई दिल्ली पधारे और एक सप्ताह तक बैठकों की श्रृंखला के एक कसे हुए कार्यक्रम में व्यस्त रहे .....

''संगोष्ठी का कोई भी दिन ऐसा नहीं गया जब केन्द्र के तत्त्वावधान में प्रकाशित किसी एक या अधिक पुस्तकों का सहयोगपूर्वक विमोचन न हुआ हो, जिनमें से प्रकाशन प्रमुख थे: ए.के. कुमारस्वामी की पुस्तक *डांस एण्ड इंटर्पिटी* और *वॉट इज सिविलाइजेशन?* के पुनर्मुद्रण और *डांस एण्ड इंटर्पल पॉज* (ले. जॉन मैकक्विम), *गवारी: ए पैस्टोरल कॉम्युनिटी आफ कच्छ* (ले. फ्रांसिस्को डि ओगली पत्नावोली) और *इस्लामिक आर्ट एण्ड स्पिरिच्युअलिटी* (ले. सैयद हुसैन नस्र) के नए प्रकाशन .....

''प्रदर्शनी का मूल लिपिकार डिजाइन एक बौद्धिक प्रयोग के अनुसार था जिससे परम्परागत भारतीय संस्कृति के छात्र परिचित होंगे: आदि काल (जब सृष्टि अव्यक्त रूप में होती है), सृष्टि, श्वास और स्पंदन की जैविक लय, विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के सृष्टि संबंधी मिथकों में समय संबंधी संकल्पनाओं का प्रथम उच्चारण, दिक् एवं काल की ब्रह्माण्ड वैज्ञानिक धारणाएं, गति के रूप में समय, अस्तित्व का सार्वभौम अनुभव, और लोकातीत एवं इन्द्रियातीत की खोज''।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कार्यकारिणी समिति ने वर्ष 1992-93 की वार्षिक योजना का अनुमोदन किया और फिर अनुमोदित कार्यक्रमों की पारंपरिक में विस्तृत लक्ष्य निर्धारित किए गए। यह संतोष का विषय है कि भिन्न-भिन्न प्रभागों को, कुल मिलाकर, इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफलता मिली। केन्द्र की कार्यकारिणी समिति तथा न्यास द्वारा अनुमोदित 10 वार्षिक योजना की रूपरेखा के अंतर्गत केन्द्र के कार्यकलापों का विस्तार किया गया। प्रत्येक प्रभाग की प्रमुख उपलब्धियों का ब्यौरा नीचे दिया गया है :-

कला निधि

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय

मुद्रित पुस्तकें

संदर्भ पुस्तकालय ने फरवरी, 1993 में अपने अस्तित्व का चौथा वर्ष पूरा किया। पिछले साल की तरह इस वर्ष भी पुस्तकालय ने इतिहास, पुरातत्व, धर्म, दर्शन, भाषा, साहित्य, कला, मानव विज्ञान, मानवजाति विज्ञान आदि सभी विषयों से संबंधित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, माइक्रोफिल्म व माइक्रोफिश, फोटोग्राफ, स्लाइडों, फिल्मों, श्रव्य-दृश्य सामग्रियों आदि के संग्रह का काम जारी रखा। जैसा कि पिछली रिपोर्ट में कहा गया था, पुस्तकालय में विश्वकोशों, ग्रंथसूचियों, प्रारंभिक ग्रंथों, दुर्लभ पुस्तकों और सुनीतिकुमार चटर्जी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, ठाकुर जयदेव सिंह, कृष्णा कृपलानी, नसली एलिन होरमानेक और लांस डेन प्रभृति विख्यात विद्वानों के व्यक्तिगत संग्रह जैसी सामग्री संगृहीत है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय की एक अनुपम विशेषता है उसका माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिश संग्रह। पुस्तकालय ने संस्कृत, अरबी और फारसी की पाण्डुलिपियों के प्रमुख संकलनों की माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिश प्रतियां प्राप्त करने के लिये विशेष प्रयत्न किया है। साथ ही उसने भारत के मुख्य पुस्तकालयों में उपलब्ध पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्में तैयार करने का व्यापक एवं दीर्घकालीन कार्यक्रम हाथ में लिया है। इसका ब्यौरा इसी अध्याय में दिया गया है।

पुस्तकालय शोध छात्रों को भारत भर में और विदेशी पुस्तकालयों में यत्रतत्र उपलब्ध भारतीय सांस्कृतिक धरोहर विषयक प्राथमिक सामग्री तक पहुंचने का अवसर प्रदान करता है।

यहां भारतीय तथा विदेशी संग्रहों में उपलब्ध कला वस्तुओं और सचित्र पाण्डुलिपियों के फोटोग्राफ और स्लाइडें भी विशाल मात्रा में संगृहीत हैं।

पुस्तकालय में संगृहीत सभी प्रकार की सामग्रियों तक एक कम्प्यूटरीकृत कैटलॉग (ग्रंथसूची) के माध्यम से पहुंचा जा सकता है।

नई प्राप्तियां

मुद्रित सामग्री

इस वर्ष के दौरान पुस्तकालय को जो एक बड़ी उपलब्धि हुई वह थी "चतुर्वेदी संग्रह" के रूप में 12,000 पुस्तकों तथा पत्रिकाओं के 2,500 खुले अंकों की प्राप्ति। वर्ष के दौरान पुस्तकालय में "चतुर्वेदी संग्रह" के अलावा, मुद्रित पुस्तकों के 3500 से भी अधिक खण्ड जोड़े गए। इनमें से 1,013 पुस्तकें शामिल हैं जो दुर्लभ हैं और उपहारस्वरूप प्राप्त हुई, पुस्तकों के उपहार मैत्र फ्रांसिस्को के मैं रिनृफ, प्रल्हादित्य पाल, प्रो. गोपीनाथ कविराज शताब्दी समारोह संग्रह समिति, संयुक्त राज्य कांग्रेस लाइब्रेरी, चीन की कला अकादमी, विजयनाम राजदूतावास, नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय और प्रो. एच. बी. भास्कर के संग्रह से प्राप्त हुए।

पुस्तकालय इस वर्ष भी उन अकादमिक पत्र-पत्रिकाओं का ग्राहक बना रहा जिनका उल्लेख पिछले वर्ष की रिपोर्ट में किया गया था। ऐसी पत्र-पत्रिकाओं की संख्या अब बढ़कर 402 हो गई है।

वर्ष के दौरान प्रकाशनों तथा सूचियों की निम्नलिखित महत्वपूर्ण श्रृंखलाएं जोड़ी गईं:

सिरीज ओरिएंटल गेमा के 9 खण्ड।
अरबी तथा फारसी की पाण्डुलिपियों की सूचियां खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना, खण्ड 1,2,3,7,29,30,31,32 व 34।
गोपाल नारायण बोहरा कपाडद्वारा जयपुर में उपलब्ध ऐतिहासिक प्रलेखों की सूची (2 खण्ड)।
बंगाल एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता में उपलब्ध संस्कृत पाण्डुलिपियों के वर्णनात्मक कैटलॉग के 40 खण्ड।
जकार्ता से प्राप्त 1,327 इण्डोनेशियाई प्रकाशन।
सिक्कों की सूची, भारत के मुगल बादशाह के सिक्के।

माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश

केन्द्र के आन्तरिक संग्रहों और अन्य संस्थाओं से प्राप्त सामग्री की भी माइक्रोफिल्में तैयार करके रखी जाती हैं। वर्ष के दौरान, बिब्लियोथिक नेशनेल, पेरिस, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, कैम्ब्रिज और एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता से माइक्रोफिल्मों की 98 कुण्डलियां (रोल्स) प्राप्त हुईं, जो कुल मिलाकर 23,407 पन्नों की थीं। केन्द्र का आन्तरिक संग्रह 36 कुण्डलियों में लगभग 23,000 पृष्ठों का था।

म्यूस बिब्लियोथिक प्रौशिशर कुलतुरबिस (एस.बी.पी.के.), बर्लिन और "इनियन" (रूस) से 4,670 माइक्रोफिशें प्राप्त हुईं।

दक्षिण एशियाई कला विषयक अमेरिकी समिति, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटिश म्यूजियम तथा ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन से 7,397 स्लाइडें प्राप्त हुईं।

"दुरहुआंग" पर 0.35 मि.मी. का वृत्तचित्र वर्ष के दौरान खरीदा गया।

माइक्रोफिल्म परियोजनाएं

देश के सात केन्द्रों में उपलब्ध पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्में तैयार करने का काम इस वर्ष भी चलता रहा। वर्ष 1992-93 में माइक्रोफिल्मों की 1,443 कुण्डलियां (लगभग 9,37,950 पन्ने) प्राप्त हुईं।

इसके अलावा, माइक्रोफिल्में तैयार करने का काम मणिपुर राज्य कला अकादमी, अलोम बाबू अनुसंधान केन्द्र और पद्मश्री एन. के. सिंह संग्रह, (सभी इम्फाल में) और श्री रणवीर संस्कृत अनुसंधान संस्थान, जम्मू में प्रारंभ किया गया। इम्फाल के तीनों केन्द्रों का काम पूरी तरह समाप्त हो गया और 99 कुण्डलियां तैयार हो गईं। जम्मू में अभी काम चल रहा है। खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना में भी माइक्रोफिल्में बनाने का काम वर्ष के दौरान शुरू किया गया।

इसके अलावा, जैसाकि गत वर्ष की रिपोर्ट में बताया गया था, केन्द्र ने दाता पुस्तकालयों के लिए माइक्रोफिल्मों की प्रतिलिपियां तैयार करने का काम चालू रखा। वैदिक संशोधन मंडल, पूणे की 90 कुण्डलियों की प्रतिलिपियां इस शर्त पर तैयार की गईं कि इसकी प्रतियां केन्द्रों को दी जाएंगी। इसके अलावा, एस. बी. पी. के., बर्लिन की लगभग 8,509 माइक्रोफिशों की प्रतिलिपियां अध्येताओं और शोधकर्ताओं के उपयोग के लिए तैयार की गईं।

माइक्रोफिल्म कुण्डलियों की हर दृष्टि से भलीभांति जांच की जाती है और कुण्डलियों में समाविष्ट पाण्डुलिपियों के पृथक सूच्यवस्थित रूप से रखे जाते हैं। दुर्लभ वस्तुओं की माइक्रोफिल्में बनाने का काम केन्द्र के माइक्रोफिल्म निर्माता दल द्वारा किया जाता है। पुस्तकालय में एक अनुसूचित एककक (रिप्रोग्राफी यूनिट) है जो प्रशिक्षित कार्मिकों तथा अनशक्ति से सुसज्जित है।

माइक्रोफिल्म परियोजनाओं की मार्च, 1993 की स्थिति इस प्रकार है :

क्रम सं.	परियोजनाएं	कुल पांडुलिपियां उपलब्ध	प्रारंभ करने की तारीख	तैयार की गई कुल कुंडलियां	कुल पांडुलिपियां एवं उक्त तारीख तक बनाए गए
1.	सरस्वती भवन लाइब्रेरी, वाराणसी	1,70,000	7.9.89	606	पांडु. 19,589 प. - 3,93,900
2.	गवर्नमेंट ओरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, मद्रास	45,000	10.9.89	172	पांडु 5,079 प. 1,11,800
3.	भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे	18,000	19.9.89	177	पांडु 9,000 प. - 1,15,050
4.	प्राच्य अनुसंधान संस्थान एवं पांडुलिपि पुस्तकालय, त्रिवेन्द्रम	54,000	21.3.90	033	पांडु 1,641 प - 21,450
5.	वैदिक संशोधन मंडल, पुणे	14,099	22.6.90	174	पांडु 6,379 प. - 1,13,100
6.	श्रीराम वर्मा गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, त्रिपुनीतुरा	3,300	16.8.90	192	पांडु - 2,993 प. 1,24,800
7.	तंजावुर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजावुर	54,000	28.8.90	089	पांडु - 1,516 प. - 57,850
8	मणिपुर राज्य कला अकादमी, इम्फाल	556 (समाप्त)	24.3.92	055	पांडु 556 प. - 35,750
9.	अतोम बापू अनुसंधान केन्द्र, इम्फाल	033 (समाप्त)	24.11.92	006	पांडु 033 प. - 3,900
10.	पद्मश्री एन. के. सिंह संग्रह, इम्फाल	234 (समाप्त)	1.12.92	034	पांडु 234 प. 22,100
11.	श्री रणवीर संस्कृत अनुसंधान संस्थान, जम्मू	34,000	2.11.92	104	पांडु - 908 प. 67,600
12.	खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना	-	13.3.93	-	-

श्रव्य-दृश्य एवं लेखाचित्रात्मक सामग्री

पुस्तकालय कलाकृतियों, चित्रकारियों, रेखाचित्रों और फोटोग्राफों की स्लाइडों, संगीत के वीडियो कैसेट और ग्रेड (एल.पी.) रेकार्डों आदि के रूप में भी सामग्री प्राप्त करता है।

अभिलेखागारीय स्लाइडों की प्रतिलिपियां तैयार करने का काम प्रारंभ किया जा चुका है और आलोच्य वर्ष के दौरान 13,041 स्लाइडों की प्रतिलिपियां तैयार की गई। ये प्रतिलिपियां संदर्भ प्रयोजनों के लिये विद्वानों अध्येताओं को उपलब्ध कराई जाएंगी। ये प्रतिलिपियां मुख्यतः निम्नलिखित संग्रहों में से हैं जो संदर्भ पुस्तकालय को पहले प्राप्त हो चुके हैं:-

ऐशमोलियन म्यूजियम, ऑक्सफोर्ड।
रोतलिन्ग म्यूजियम, बर्लिन।
ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन।
चेस्टर बीटी लाइब्रेरी, डब्लिन
ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

भारत सरकार के विभिन्न द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों में भाग लेने के माध्यम से भी पुस्तकालय को सामग्री प्राप्त होती है। वर्ष 1992-93 के दौरान, सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के माध्यम से निम्नलिखित महत्वपूर्ण गतिविधियां सम्पन्न हुई:-

बेल्जियम : केन्द्र के अनुरोध पर, मॉन्स हायनॉट विश्वविद्यालय अपनी पांडुलिपियों के संग्रह की माइक्रोफिल्म भेजने के लिये तैयार हो गया। इस माइक्रोफिल्म को प्राप्त करने के लिये व्यवस्था की जा चुकी है।

बंगलादेश : बांग्ला रिसर्च म्यूजियम के संग्रहों के कैटलॉग का पहला खण्ड प्राप्त हो गया था। म्यूजियम से बाकी खण्ड भेजने का अनुरोध किया गया है।

चीन : दुआन बेन्जी और दुनहुआंग कला की पांडुलिपियों के सम्पादन का कार्य समाप्त हो चुका है।

हंगरी : फ्रांसिस हॉप म्यूजियम से भारत विषयक छह प्रकाशन प्राप्त हुए।

पुर्तगाल: प्राणीविज्ञान और पुरातत्व केन्द्रों के निदेशक से उनकी पत्रिका "लेवा" के छह खण्ड प्राप्त हुए।

वियतनाम : सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत, जिसमें कि दोनों देशों के बीच विद्वानों का आदान-प्रदान होना है, डॉ. बच्चनकुमार, कनिष्ठ अनुसंधान अधिकारी को वियतनाम की दोङ्ग सोन संस्कृति का अध्ययन करने के लिये नामांकित किया गया है।

सामग्री, अनुलिपियों आदि के आदान-प्रदान के लिये अन्य देशों अर्थात् बुलगेरिया, क्यूबा, फिनलैंड, फ्रांस, इंगलैंड, इटली और तुर्की के साथ पत्र-व्यवहार चल रहा है।

तकनीकी एवं कम्प्यूटर कार्य

वर्ष 1992-93 के दौरान 4,398 खण्डों में प्राप्ति संख्या दर्ज करने, उनको वर्गीकृत तथा सूचीबद्ध करने और डेटा इनपुट शीट भरने का काम पूरा किया गया। इस प्रकार अब तक कुल मिलाकर 44,600 खण्डों के संबंध में यह काम पूरा हो चुका है। आलोच्य अवधि में कुल मिलाकर 3,169 रेकार्ड कम्प्यूटर प्रणाली में दाखिल किये गए।

जिल्दबंदी

पुस्तकालय ने इस वर्ष 1,500 खण्डों को जिल्दबंदी करवाई। अब जिल्दबंद खण्डों की संख्या कुल मिलाकर 20,675 हो गई है।

ग्रंथ सूची

निम्नलिखित परियोजनाओं के संबंध में ग्रंथ सूचियां संकलित करने का काम चालू रहा:-

ब्रजनाथद्वारा ग्रंथ सूची
संथाल साहित्य की खोज
मुक्तकुचा ग्रंथ सूची
बृहदीश्वर ग्रंथ सूची
पुतलिका साहित्य की खोज

दो ग्रंथ सूचियां पूरी हो गई और उन्हें विभिन्न संस्थाओं के पास अवलोकनार्थ भेजा गया। उनमें से कुछ के वहां से प्राप्त सुझावों तथा टीका टिप्पणियों को इन ग्रंथ सूचियों में शामिल किया जा रहा है और अब संशोधित संस्करण तैयार करके उनका विमोचन किया जाएगा। ये ग्रंथ सूचियां हैं:

1. मुलेख-साहित्य की खोज
2. वासुदेवशरण अग्रवाल

कार्यशालाएं, सम्मेलन आदि

कार्यकुशलता के स्तर को ऊंचा करने और विचारों के आदान-प्रदान के लिये राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। इस संबंध में आलोच्य वर्ष के दौरान दो महत्वपूर्ण कार्यक्रम हुए। उनमें एक था 3 सितम्बर, 1992 को कला लाइब्रेरी अनुभाग विषय पर एक कार्यशाला और दूसरा था यूनेस्को के दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्र के सदस्य देशों के विशेषज्ञों की दूसरी परामर्श बैठक, जो सांस्कृतिक धरोहर की विशिष्ट सूचना प्रणाली के संपर्क सूत्र स्थापित करने के लिये 24 फरवरी से 28 फरवरी, 1993 तक हुई। इस परामर्श बैठक में दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व क्षेत्र के देश भारत के अलावा, आस्ट्रेलिया, बंगलादेश, भूटान, चीन, इंडोनेशिया, ईरान, मलेशिया, नेपाल, फिलिपीन, श्रीलंका, थाईलैंड और वियतनाम के कुल 24 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक के प्रथम परामर्श बैठक की सिफारिशों की समीक्षा की गई और विस्तृत विचार-विमर्श के बाद इन देशों के बीच परस्पर अधिक सक्रिय संपर्क को सुकर बनाने के लिये महत्वपूर्ण सिफारिशें की गई। बैठक का उद्घाटन भारत के उप-राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन द्वारा किया गया और समापन अभिभाषण राजीव गांधी समकालीन अध्ययन संस्थान के अध्यक्ष डॉ. आबिद हुसैन द्वारा दिया गया। प्रो. अशीरुद्दीन अहमद और प्रो. यशपाल प्रभृति विख्यात विद्वानों ने इस बैठक में भाग लिया।

सुविधाएं तथा सेवाएं

संदर्भ पुस्तकालय का उपयोग करने वाले व्यक्तियों को निम्नलिखित सेवाएं प्रदान करने के लिये आधारभूत सुविधाएं विकसित की गई हैं:-

1. पुस्तकों, पत्रिकाओं आदि का कुछ समय के लिये अन्तरपुस्तकालयिक आदान प्रदान।
2. जीरोक्स प्रतियां तैयार करना।
3. माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिश पढ़ना तथा उनकी फोटो प्रति तैयार करना।
4. कम्प्यूटरबद्ध कैटलॉग।

आगंतुक महानुभाव

आलोच्य वर्ष के दौरान संदर्भ पुस्तकालय में अनेक विशिष्ट व्यक्ति एवं विख्यात विद्वान पधारे। आने वाले महानुभावों को यहां स्थापित कम्प्यूटर प्रणाली तथा विकासकार्य से अवगत कराया गया। उनमें कुछ विशेष रूप से उल्लेखनीय महानुभाव थे: संगीत नाटक अकादमी के प्रधान श्री गिरीश कर्नाड; यूनेस्को, पेरिस से श्री क्लौडे फैब्रीज्यो; एशिया तथा प्रशान्त क्षेत्र में संस्कृति के लिये यूनेस्को के क्षेत्रीय सलाहकार श्री इश्तियाक खान; विदेश मंत्रालय में सचिव श्री एल. एल. मेहरोत्रा; कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के दक्षिण एशिया अध्ययन केन्द्र के अध्यक्ष प्रो. आर. पी. गोल्डमैन; यूनेस्को में भारत की स्थायी प्रतिनिधि/राजदूत कु. नीना सिब्बल; पश्चिम बंगाल सरकार के संसदीय कार्य विभाग के मंत्री प्रो. प्रबोधचन्द्र सिन्हा; जिनेवा के डिजिटल यूरोप के श्री अजय मलिक; जाने-माने पुस्तकालयाध्यक्ष जैसे संयुक्त राज्य कांग्रेस लाइब्रेरी, संयुक्त राज्य अमेरिका के डॉ. जेम्स एच. बिलिंगटन; इंडोनेशिया के राष्ट्रीय पुस्तकालय की कु. माथिल्दी हार्डजोप्रकामो; शिकागो विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका के डॉ. जेम्स नाए; और ब्रिटिश लाइब्रेरी, यू. के. के श्री प्राहम शॉ; और विख्यात शिक्षाविद जैसे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्राच्य अध्ययन संकाय के श्री डेविड लाइमर; कॉर्नेल विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका के एशियाई अध्ययन विभाग के डॉ. मिनरोवस्की; नालंदा खुला विश्वविद्यालय, पटना के उप-कुलपति डॉ. कुमार विमल; और सामाजिक विज्ञान विषयक वैज्ञानिक सूचना संस्थान (इनियन), मास्को के डॉ. विक्टर प्लुइश्चेव।

अनुदान

कला निधि प्रभाग को 'इन्टैक' (यू. के.) से अनुदान मिलते रहे। यूनेस्को की उपर्युक्त द्वितीय परामर्श बैठक के लिये यूनेस्को से आर्थिक सहायता मिली।

दौरे

(सम्मेलन/संगोष्ठी/कार्यशाला/भाषण के लिये)

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने कार्मिकों को अनुलिपि कला, सूचना विज्ञान तथा तत्संबंधी अन्य विषयों की नवीनतम प्रवृत्तियों से अवगत कराने के लिये सदा प्रयत्नशील रहता है। इसी उद्देश्य से कार्मिकों को विभिन्न सम्मेलनों, संगोष्ठियों/कार्यशालाओं आदि में भाग लेने के लिये भेजा जाता है। आलोच्य वर्ष 1992-93 के दौरान हुई इन गतिविधियों का ब्यौरा अनुबंध 10 पर दिया गया है।

कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक

कला निधि (ख) प्रभाग की जिम्मेदारी है: अन्य सभी प्रभागों की कम्प्यूटरीकरण संबंधी आवश्यकताओं का पता लगाना; सूचना प्रणाली का डिजाइन व विकास करना, कम्प्यूटर प्रणाली का रखरखाव करना व उसे चालू रखना और उपयोगकर्ताओं को प्रशिक्षण देना। इस प्रभाग को राष्ट्रीय सूचना केन्द्र (एन. आई. सी.) से भरपूर सहयोग मिलता रहा है। इसके कार्यक्रम आगे इस प्रकार विभाजित हैं:-

1. हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर को प्राप्त करना और उसे चालू करना,
2. डेटाबेस का निर्माण,
3. कला और मानविकी के राष्ट्रीय डेटा बैंक के लिये नोडल एजेंसी,
4. सांस्कृतिक स्रोतों के परस्पर सक्रिय बहु-माध्यमिक प्रलेखन के लिये राष्ट्रीय सुविधा की स्थापना करना,
5. अनुसंधान तथा विकास परियोजनाएं,
6. जनशक्ति प्रशिक्षण,
7. कम्प्यूटर प्रदर्शन।

1. हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर को प्राप्त करना और उसे चालू करना

पूर्व-एशिया कक्ष के लिये एक एपल मैकिंटोश क्लासिक प्रणाली प्राप्त की गई। दुनहुआंग संग्रहों के संपादित कार्यवृत्त को अंतरित करने के लिये इस पर काम प्रारंभ किया जा चुका है।

एक प्रिंटर सहित एक पी.सी. ए.टी. 286 प्राप्त किया गया और पूर्वशिया कक्ष में परामर्शदाता के प्रयोग के लिये लगा दिया गया।

एक एपल मैकिंटोश क्लासिक प्रणाली प्राप्त की गई और कला कोश प्रभाग में डेस्क टॉप पब्लिशिंग के लिये स्थापित की गई। इस पर एक बड़े ग्रंथ "बृहद्देशी" विषयक कार्य प्रारंभ हो चुका है। इस प्रणाली के साथ एक लेजर प्रिंटर भी चालू किया गया है।

2. डेटाबेस का विकास

डेटाबेसों में और अधिक सूचना संगृहीत करने का कार्य वर्ष 1992-93 में भी चलता रहा। इसका ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है:-

(क) सूचियों की संघ सूची (कैटलॉग)

इस डेटाबेस से प्रकाशित/अप्रकाशित हजारों सूचियों (कैटलॉग) के बारे में जानकारी मिलती है। पचास से अधिक सूचियों के बारे में जानकारी कम्प्यूटर में भरी गई। विषय, भाषा, सूचीकर्ता का नाम आदि के अनुसार सूचना पुनः प्राप्त करने के लिये प्राप्ति बिन्दुओं की और व्यवस्था की गई। कला निधि प्रभाग द्वारा सूचियों को आगे और जाँच करने के लिये अद्यतन बनाई गई मुद्रित सूचना का उपयोग किया जा रहा है।

(ख) पाण्डुलिपियां (मैनुस)

अधिक वर्णनात्मक सूचना जोड़ी गई। अब तक लगभग 9,000 पांडुलिपियों के बारे में सूचना का कम्प्यूटरीकरण किया जा चुका है। कलामूलशास्त्र श्रृंखला में शामिल किये गए अन्य ग्रंथों के बारे में वर्णनात्मक सूचना कम्प्यूटर में बराबर भरी जा रही है। यह सूचना कलामूलशास्त्र की आधारभूत ग्रंथ श्रृंखला की योजना के अन्तर्गत तैयार किए जाने वाले समीक्षात्मक संस्करणों के लिये पांडुलिपियों का परस्पर भेद दर्शाने हेतु आधार का काम देती है।

(ग) कला कोश पारिभाषिक शब्द (केकेटर्म)

कलातत्त्वकोश की परियोजना के लिये डेटाबेस विकसित कर लिया गया है। वर्ष के दौरान 12,000 से भी अधिक पारिभाषिक शब्दों के बारे में वर्णनात्मक सूचना रोमन तथा देवनागरी लिपियों में कम्प्यूटरीकृत की गई है। इससे अध्येताओं को प्रत्येक पारिभाषिक शब्द के लिये पाठ/ग्रंथ संबंधी व्यापक संदर्भ तैयार करने और भिन्न भिन्न पाठों/ग्रंथों में उद्धरणों तथा पारिभाषिक शब्दों के ग्रंथसूची संबंधी संदर्भों को सत्यापित करने में सहायता मिलती है।

(घ) पुस्तकालय सूचना प्रबन्ध प्रणाली (लमिस)

निम्नलिखित सॉफ्टवेयर मॉड्यूल विकसित किए गए :

1. इस (लमिस) प्रणाली में बड़ी संख्या में विषय सम्मिलित करने के लिये आवश्यक परिवर्तन किए गए और सॉफ्टवेयर को भी तदनुसार संशोधित किया गया।

2. पुस्तकालय में पुस्तकें प्राप्त करने से संबंधित सूचना को संसाधित करने के डेटाबेसों को डिजाइन करके तैयार किया गया। अन्य डेटाबेसों के साथ एकरूपता बनाए रखने के उद्देश्य से डेटा प्रविष्टि/डेटा कूटकरण के लिये यूजर इंटरफेस का भी विकास किया गया।

वर्ष के दौरान 2000 से भी अधिक पुस्तकों के बारे में कैटलॉग संबंधी सूचना को कम्प्यूटरबद्ध किया गया।

(ङ) ग्रंथ सूची (बिब्ल)

मुलेखकला, पुतलिकला तथा संथाल जैसी पहले से चल रही विभिन्न परियोजनाओं से संबंधित 2000 से भी अधिक संदर्भों (प्रबन्ध, पुस्तकें, पत्रिकाएं, लेख आदि) के बारे में ग्रंथसूची संबंधी सूचना को कम्प्यूटर में भर गया।

(च) कोश निर्माण (थिस)

यह डेटाबेस जनपद सम्पदा प्रभाग के कार्यक्रमों के लिये विकसित किया गया है। कुछ जनजातीय भाषाओं तथा बोलियों में प्रचलित महत्वपूर्ण शब्दों को इस उद्देश्य से कम्प्यूटर में भरा जाता है ताकि पंच महाभूतों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश से संबंधित सवर्गीय शब्दों का पता लगाया जा सके। अधिक सूचना शामिल करने और ग्रंथ सूची डेटाबेस के साथ संबद्ध करने के उद्देश्य से सॉफ्टवेयर में परिवर्तन किया गया।

(छ) माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश (एम. एफ. एम.)

इस डेटाबेस में पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्मों/माइक्रोफिशें के बारे में संदर्भ जानकारी रखी जाती है। 1500 से भी अधिक प्रविष्टियों को कम्प्यूटर में भरा गया है। विभिन्न पहुंच बिन्दुओं पर आधारित सूचना को पुन: प्राप्त करने तथा मुद्रित करने के लिये 'यूजर इंटरफेस' प्रणाली विकसित की गई है।

(ज) श्रव्य-दृश्य सूचना प्रबन्ध प्रणाली (एविम्स)

कला निधि (ग) प्रभाग में उपलब्ध श्रव्य-दृश्य सामग्री के बारे में कैटलॉग संबंधी सूचना इसमें शामिल है। 2000 से भी अधिक वस्तुओं के बारे में ऐसी सूचना कम्प्यूटरबद्ध की गई।

(झ) प्रशासनिक तथा वित्तीय संवीक्षा

1. पुरस्कार/पारितोषिक, भाषण/व्याख्यान/निबंध और निमंत्रणों से संबंधित सूचना के प्रलेखन के लिये तीन डेटाबेस विकसित किए गए। नमूने के डेटा से इनका परीक्षण किया गया। डेटा प्रविष्टि अद्यतन बनाने का कार्य प्रगति पर है।
2. वेतन पर्चियां तथा अन्य वित्तीय रिपोर्टें तैयार करने और दैनिक नकदी/बैंक संबंधी लेन-देन का हिसाब रखने का काम कम्प्यूटरबद्ध कर दिया गया है।

3. कला और मानविकी के राष्ट्रीय डेटा बैंक के लिये नोडल एजेंसी

भारत सरकार ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को कला, मानविकी तथा सांस्कृतिक धरोहर के राष्ट्रीय डेटा बैंक के लिये एक नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया है। इस क्षेत्र में एक राष्ट्रीय तंत्र (नेटवर्क) का विकास करने के उद्देश्य से, कला, मानविकी और राष्ट्रीय धरोहर के संबंध में डेटा के संग्रह, पुन: प्राप्ति तथा वितरण के प्रयोजन के लिये केन्द्रीय सरकार की सभी एजेंसियों के लिये हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर संबंधी अपेक्षाओं सहित तकनीकी मानक निर्धारित किए जा सकते हैं। इसी उद्देश्य से केन्द्र को यह अधिकार दिया गया है कि वह सभी अपेक्षित डेटा सूचना निर्धारित फार्मों

पर अनिवार्य रूप से केन्द्र के पास भेजने के लिये केन्द्रीय सरकार के सभी विभागों को समुचित निर्देश दे और राज्य सरकारों को भी इस संबंध में उनकी एजेंसियों का सहयोग दिलाने के लिये कहे।

यूनेस्को ने दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के लिये कला, सांस्कृतिक धरोहर तथा जीवन शैलियों के संबंध में क्षेत्रीय डेटाबेस का विकास करने के लिये इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को एक नोडल एजेंसी के रूप में मान्यता दी है। इस कार्य के लिए केन्द्र डेटा के मानकीकरण, आदान-प्रदान तथा वितरण के लिये आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करेगा। दूसरी यूनेस्को परामर्श बैठक फरवरी, 1993 में हुई। बैठक में राष्ट्रीय सूचना केन्द्र की ओर से "सांस्कृतिक धरोहर सूचना तंत्र" विषय पर एक तकनीकी शोध पत्र प्रस्तुत किया गया जिस में सांस्कृतिक सूचना के संबंध में एक क्षेत्रीय तंत्र (नेटवर्क) स्थापित करने के लिये एक 12 सूत्रीय कार्य योजना दी गई थी। राष्ट्रीय सूचना केन्द्र के महानिदेशक से कहा गया है कि वे देश में उपलब्ध सभी सूचना को एकत्रित करने के लिये सलाह दें।

4. सांस्कृतिक स्रोतों के परस्पर-सक्रिय बहु-माध्यमिक प्रलेखन के लिये एक राष्ट्रीय सुविधा की स्थापना

"सांस्कृतिक स्रोतों के परस्पर-सक्रिय बहु-माध्यमिक प्रलेखन के लिये एक राष्ट्रीय सुविधा की स्थापना" के विषय पर एक व्यापक प्रलेख तैयार किया गया। स्थानी तकनीकी समूह की सिफारिशों के अनुसार तैयार किया गया एक परियोजना प्रस्ताव, जिसमें परियोजना प्रलेख, परियोजना विवरण की रूपरेखा, अध्ययन दौरा रिपोर्ट और प्रणाली विश्लेषण रिपोर्ट शामिल थीं, आवश्यक धनराशि को स्वीकृत करने के लिये अक्टूबर, 1991 में यू. एन. डी. पी. के पास भेजा गया। 'गीतगोविन्द', 'आकार', 'बृहदीश्वर मंदिर' और 'कला' विषयों पर चार बहु-माध्यमिक परियोजनाएं हाथ में लेने के लिये व्यापक रूपरेखाएं तैयार की गईं।

यू. एन. डी. पी. की अपेक्षाओं के अनुसार परियोजना प्रस्ताव में संशोधन करके उसे यू. एन. डी. पी. को प्रस्तुत कर दिया गया है और अब मामला यू. एन. डी. पी. के विचाराधीन है।

5. अनुसंधान एवं विकास परियोजना

(क) भारतीय भाषा संसाधन

कम्प्यूटर संचार की प्राथमिक पहलों के रूप में स्वाभाविक भाषा के सुजन इंटरफेस के विकास के अंतिम उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, भविष्य के लिये सुनियोजित योजना तैयार की गई है जिसमें भारतीय भाषाओं के संसाधन (प्रोसेसिंग) के लिये उपयुक्त उपकरण विकसित होंगे।

विदेश मंत्रालय में प्रयोग करने के लिये योजना, संसाधन, हिन्दुस्तानी और मलयालम लिपियों को ध्वनि सूचक चिह्नों के साथ और विकसित करने के लिये इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और एन. सी. एस. टी. के बीच एक समझौते के तहत एक हस्ताक्षर किया गया।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा दी गई, देवनागरी लिपियों की तकनीकी मांगों के अनुसार रोमन लिपि में और नन्दिनी, धरमा तथा हिन्दुस्तानी लिपियों में स्वाभाविक चिह्नों को शामिल करने के लिये 'चित्रा' जिसका परियोजना प्रायोजित की गई थी एन. सी. एस. टी. द्वारा विकसित की जाएगी।

एन. सी. एस. टी. ने [illegible] का नया संस्करण [illegible] विकसित किया, जो [illegible], 1993 में स्थापित करके चालू कर

दिया गया। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वरिष्ठ अधिकारियों एवं संबंधित कार्मिकों के समक्ष इस सम्पूर्ण प्रणाली का प्रदर्शन किया गया।

(ख) 'गोलगोविन्द' विषयक बहु-माध्यमिक परियोजना

बहु माध्यमिक प्रस्तुतियों में संबंधित विकास कार्य के लिये पैकिंग्ज प्रणाली प्राप्त की गई। 'गोलगोविन्द' पर एक बहु माध्यमिक प्रस्तुति का पूर्वरूप विकसित किया गया। इस प्रणाली में शब्दिक पाठों, चित्रात्मक छवियों तथा संगीत धुनों को सम्यक् रूप से समन्वित करने का प्रयास किया गया है। संबंधित सूचना को पुनः प्राप्त करने के लिये एक 'सैंपल यूज़र इंटरफेस' का विकास किया गया। इसे विकसित करने में तकनीकी के साथ पाठ को संपादित, संबद्ध करने की विभिन्न सुविधाओं, चित्रों के रूप, रंग, चमक को कम या अधिक करने या इन्हें पास या दूर लाने से जाने की सुविधाओं तथा विशेष प्रभावों के साथ ध्वनि संयोजन की सुविधाओं का उपयोग किया गया।

'गोलगोविन्द' पर एक व्यापक 'बहु माध्यमिक प्रस्तुति' तैयार करने का प्रस्ताव है। इस दिशा में पहले कदम के रूप में, सम्बन्धित सामग्री सूचना, 'गोलगोविन्द' की पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्में माइक्रोफिल्म इकट्ठी करने का काम हाथ में लिया जा चुका है।

उपलब्ध विशेषज्ञ प्रस्तुतियों के धीरज, ज्ञान को विकसित करने और ज्ञान के आधार (थीम) से निष्कर्ष निकालने के लिये, अर्थपरक सीढ़ियों का प्रयोग किया जा रहा है। बहु माध्यमिक प्रस्तुतियों के लिये व्यवस्थित फलात्मक 'आउटपुट' को दृश्य तथा मौखिक सूचना के साथ जोड़ने के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कर्मचारियों और यहां आने वाले महानुभावों के लिये (गोलगोविन्द पर) बहु-माध्यमिक प्रस्तुतीकरण प्रणाली को सुविधा उपलब्ध कराने के लिये और विभिन्न बहु माध्यमिक विकास उपकरणों (हाइपर कार्ड, मार्केट प्लेस, मैक्रोमाइंड डाइरेक्टर और एडोब फोटोशॉप) के प्रयोग को सीखने के लिये 'मेनू' चालित सूत्र (इंटरफेस) विकसित किए गए। छात्राओं के लिये (विवरणात्मक तथा प्रतिमात्मक) सूचना रखने के लिये बहु-माध्यमिक सुविधा विकसित की गई।

विशेषज्ञ अंशदाताओं के संबंध में सूचना : संदर्भ उनकी छवि और उनके द्वारा की गई अंतर्दृष्टि टिप्पणियां। सबके लिये भी बहु माध्यमिक सुविधा का विकास किया गया।

6. जनशक्ति प्रशिक्षण

प्रस्तावित अवधि में 10 से अधिक व्यक्तियों को अपने काम के लिये कम्प्यूटरों का इस्तेमाल करने का प्रशिक्षण दिया गया। कम्प्यूटर क्षेत्र में काम करने वाले सभी व्यक्तियों के एकत्रीकृत ज्ञान को अद्यतन करने के लिये बराबर ध्यान दिया गया ताकि वे विकसित की गई विभिन्न प्रणालियों से अवगत रह सकें। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कार्मिकों को नियमित रूप से प्रशिक्षण दिया गया और कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में विकसित नवीनतम प्रौद्योगिकियों और उनके प्रयुक्तियों से उन्हें अवगत कराया गया।

7. कम्प्यूटर प्रदर्शन

मास	कार्यक्रम	वर्णन
मई, 92	शिक्षा तथा संस्कृति विषयक संयुक्त राज्य सभा अध्यक्ष के प्रतिनिधियों के लिये प्रदर्शन	शिक्षा तथा संस्कृति विषयक संयुक्त राज्य सभा अध्यक्ष के प्रतिनिधियों के लिए "तीसरीविन्ड" पर बहु-माध्यमिक प्रदर्शन किया गया।
मई, 92	श्री विशिष्ट महानुभावों के लिए प्रदर्शन	श्री [illegible] अकबर सांसद और श्री [illegible] के लिए "तीसरीविन्ड" पर बहु माध्यमिक प्रदर्शन किया गया।
जून, 93	यूनेस्को प्रतिनिधियों के लिए प्रदर्शन	यूनेस्को के श्री [illegible] के श्री [illegible], यूनेस्को के श्री [illegible] खान और केन्द्र के अधिकारियों के लिये 'तीसरीविन्ड' पर बहु माध्यमिक प्रदर्शन किया गया।
नवम्बर, 93	यू. एन. डी. पी. यूनेस्को दल के लिए प्रदर्शन	मेसुल विस्टा मेस के सीडल कम्प्यूटर कक्ष में यू. एन. डी. पी. यूनेस्को दल के लिए कम्प्यूटर प्रदर्शन की व्यवस्था की गई।
जनवरी, 93	विदेशी विशेषज्ञों के लिए प्रदर्शन	एक [illegible] कम्प्यूटर विशेषज्ञ (संसद में [illegible] के विशेषज्ञ डॉ. [illegible] मलिक) के लिए मेसुल विस्टा मेस में कम्प्यूटर प्रदर्शन की व्यवस्था की गई।
जनवरी, 93	सिन्धु विस्तार	एन. सी. एस. सी. ने जनवरी 92 में हस्तक्षेपित समझौते के अनुसार 'सिन्धु' की 2.0 संस्करण विकसित किया। उन्होंने इस प्रणाली को लगाया और चालू किया। विज्ञान भवन एनेक्सी में केन्द्र के वरिष्ठ अधिकारियों तथा सम्बंधित के मंत्रालयों के समक्ष सम्पूर्ण प्रणाली का प्रदर्शन किया गया।
फरवरी, 93	दूसरी पंचवर्षीय योजना में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों के लिए	सांस्कृतिक मंत्रालय विषयक विशिष्ट सूचना प्रणाली के साथ संपर्क सूत्र स्थापित करने के लिए दक्षिण तथा दक्षिण एवं पूर्वांचल क्षेत्र के चुनिन्दा सदस्य देशों के प्रतिनिधियों को दूसरी पंचवर्षीय योजना में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों के लिए प्रदर्शन की व्यवस्था उनके समक्ष की गई।

कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार

सांस्कृतिक अभिलेखागार कला विधि प्रभाग का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अनुभाग है। यह अनुभाग इन विद्वानों तथा कलाकारों के व्यक्तिगत संग्रहों को प्राप्त करता है, इकट्ठा करता है, उनका वर्गीकरण करता है और उनको प्रदर्शित करता है, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन किसी कला या विषय विशेष की सामग्री के संकलन में लगा दिया है। यह अनुभाग विशेष कलाकृतियों पर संभवित वृत्तचित्र, गायन श्रव्य, दृश्य सामग्री भी प्राप्त करता है जो कलाओं के अध्येताओं तथा प्रस्तुत कर्ताओं के लिये शोधात्मक महत्व की है। आलोच्य वर्ष के दौरान, सांस्कृतिक अभिलेखागार के कार्यकलापों में अनुसंधान एवं प्रलेखन परियोजनाओं पर विशेष बल दिया गया। आलोच्य वर्ष में सम्पन्न किए गए कार्यकलापों में से कुछ ये हैं :

1. व्यक्तिगत संग्रह

सांस्कृतिक अभिलेखागार अपनी अनुसंधान सामग्री को छः भिन्न-भिन्न श्रेणियों, अर्थात् साहित्य, वास्तु, शिल्प, छायाचित्र, संगीत, नृत्य और नाट्य के अन्तर्गत समृद्ध करता रहा।

डी. आर. डी. खांडेवा संग्रह

विख्यात छायाकार श्री डी. आर. डी. खांडेवा ने अनेक राष्ट्रनिष्ठ महानुभावों तथा देश के स्वातंत्र्य पूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर काल की महत्वपूर्ण घटनाओं के फोटोग्राफ दिए थे। वर्ष के दौरान, अनेक रंगीन तथा श्वेत-श्याम चित्रों (मढ़े हुए व बिना मढ़े हुए) व निगेटिवों के साथ-साथ चुने हुए लगभग 330 फोटोग्राफ प्राप्त किए गए।

उस्ताद अब्दुल मजीद अंसारी से मुखौटों का संग्रह

उस्ताद अब्दुल मजीद अंसारी से पांच खूबसूरत लकड़ी के मुखौटे प्राप्त की गई। उस्ताद अंसारी ने अपनी सारी जिन्दगी चिकनी मिट्टी से बे शुमार मुखौटे बनाने में लगा दी है। इन मुखौटों की दुर्लभ विशेषता यह है कि ये मिट्टी की बनी होने पर भी भार में बहुत हलकी हैं। उनके "मोड़ी" और "जोड़ी" पर नजर डालने से थकाई मालूम हो जाती है।

2. परियोजना अनुसंधान एवं क्षेत्र अध्ययन

कला क्षेत्र द्वारा संगमोत्सव

भारत की सुविख्यात नृत्यांगना श्रीमती संयुक्ता पाणिग्रहि द्वारा 'भरत नाट्यम' शैली में प्रकल्पित एवं प्रदर्शित, संगमोत्सव का प्रलेखन किया गया। यह कला क्षेत्र, मद्रास के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इसकी रेकार्डिंग वी. पार्थसारथी (वीडियो फोटोग्राफर) ने की है।

गुरु अम्मनूर माधव चाकियार द्वारा कूत्तिअट्टम

गुरु अम्मनूर माधव चाकियार कूत्तिअट्टम की प्रस्तावित नाट्यावलियों में चाकियार परिवार के चले हुए अंतिम अध्येता गुरु हैं। इस प्रलेखन की मुख्य विशेषता यह है कि परम्परागत शैली में नृत्य प्रस्तुत करने के लिए 37 वर्षीय नाट्यकुद एक स्वयं उपस्थित हुए। दो पैरिक फ्लाशेट (डी. वीडियो) में तैयार किए गए इस प्रलेखन में कूत्तिअट्टम के तीन वेशम अर्थात् अर्जुन अभिषेकम्, सुभद्राधनंजयम् और नीलकण्ठम् के साथ सूत्रभूत क्रियाओं को भी प्रदर्शित किया गया है। वैसे तो यह रेकार्डिंग लगभग 33 घण्टे की गई पर सम्पादन के बाद अंतिम रूप में इस प्रलेखन की अवधि 16 घण्टे है। यह प्रलेखन इससे पहले किए गए पर्यवेक्षी विश्लेषण और चाकियारम् नामक दो दृश्यों की रेकार्डिंग के अंतर्गत है जो इन्हीं प्रख्यात गुरु ने प्रस्तुत किए थे।

श्रीमती डी. वृंदा का संगीत कलासंगीत

धनम्माल स्मारक के प्रतिष्ठा सम्मान से सम्मानित कर्नाटक संगीतज्ञा श्रीमती डी. वृंदा के संगीत की ऑडियो एवं ऑडियो रिकार्डिंग मार्च, १९९३ में की गई। स्टूल फॉरमैट में यह 75 मिनट की और वीडियो (दृ-श्रव्य) फॉरमैट में 60 मिनट की है।

श्री ए. एस. गणेशन् द्वारा जलतरंग

जलतरंग प्राचीन काल का एक ऐसा वाद्य यंत्र था जो अधिक प्रचलित नहीं था। आज जलतरंग वाद्य को बजाने वाले बहुत कम लोग हैं। इसके अग्रणी वादकों में से एक हैं ए. एस. गणेशन्। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अपने यहाँ प्रस्तुत इनके कार्यक्रम की एक घण्टे की रिकार्डिंग की। इसमें दर्शकों को यह बताया गया है कि जलतरंग वादन के मूलभूत सिद्धान्त क्या हैं। इसके साथ ही इनके कार्यक्रम के कुछ प्रमुख अंशों की भी रिकार्डिंग की गई।

श्री एस. जनार्दनन् द्वारा प्रस्तुत अष्टपदी

केरल के गुरुवायूर मंदिर में गाई जाने वाली गीतगोविन्द की अष्टपदियों का ऑडियो प्रलेखन ऑडियो स्पूलों पर किया गया। गुरुवायूर मंदिर के एस. जनार्दनन् द्वारा प्रस्तुत यह कार्यक्रम दो घण्टे का है।

संकलन के कुछ मुख्य अंश

यह प्रलेखन कार्य मार्च-अप्रैल, १९९२ में आरम्भ श्याम शर्मा द्वारा किया गया। संकलन के निम्नलिखित तीन कुछ मुख्य अंशों के माध्यमों तथा कुछ कार्यक्रम की 13 घण्टे की रिकार्डिंग की गई:

1. गुरु गोपालदास कालिदास सिंह (96 वर्षीय)
2. गुरु कीनाराइलक्ष्मा अब्दुलकरीम खाँ (96 वर्षीय)
3. गुरु मदनेसवान और साथी सिंह (93 वर्षीय)

वर्ष 1992-93 के दौरान मानिकप्पा शरीफ की "अब्दुल रहमान" पर प्रस्तुति के बाद का विस्तृत काम सम्पन्न हो जाने के साथ ही, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पास शोधकर्ताओं के लिए अब एक और मूल्यवान प्रलेखन हो गया है।

3. फिल्म वीडियो फोटो की प्राप्तियां

इस वर्ष की नई प्राप्तियों में शामिल हैं: पोरि मुदलियार पिल्लै द्वारा 'लोकधर्मी' और श्री के. एस. कीनाराइलक्ष्मा द्वारा 'सामवेद इन साउथ इंडिया एण्ड एशिया' (दक्षिण भारत एवं एशिया में सामवेद)। 'अयप्पनकोवल' और 'प्रदेशकाम मूल का कला' पर दो वृत्तचित्र भी श्री इंदुधरन नायर से खरीदे गए हैं। 'पिल्लयार' फिल्म सिनेमा देवन भट्टाचार्य द्वारा तैयार की गई 7 फिल्मों का सेट भी केन्द्र द्वारा प्राप्त किया गया। इनमें कई गायन-नृत्य के विषय हैं, जैसे 'शिव का कल्याण', 'ईश्वर और मनुष्य', 'बुद्ध और ध्यान लगाने वाला', 'भजन करने वाले लोग' आदि।

वृत्तचित्रों के संग्रहालयों का एक सेट, जिसमें 'विजय नृत्यम' को प्रस्तुत किया गया है, प्राप्त हुआ है। इसके परिणिक्ष, कु. उर्मिला भट्ट और श्री गंगा कलेश्वर द्वारा मणिपुरी और कथकली के सम्बन्ध में 52 वर्षीय श्याम शर्मा-संग्रह इस वर्ष प्राप्त किए गए।

4. आन्तरिक प्रलेखन कार्य

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा अपनी अन्य विभिन्न समितियों, कलाशालाओं, संगोष्ठियों का अपना स्वयं प्रलेखन किया गया। इनमें शामिल हैं: चक्रदेवन मंदिर का 'पन्नाडी में सन्यास' और 'मन्दारी अन्य लोक के लोकगीतों को पहचानें', 'संगमशास्त्र' पर संगोष्ठी आदि कार्यक्रम केन्द्रों द्वारा किए गए प्रलेखनों को पहचानें।

कार्यक्रम घ : क्षेत्र अध्ययन

जनता शिक्षा प्रभाग इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कुछ ऐसे विशिष्ट सांस्कृतिक क्षेत्रों पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है जिनके साथ भारत के घनिष्ठ संबंध रहे हैं।

1. दक्षिण-पूर्व एशियाई कक्ष

इस कक्ष का उद्देश्य भारत तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच सांस्कृतिक संबंधों के अध्ययन के लिए पुस्तकालय सामग्री का योजनाबद्ध संग्रह बनाना है। दक्षिण-पूर्व एशिया में सभ्यता एवं संस्कृति विषयक सामग्री को साहित्य में व्यापक रूप से खोज करने की दिशा में काफी काम किया गया था। इस कैलेण्डर वर्ष में कक्ष ने पुस्तकालय द्वारा प्राप्त किए जाने के लिए 250 पुस्तकों की सूची बनाई है। प्रकाशकों, संस्थाओं, प्रेस तथा अन्य अधिकरणों के साथ संपर्क स्थापित करके 24 नई शृंखलाबद्ध प्रकाशनों के लिए सिफारिश की गई है।

दक्षिण एशियाई राष्ट्रीय कला केन्द्र में उपलब्ध दक्षिण-पूर्व एशिया विषयक स्रोत सामग्री का सूचक

केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय में उपलब्ध स्रोत सामग्री पर क्षेत्रानुसार और विषयानुसार विस्तृत ग्रंथ सूची तैयार करने के उद्देश्य से कक्ष मुनाफ में लगभग 500 शीर्षक जोड़े गए हैं।

व्यक्तिगत संग्रहों का अर्जन

दक्षिण-पूर्व एशिया विषय के प्रख्यात विद्वान डॉ. एच. बी. सरकार के पास पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा प्रलेखों का काफी बड़ा व्यक्तिगत संग्रह था। वर्ष के दौरान, श्रीमती सरकार ने इसमें से 173 पुस्तकें, पत्रिकाएं तथा मुद्रित सामग्री केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय को दानस्वरूप दे दी। इन्हें दिवंगत डॉ. एच. बी. सरकार संग्रह के नाम से अलग रखा गया है।

इंडोनेशिया से प्राप्त पुस्तकें

जुलाई 31-11, 1992 में अपनी इंडोनेशिया यात्रा के दौरान सदस्य सचिव को जकार्ता (इंडोनेशिया) में भारतीय राजदूतावास के माध्यम से, राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय भाषा विकास केन्द्र; राष्ट्रीय संग्रहालय; राष्ट्रीय पुरातात्विक अनुसंधान केन्द्र जकार्ता स्थित कला निदेशालय से बटाविया, इंडोनेशिया की 1300 से अधिक पुस्तकें प्राप्त हुई थीं। ये पुस्तकें अनेक विषयों से संबंधित थीं जैसे इतिहास, संस्कृति, पुरातत्व, मानव विज्ञान, भाषा तथा साहित्य। इनके अलावा इंडोनेशिया के प्रसिद्ध लेखकों की जीवनियां भी थीं। विभिन्न विषयों में शोध कार्य करने वाले शोधकर्ताओं के लिये यह सामग्री बहुत उपयोगी है।

2. पूर्व-एशियाई अध्ययन

इस वर्ष चीनी कक्ष की प्रमुख गतिविधियां थीं: वर्ष 1991-92 में 'भारत तथा चीन की मुक्त वाणी' पर हुई संगोष्ठी की अनुवर्ती कार्यवाही और अक्तूबर, 1993 में दूसरे संघ अकादमी की स्थापनाओं के अवसर पर होने वाली संगोष्ठी की तैयारी संबंधी कार्य।

'भारत तथा चीन की मुक्त वाणी' विषय पर हुई पिछली संगोष्ठी और उस वर्ष हुई 'दूसरे अंग कला: चीन और तिब्बत' विषयक प्रदर्शनी संबंधी पत्रिकाएं प्रकाशित कर दी गई हैं। पिछली संगोष्ठी के अंतिम रूप में तैयार किए गए कार्यवृत्त का संपादन किया जा चुका है। दो नाम चुने संगोष्ठी संबंधी ग्रंथ पत्रों का चीनी भाषा में अनुवाद कर रहे हैं जो दूसरे अंग अकादमी संबंध के विशेष अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

तुनहुआंग कला पर दुआन वेन्जी द्वारा लिखी गई पुस्तक के अनुवाद का काम पूरा हो गया है। यह ग्रंथ भी महाराष्ट्र प्रेस को भेज दी जाएगा।

भारत तथा चीन का तुलनात्मक संगीत संबंधी ग्रंथ सर्वेक्षण की तैयारी है। यह इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा दुनहुआंग अकादमी के बीच सहयोग की योजना के अन्तर्गत एक परियोजना है। 500 से अधिक कैसेटों का चयन किया जा चुका है।

चीन की कला के अध्ययन के लिए सामग्री इकट्ठी की जा रही है। नाइपेई के राजमहल संग्रहालय से पुस्तकों का एक संग्रह प्राप्त हुआ है। बीजिंग से प्रथम अन्य चीनी पुस्तकें केन्द्रालय में मंगाई जा रही हैं।

कक्ष ने 'प्रकृति' नामक पत्रिका के लिए अंतरा मशीन दिया और इसके लिए चीनी, फ्रांसी तथा संस्कृत भाषा के प्राथमिक तथा माध्यमिक स्रोतों से मूल 1500 सामग्री उपलब्ध कराई।

3. बृंशियाई अध्ययन

नीचे केन्द्र बृंशियाई अध्ययनों से संबंधित है जो कि दौरान हुए महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में से कुछ ये थे:

ओल्डस्मिथ का अनुवाद

कक्ष ने ओल्डस्मिथ खण्ड के 25 पन्नों का अनुवाद पूरा कर लिया है।

''इंडियन'' कार्यक्रम

पारामर्शदाता ने मार्च अप्रैल, 1992 में मास्को की यात्रा की और इंडियन द्वारा माइक्रोफिल्म तैयार करने के लिए उनको कई पुस्तकें भेजीं। इनमें से केन्द्र को 1535 माइक्रोफिल्म प्राप्त हो चुका है। इसके साथ ही समझौते के अनुसार, केन्द्र ने इंडियन को एक माइक्रोफिल्म कैमरा भेजा है।

जहां तक अब तक प्राप्त हुई सामग्री के अकादमिक स्वरूप का प्रश्न है, केन्द्र के पास मुख्य परिवार का क्रोनोलॉजिक काल तथा सोचिबल काल दोनों के लिए विस्तृत ग्रंथ सूचियां हैं। ये ही कला के विषय में भी प्रमुख स्रोतों का काम देते हैं।

मौरे पोटसंग्रह पांडुलिपियां

मौरे पांडुलिपियों पुस्तकालय के पी. पुरी पेरुमियान और एन. वोरोबियोव ऐसोसियेशन ने फरवरी, 1993 में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का दौरा किया और सभी विद्वान अकादमियों के साथ संबंधित मौरे पांडुलिपियों के संग्रहों में उपलब्ध सभी भारतीय पांडुलिपियों की सूचियां देने के लिए एक व्यवस्था पर हस्ताक्षर किए। ये सिलसिलेवार केन्द्रालय में पूरे संपूर्ण संग्रह की प्रतिलिपि तैयार करने के लिए सहमत हुए हैं।

सम्मेलन

''भारत तथा पड़ोसी देशों के संबंध का यूरोपीय भाग'' विषय पर विदेश मंत्रालय का विशेष सम्मेलन 25-27 फरवरी, 1993 को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में एक सम्मेलन आयोजित किया गया।

कला कोश

कला कोश प्रभाग बौद्धिक परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं बहुविषयक संदर्भों में अनुसंधान करता है। यह केन्द्र के मुख्य अनुसंधान तथा प्रकाशन प्रभाग के रूप में काम करता है। यह पाठ्य सिद्धान्त तथा व्यवहार पक्ष की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस प्रभाग ने (क) उन प्राथमिक संकल्पनाओं का पता लगाया है जो भारतीय विश्व दृष्टिकोण की मूलाधार हैं और जो नयी विधाओं शास्त्रों तथा जीवन के आयामों में व्याप्त हैं; (ख) प्राथमिक ग्रंथों की नवीन सामग्री का भी पता लगाया है जो अब तक अज्ञात, अप्रकाशित और अप्राप्य थी, अब उन सामग्री को अनुवाद के साथ मूल भाषा में प्रकाशित किया जाएगा; (ग) उन विद्वानों तथा पंडितों की कृतियों के प्रकाशन की योजना बनाई है जो अपनी ही भाषावादी दृष्टिकोण के माध्यम से अन्तर्सांस्कृतिक पद्धति तथा बहुविषयक रीति से कलात्मक परम्पराओं को समझने में अग्रणी रहे हैं, और (घ) एक 21 खंडीय विश्वकोश के निर्माण का कार्यक्रम प्रारंभ करने के लिए योजना का प्रारूप तैयार किया है।

प्रभाग का कार्य मुख्य रूप से चार बड़ी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

क. कलातत्त्वकोश	:	आधारभूत संकल्पनाओं का कोश और पारिभाषिक शब्दावलियां।
ख. कलामूलशास्त्र	:	उन आधारभूत ग्रंथों की संज्ञा जो भारतीय कलात्मक परम्पराओं की बुनियाद है और प्राथमिक ग्रंथ जो किसी कला विशेष से संबंधित हैं।
ग. कलासमालोचन	:	समीक्षात्मक पांडित्य की ग्रंथमाला, और
घ. कला विश्वकोश	:	कलाओं का एक बहुखंडीय विश्वकोश; भारत की मुख्यस्रोत कलाओं पर एक खण्ड।

कार्यक्रम क : कलातत्त्वकोश

कला कोश प्रभाग का पहला कार्यक्रम है भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का कोश। विभिन्न विद्वानों के परामर्श से, डॉ. लक्ष्मण शास्त्री जोशी के मार्गदर्शन में, ऐसे लगभग 250 पारिभाषिक शब्दों की सूची तैयार की गई जो अनेक शास्त्रों के मूल प्राथमिक ग्रंथों में व्यवहृत हुए हैं और जिनका बीज कलाओं में दृष्टिगोचर होता है। प्रत्येक संकल्पना का अनुसंधान अनेक शास्त्रों विषयों के प्राथमिक ग्रंथों के माध्यम से किया जाता है। जैसा कि सुविदित है, एक पारिभाषिक शब्द का एक मुख्य अर्थ होता है जो काफी व्यापक होता है, लेकिन कालांतर में उसी शब्द के अनेक अर्थ विकसित हो गए हैं। ऐसे संकलन, चिन्तन तथा पुनः एकत्रीकरण के द्वारा भारतीय परंपरा की मूलभूत एकता और उसके अभिन्नार्थ अन्तःसम्बंध स्वरूप का पुनर्निर्माण किया जा सकेगा।

कलातत्त्वकोश का प्रथम खंड 1988 में प्रकाशित किया गया। इसमें आठ पारिभाषिक शब्दों का विवेचन किया गया है। अंतर्राष्ट्रीय विद्वत् समाज में इसका बड़े स्वागत हुआ और इसकी व्यापक रूप से समीक्षा की गई।

जैसा कि गत वर्ष की रिपोर्ट में कहा गया है, कलातत्त्वकोश का द्वितीय खंड दिक् तथा काल से संबंधित पारिभाषिक शब्दों के बारे में है, और 16 मार्च, 1992 को प्रभाग मंत्री द्वारा इस खंड का विमोचन किया गया।

कलातत्त्वकोश का तृतीय खंड पंचमहाभूतों से संबंधित है। इसके कार्य में प्रगति हुई है। सामग्री इकट्ठी की जा चुकी है और लेख लिखने का कार्य विद्वानों को सौंपा जा चुका है। अधिकांश लेख तो प्राप्त भी हो गए हैं और शेष के अंश

प्राप्त होने की आशा है। अब तक प्राप्त हुए लेखों की मार्च, 1993 में [illegible] में हुई विशेषज्ञों की बैठक में समीक्षा की जा चुकी है।

आकृति विषय से संबंधित चतुर्थ तथा पंचम खंड में समाविष्ट किए जाने वाले पारिभाषिक शब्दों की एक अनंतिम सूची भी उसी बैठक में बनाई गई।

कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र

कला कोश प्रभाग का दूसरा दीर्घकालिक कार्यक्रम है वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला से लेकर संगीत, नृत्य, नाट्य तक की भारतीय कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रंथों का पता लगाना और उनका समालोचनात्मक सम्पादन करके टीका टिप्पणियों तथा अनुक्रमणियों के साथ उन्हें ग्रंथमाला के रूप में प्रकाशित करना।

सामलक्षणम् तथा *दत्तिलम्* नामक दो ग्रंथ 1988-89 में प्रकाशित किए गए थे। *सामलक्षणम्* में सामवेद से संबंधित वैदिक स्वरों का निरूपण किया गया है और *दत्तिलम्* संगीत विषयक एक अतिप्राचीन ग्रंथ है।

हस्तमुक्तावली कवि *कर्णपाल* के 4 खण्ड और *बृहद्देशी* के प्रथम खण्ड के सम्पादनकार्य में संस्कृत दिवस 16 मार्च, 1992 को प्रभाग मंत्री द्वारा समर्पित किए गए।

कालिकापुराण की सब प्रकार से शोधपूर्ण, एक के बाद-लिखित प्रति सह-प्रकाशक के पास अन्तिम रूप में मुद्रण के लिए भेजी गई है। *कालिकापुराण* खण्ड प्रथम खण्ड की केवल लिखित पाठ की प्रति तैयार की जा चुकी है और इसे शीघ्र ही सह-प्रकाशक के पास भेज दिया जाएगा। *तन्त्रनिर्णय* प्रथम खण्ड की केवल लिखित अवस्था के पहले की कच्ची प्रति की जांच की जा चुकी है और पाठ के अनुवादक सम्पादक द्वारा अनुमोदन की जा चुकी है और उसकी केवल-लिखित प्रति तैयार की जा रही है। शेष पाठ की लेख प्रति तैयार है और उसकी अशुद्धियां दूर करने के लिए पढ़ी जा रही है।

मयमतम् के दोनों खंडों की लेख प्रतियां तैयार हैं और पढ़ी जा चुकी हैं। उनकी एक प्रतिलिपि जांच तथा अनुमोदन के लिए सम्पादक अनुवादक के पास भेजी जा रही है।

लक्षणसार और *सूत्र* की संपूर्ण पाण्डुलिपि सम्पादक अनुवादक से प्राप्त हो चुकी है। उसके अनुवाद की इस दृष्टि से जांच की जा रही है जिससे कि किसी सुयोग्य विद्वान द्वारा सम्पादक द्वारा की पाण्डुलिपि के सम्पादन के लिए सिद्धान्त निर्धारित किए जा सकें और उसमें संशोधन एवं सुधार के स्थलों का पता लगाया जा सके।

ईश्वरसंहिता की संशोधित पाण्डुलिपि के अंश प्राप्त हो चुके हैं। प्रभाग के समन्वयकर्ता ने अनुसंधानात्मक पद्धति। *क्रियाकल्पलतिका*, *मानसोल्लास* तथा *शैवागम मानस* के अनुवाद तथा सम्पादन के कार्य की समीक्षा की है और उनकी प्रगति को संतोषजनक पाया है।

[illegible] प्रथम खंड के लिखित-पाठ का कार्य समाप्त हो चुका है। *[illegible]* के संदर्भ लिखित-पाठ एवं लिपि का कार्य चल रहा है।

शिल्परत्नकोश के अनुवाद एवं सम्पादन का कार्य पूरा हो चुका है और लिख लिया जा चुका है। केवल-लिखित अवस्था में पाठों का प्रारम्भ आगे की कार्यवाही के लिए प्राप्त हो चुका है।

कुछ अन्य कृतियों, जैसे *[illegible]*, *[illegible]*, *[illegible]*, *[illegible]* और *[illegible]* के विषय में जानकारी प्राप्त का प्रयास हो चुके हैं और कार्य प्रारंभ हो चुका है।

कलानुशासन ग्रन्थमाला के भावी कार्यक्रम के अन्तर्गत 52 ग्रंथ प्रकाशन की विभिन्न अवस्थाओं में हैं। भारत में तथा विदेशों में भी ऐसे लक्ष्यप्रसिद्ध विद्वानों से संपर्क स्थापित करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं जिनका सहयोग इस कार्यक्रम के लिए पांडुलिपियाँ तैयार करने के कार्य का भिन्न भिन्न अवस्थाओं में लिया जा सकता है। वे ग्रंथ हैं :-

1. मूल ग्रंथ (वैदिक साहित्य)

क्र. सं.	ग्रंथ	सम्पादक
क.	**संहिता साहित्य**	
1.	जैमिनीय सामवेद संहिता	डॉ. सी. आर. स्वामिनाथन
ख.	**ब्राह्मण ग्रंथ**	
1.	शतपथ ब्राह्मण	डॉ. आर. पटियाल
2.	जैमिनीय ब्राह्मण	प्रो. ई. आर. श्रीकृष्ण शर्मा
3.	कात्यायनपथब्राह्मण	डॉ. सी. आर. स्वामिनाथन
ग.	**सूत्र साहित्य**	
1.	आपस्तंब श्रौत सूत्र	डॉ. गणेशराम शास्त्री
2.	बौधायन श्रौत सूत्र	डॉ. टी. एस. धर्माधिकारी तथा पी. सी. डी. कालिनाथ
3.	हिरण्यकेशी श्रौत सूत्र	डॉ. पी.डी. [illegible]
4.	जैमिनीय गृह्य सूत्र	प्रो. [illegible]
5.	जैमिनीय श्रौत सूत्र	प्रो. [illegible]
6.	[illegible] श्रौत सूत्र	डॉ. एच. जी. [illegible]
घ.	**संग्रह ग्रंथ**	
1.	[illegible] : [illegible]	डॉ. [illegible]
	[illegible]	
	[illegible]	

2. शिल्प ग्रंथ (कलाएं एवं सौंदर्यशास्त्र)

क.	**संगीत ग्रंथ (नृत्य, गीत, वाद्य)**	
1.	[illegible] : प्रकाशित	डॉ. [illegible]
2.	[illegible] : प्रकाशित	डॉ. [illegible]
3.	[illegible]	प्रो. आर. सत्यनारायण
4.	[illegible]	[illegible]
5.	[illegible] : प्रकाशित	डॉ. [illegible]
6.	[illegible]	प्रो. आर. सत्यनारायण
7.	[illegible] : प्रकाशित	डॉ. मुकुंद लाठ
8.	[illegible]	प्रो. [illegible]
9.	[illegible]	प्रो. [illegible]

10.	संगीतोपनिषत् सारोद्धार	डॉ. [illegible]
11.	हृदय कौतुकम्	प्रो. आर. सत्यनारायण
12.	हृदय प्रकाश	प्रो. आर. सत्यनारायण
13.	संगीत मकरन्द	डॉ. विजय लक्ष्मी
14.	संगीत नारायण	डॉ. [illegible]
15.	संगीत चन्द्रोदय	प्रो. आर. सत्यनारायण
16.	संगीत सुधाकर	प्रो. आर. सत्यनारायण

ख. नाट्य ग्रंथ (नाट्यशास्त्र)

1.	भरतभाष्य (भरतदेव रचित)	डॉ. प्रेमलता शर्मा
2.	भाव प्रकाशन (शारदातनय रचित)	प्रो. डी. टी. सिन्हा

ग. वास्तु ग्रंथ (स्थापत्यकला)

1.	अपराजितपृच्छा (अघोरशिवाचार्य विरचित अथवा भालचन्द्रराम (भोजदेव देव रचित)	प्रो. लक्ष्मी [illegible]
2.	अपराजितपृच्छा	प्रो. एस. ए. दाऊदी
3.	शिल्प संहिता	प्रो. एस. ए. दाऊदी
4.	काश्यप शिल्प	प्रो. [illegible]
5.	मयमतम्	प्रो. [illegible]
6.	[illegible]	डॉ. [illegible]
7.	राजवल्लभ	डॉ. [illegible]
8.	समरांगण सूत्रधार (भोज रचित)	डॉ. पी. एल. भट्ट
9.	मैथिलकाम	डॉ. [illegible]
10.	शिल्परत्नकोश	डॉ. [illegible]
11.	[illegible]	डॉ. के. के. राजा
12.	[illegible] ([illegible] रचित)	डॉ. मुकुंद लाठ तथा डॉ. [illegible]

घ. मूर्ति ग्रंथ (प्रतिमा विज्ञान)

1.	[illegible]	डॉ. विश्वनारायण [illegible]
2.	[illegible]	डॉ. [illegible] मुखोपाध्याय

चित्र (पेंटिंग)

1.	[illegible]	डॉ. [illegible]

च. अलंकार ग्रंथ (साहित्यशास्त्र)

1.	[illegible]	डॉ. आर. [illegible]
2.	[illegible] ([illegible] रचित)	डॉ. [illegible]

छ. संदर्भ ग्रंथ

1.	[illegible]	डॉ. [illegible]

III आगम/तंत्र ग्रंथ

1.	अघोरशिवाचार्य पद्धति	डॉ. एस. एस. [illegible] तथा डॉ. [illegible]
2.	ईश्वर संहिता	प्रो. [illegible]
3.	मालिनी विजयोत्तर तंत्र	कु. [illegible]
4.	मरीचि संहिता	प्रो. एस. एन. [illegible]
5.	संस्थान [illegible] तंत्र	प्रो. [illegible]
6.	[illegible] संहिता	डॉ. [illegible]
7.	[illegible]	डॉ. ए. बी. [illegible]
8.	[illegible]	डॉ. एन. आर. भट्ट
9.	तंत्रसारसंग्रह	डॉ. के. टी. पांडुरंगी

IV. बौद्ध ग्रंथ

1.	[illegible]	डॉ. [illegible]

V. चिकित्सा ग्रंथ (आयुर्वेद)

1.	चिकित्सासार संग्रह	डॉ. विश्वनाथ शर्मा
2.	तंत्र प्रकाशिका	डॉ. विश्वनाथ शर्मा

VI. क्षेत्रीय ग्रंथ

1.	कविकर्ण रसायन [illegible] (प्रकाशित)	डॉ. [illegible]
2.	[illegible]	डॉ. [illegible]

कार्यक्रम ग : कलासमालोचन

कला केंद्र प्रकाशन का संचालन कार्यक्रम हिंदी के प्रेमियों को सामग्री और समालोचनात्मक साहित्य पर केंद्रित है। इन्हीं दिनों प्रकाशों में [illegible] प्रकाशों के प्रारंभिक वर्षों में कुछ विद्वानों ने भारतीय तथा पश्चिमी कलाओं के संबंध में एक नए दृष्टिकोण का संचार करने की आवश्यकता अनुभव एवं प्रयत्न है। इस दिशा में और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए, [illegible] कलासमालोचन कार्यक्रम के अन्तर्गत कुछ नये और विद्वानों जैसे ए. के. कुमारस्वामी, पॉल मुन और कुछ अन्य विद्वानों [illegible] कृतियों को प्रकाशित करने का कार्य प्रारंभ किया गया। चयन की अभीष्ट अन्तर्दृष्टिक बोध तथा वस्तुनिष्ठ दोनों के कारण इस कृति का महत्व एवं इसकी सुलभता है।

प्रथम चरण में निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं :

1. [illegible]	लेखक : [illegible]
2. [illegible]	संपादक : डॉ. [illegible]
3. [illegible]	लेखक : [illegible]
4. [illegible]	लेखक : [illegible]
5. [illegible]	संपादक : [illegible]
6. [illegible]	लेखक : [illegible]

7. *द्न मर्च आफ ऐस्थेटिक्स फ्रॉम प्लेटो थियेटर* — लेखक : माइकल पेरके
8. *एलोरा : कॉन्सेप्ट एण्ड स्ट्राटा* — लेखक : कार्मेल बकराल
9. *अंडरस्टैंडिंग कुचिपुडी* — लेखक : वी आर. आचार्य तथा पल्लवी साराभाई

कई अन्य खंडों के प्रकाशन का कार्य विभिन्न अवस्थाओं में है जिनमें से कुछ हैं : *वेंगोपुरा*, लेखक : [illegible] मुख, अनुवाद : [illegible], *इरुवु*, मैकडोनाल्ड; *डिक्शनरी आफ इंडो-पर्शियन लिटरेचर*, कोशकार : [illegible]; *मिनेकेटेड लेटर्स एण्ड पेपर्स आफ एस. ओलडेनबर्ग*; *एक्सप्लोरिंग इंडियन मैक्रेड आर्ट*, लेखिका : [illegible] आदि।

आनन्द के. कुमारस्वामी की कृतियों का संग्रह

दूसरा लम्बा चलने वाला कार्यक्रम है आनन्द केंटिश कुमारस्वामी की कृतियों का संग्रह जो विद्वतापूर्ण मूलग्रन्थिल रूप में लेखक के प्रामाणिक संशोधनों के साथ प्रकाशित किया जाना है।

इस ग्रंथमाला के निम्नलिखित चार खंड प्रकाशित किए जा चुके हैं :-

1. *मिनेकेटेड लेटर्स ऑफ आनंद कुमारस्वामी* — संपादक : [illegible] तथा [illegible] कुमारस्वामी
2. *वॉर इन मिडिवाइजेशनी*
3. *टाइम एण्ड इटर्निटी*
4. *एसेज ऑन अर्ली इंडियन आर्किटेक्चर* — संपादक : मिकाइल नाइसार

एक अन्य खंड, अर्थात *मिडिवियल आर्किटी एण्ड इंडियन पाथ*, सम्पादक : [illegible] तथा डॉ. [illegible] मुद्रण की अंतिम अवस्थाओं में है। दो अन्य खण्ड, यानी *विद्यापति [illegible]* और *दि [illegible] : एसेज ऑन वेदिक कॉस्मोलॉजी*, संपादक : [illegible] और [illegible] प्रेस में भेजे जा चुके हैं।

कुछ अन्य खण्ड जो शीघ्र ही मुद्रणार्थ भेजे जाएंगे उनमें से कुछ हैं :

1. *सर्ची मॉन्ग फ्रॉम दि पंजाब एण्ड कश्मीर* — संपादक : डॉ. प्रेमलता शर्मा
2. *वॉर इज मर्डरेस*, — संपादक : डॉ. कविता वात्स्यायन तथा डॉ. ललिता [illegible], गुजरात
3. *[illegible] ऑफ [illegible] इन आर्ट* — संपादक : डॉ. कविता वात्स्यायन

निम्नलिखित कतिपय अन्य खण्डों के प्रकाशन का कार्य भिन्न भिन्न अवस्थाओं में चल रहा है :-

1. *एसेज ऑन जिओलॉजी*
2. *एसेज ऑन पेंटिंग*
3. *एसेज ऑन हिन्दूइज्म एण्ड बुद्धिज्म*
4. *विंचलसोपाफी ऑफ डा. आनन्द के. कुमारस्वामी*
5. *दि आइडिया एण्ड आर्टिस्ट ऑफ इंडिया एण्ड सिलोन*
6. *एसेज ऑन एस्थेटिक्स*
7. *जैन पेंटिंग्स*
8. *बुद्धिस्ट एसेज*
9. *[illegible] एण्ड [illegible]*
10. *[illegible] ऑन [illegible]*

भावी कार्यक्रम

कलासमालोचन के प्रकाशन की [illegible] के दूसरे भाग में आधुनिक भारतीय भाषाओं के भारतीय समालोचकों, जैसे शिवराम कारन्त, डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल और अन्यान्य [illegible] प्रसिद्ध विद्वानों की कृतियों को शामिल करने का प्रस्ताव है।

कार्यक्रम घ : कला विश्वकोश

कला विश्वकोश

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने कलाओं का एक बहु खंडीय विश्व कोश तैयार करने का एक बड़ा कार्यक्रम प्रारंभ किया है। इसका उद्देश्य पाठकों को सभी कलाओं से पूरा रूप से अवगत कराना है। इसमें यह मानकर चला गया है कि सभी सांस्कृतिक रूपों की कलाएं मानव के समुदाय के सम्मिलित सर्जनात्मक अनुभव हैं। इस विश्वकोश का उद्देश्य परंपरागत पाश्चात्य अर्थों में एक संदर्भ ग्रंथ उपलब्ध कराना नहीं, अपितु एक ऐसा कोश तैयार करना है जिसमें विभिन्न संस्कृतियों के बीच संपर्क, आदान-प्रदान व समन्वय का स्पष्ट चित्रण हो और मानवजाति द्वारा सम्मिलित रूप से अपनाई गई कलात्मक प्रक्रियाओं का अभिलेख हो। जहां तक इसकी कार्य प्रणाली एवं विधि-तंत्र का प्रश्न है, इसमें कलाओं के प्रति मूलतः भारतीय दृष्टिकोण अपनाकर एक नई उद्भावना प्रस्तुत की जा रही है। इस प्रकार अब तक पाश्चात्य पद्धति हावी रहने के कारण ऐसे ग्रंथों में जो असंतुलन उत्पन्न हो गया था उसे दूर करने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है।

इस संबंध में दो अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियां आयोजित की जा चुकी हैं, जिनमें इस परियोजना को सर्वांगपूर्ण विकसित करने के लिए विदेशी तथा भारतीय विशेषज्ञों ने भाग लिया। मार्च, 1992 में आयोजित कार्यशाला में दृश्य विचार विमर्श के आधार पर रूपरेखित कला विश्वकोश की रूपरेखा तैयार की जा चुकी है और अब उसे दीर्घकालीन टिप्पणी के लिए भारतीय तथा विदेशी विद्वानों के पास भेजा जा रहा है, तत्पश्चात् प्रत्येक खंड की विषयवस्तु को अन्तिम रूप दिया जाएगा।

कलाओं का इतिहास

भारत की सुदूर तथा कला पर एक परियोजना हाथ में ली गई है। 90,000 स्लाइडों का संकलन कार्य पूरा हो चुका है; इनमें से 1,800 स्लाइडें कलात्मक नमूने के रूप में चुनी गए हैं।

संगोष्ठियां

वर्ष 1992-93 के लिए अनुसंधान व प्रकाशन कार्य तथा प्रदर्शनियों और कार्यशालाओं को उद्देश्य विषय तथा अंतिम रूपरेखाओं की संकल्पनाओं में शोध करना जिसमें आज तक सभी संस्थाओं को प्रभावित किया है और जो आज भी हर तरह के विचार विमर्श में चाहे वह भौतिक विज्ञानों से संबंधित हो अथवा पर्यावरण विषयक, उतना ही केन्द्रभूत एवं उपदेश तथा कार्योन्मुख है। मानव एवं प्रकृति का पारस्परिक संबंध इस विचारधारा का मूल विषय रहा है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने वर्ष 1992 में अंदाजन 1993 तक पांच महत्वपूर्ण संगोष्ठियां आयोजित की। इनका आयोजन कला कोश तथा संस्कृति संबंधी प्रकाशनों द्वारा संयुक्त रूप से किया गया क्योंकि इन संगोष्ठियों का आयोजन कार्य निश्चित रूपों तथा मौलिक परिकल्पनाओं में दोनों के माध्यम से किया जा रहा था। प्रत्येक संगोष्ठी एक विशेष पक्ष पर केन्द्रित होते हुए भी विद्वानों का कलाओं से संबंधित अन्य पक्षों संबंधी विषयों से भी जुड़ाव था। इन संगोष्ठियों में विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों ने भाग लिया जो अलग-अलग सांस्कृतिक तथा आर्थिक स्तरों से आए थे। दोनों जैसे जन-जातीय समुदायों के प्रभाव से लेकर डॉ. एस. जानकीकर जैसे मूलतः भौतिक विज्ञानों की इसमें सम्मिलित हुए। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की इन संगोष्ठियों के फलस्वरूप न केवल भारत के विभिन्न भागों में तथा शिक्षा संस्थाओं में अपितु विश्व के अन्य बहुत से केन्द्रों में भी इन विषयों पर काफी विचार प्रारंभ हुआ है।

1. संगोष्ठियों का इस शृंखला में पहली संगोष्ठी का विषय था 'भौतिक परंपरा में पुनः खोज'। यह गोष्ठी दिल्ली में 10 से 13 जनवरी, 1992 तक हुई।

2. दूसरी संगोष्ठी का विषय था 'पृथ्वी की संवेदनाएं : भौतिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक'। यह संगोष्ठी पुणे में 2 से 5 मार्च, 1992 तक पुणे विश्वविद्यालय के सहयोग तथा पर्यावरण मामलों के मंत्रालय विभाग के साथ मिलकर आयोजित की गई।

3. तीसरी संगोष्ठी का विषय था : 'भारतीय कलाओं में महाभूतों की भूमिका और उनकी आत्मिक पृष्ठभूमि'। यह नई दिल्ली में 12 से 14 मार्च, 1992 तक हुई। इस संगोष्ठी का मूल चिन्ता यह था कि भारतीय कलाएं सिद्धान्त तथा व्यवहार दोनों ही दृष्टियों से एक ऐसे ब्रह्मांड विज्ञान, सृष्टिशास्त्र पर आश्रित हैं जो अग्नि, वायु तथा आकाश पर आधारित है।

4. चौथी संगोष्ठी पंचमहाभूतों के विषय में ही थी। खगोल विज्ञान तथा खगोल भौतिकी के अन्तर्विश्वविद्यालय केन्द्र के सहयोग से 24 से 27 अगस्त, 1992 तक पुणे में हुई। इस संगोष्ठी में, इस के विषय में भारतीय परम्परागत धारणा और आधुनिक वैज्ञानिक संकल्पना दोनों ही दृष्टियों से चर्चा की गई।

5. पांचवीं संगोष्ठी 'प्रकृति तथा मानव एक समाकलित दृष्टि' विषय पर हुई। यह अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी नई दिल्ली में 5 से 12 जनवरी, 1993 तक चली। इसमें 5 भूतभूत तत्वों के संदर्भ में प्रकृति संबंधी धारणाओं के विषय में परंपरागत दृष्टिकोण तथा आधुनिक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में चर्चा हुई, जिनसे मनुष्य तथा समग्र विश्व का निर्माण हुआ है।

प्रलेखन

इनसान संस्कार की चौथी रिकार्डिंग इस प्रभाग के एक अध्येता के पर्यवेक्षण में की गई, यह अनुष्ठान गोधी नगर, गुजरात की बोनासनवामी अक्षर पुरुषोत्तम संस्था द्वारा आयोजित कर्मकांडों की शृंखला के अन्तर्गत किया गया था।

व्याख्यान

आलोच्य वर्ष में 13 अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यान आयोजित किए गए। ये व्याख्यान विशिष्ट विद्वानों द्वारा गौड़वंशास्त्र, काव्य, गायकी, पुरालेखशास्त्र आदि विषयों पर दिए गए।

जनपद सम्पदा

जनपद सम्पदा प्रभाग कला केन्द्र प्रभाग के कार्यक्रमों के पूरक के रूप में कार्य करता है। इसका ध्यान वाद्य और संदर्भ के अलावा भारत और पड़ोसी की जनजातीय एवं ग्रामीण संस्कृतियों को समृद्ध तथा विविध रूप में से उपलब्ध धरोहर की कलात्मक अभिव्यक्तियों पर केन्द्रित रहता है। कला और संस्कृति के क्षेत्र में निरंतरता एवं परिवर्तनशीलता बराबर बनी रहती है। बीच बीच में अनेक छोटे बड़े सांस्कृतिक आन्दोलन होते रहे हैं जिनके द्वारा अभिजात कलाएं, लिखित, गंभीरतान तथा संहिताबद्ध परंपराओं को, जिन्हें 'शास्त्रीय' कहा जाता है, अपने कार्यक्षेत्र के लिए ईंधन मिलता है और इस प्रकार सांस्कृतिक क्षेत्र में नवीकरण की प्रक्रिया बराबर चालू रही है। कलात्मक अभिव्यक्ति जीवन चक्र तथा जीवन संचालन का अभिन्न अंग है। यह अभिव्यक्ति जिसमें व्यक्ति या किसी रूप में छोटे या बड़े पैमाने पर अनेक कलाओं और पक्षों के मेलों और उत्सवों के माध्यम से सामूहिक तौर पर अक्सर मनाई जाती रही है। आज भी ये मेले महोत्सव आज सर्वत्र और सहज-सहज के लिए ही खुले जाते जाते हैं, पर अब तक उनकी विश्व के समग्र रूप की सजीव निरंतरता को अभिव्यक्त करने वाली संपूर्णता को बराबर अलग अलग कड़ियों में ही देखा गया है।

इसकाद सम्पदा प्रभाग के अनुसंधान तथा अन्य कार्यकलापों का उद्देश्य इन कला रूपों को उनके आर्थिक-सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक संदर्भों में पुनः स्थापित करना और उन्हें समाज तथा संस्कृति के विकास में उनके योगदान को उजागर करना है। उन्हें पारंपरिक परम्पराओं का अभिव्यक्ति का उपकरण नहीं समझा जा रहा है। हालांकि मौखिक परंपराओं पर जोर दिया जा रहा है, पर लिखित परम्पराओं और सिद्धान्त पक्ष की भी उपेक्षा नहीं की जा रही है। दूसरे शब्दों में सिद्धान्त पक्ष तथा व्यवहार पक्ष, कला तथा दैनिक, शाब्दिक, दृश्य तथा प्रदर्शनात्मक रूपों को एक सांस्कृतिक पूर्ण के रूप में देखा जा रहा है, न कि संकीर्ण किए, अलग थलग अलग अलग खंडों के रूप में। कार्यक्रम प्रस्तुत करने के माध्यमों में लोक देश, लौकिक, मौखिक जैसे शब्दों को महत्व दिया जा रहा है।

इस प्रभाग के कार्यक्रमों का विभाजन इस प्रकार है :-

क. मानव जाति वर्णनात्मक संग्रह : इन संग्रहों में मूल, अनुकृतियां तथा रिप्रोग्राफिक प्रतिलिपियां बुनियादी स्रोत सामग्री के रूप में इकट्ठी की जाती हैं।

ख. बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां : दो दीर्घाओं की स्थापना : (1) आदि दृश्य, जिसमें भारत तथा अन्य देशों की प्राग्ऐतिहासिक शैल कला प्रदर्शित की जाएगी और (2) आदि श्रव्य, जिसमें संगीत तथा संगीतेतर ध्वनि की अभिव्यक्ति होगी। दूसरे शब्दों में, दृष्टि तथा ध्वनि की ज्ञानेन्द्रियों (अंतरिक्ष एवं काल) से संबंधित आधारभूत संकल्पनाएं प्रस्तुत की जाएंगी।

ग. जीवन शैली अध्ययन : ये कार्यक्रम आगे (1) लोक परम्परा और (2) क्षेत्र समाधा नामक दो भागों में बंटे हैं। लोक परम्परा के अन्तर्गत, भारत के भिन्न भिन्न आर्थिक क्षेत्रों में मनुष्य की जीवन शैलियों का अध्ययन किया जाता है। क्षेत्र समाधा के अन्तर्गत विशेष स्थानों या सीमा परिस्थितियों के ऐसे अध्ययन की कल्पना की गई है जिनमें इनके भौतिक विज्ञानक कलात्मक, पौराणिक और सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने वाली प्रक्रिया को भी ध्यान में रखा जाता है।

घ. ताल जगत : इस अनुभाग के कार्यक्रमों का उद्देश्य बच्चों को प्राचीन संस्कृतियों की समृद्ध परम्परा तथा तत्संबंधी वास्तविकताओं से उनके घरों तथा स्कूली वातावरण के माध्यम से परिचित कराना है, जिनसे वे अब तक अछूते रहे हैं।

ङ. प्रयोगिक रंगशाला एवं स्टूडियो : इसका उद्देश्य एक ऐसा स्थल उपलब्ध कराना है जहां मिलकर सामूहिक कार्यकलाप तथा नए नए प्रयोग किए जा सकें। यहीं पर कार्यालय के आंतरिक प्रलेखन कार्य के लिए स्टूडियो की व्यवस्था है।

च. संरक्षण प्रयोगशालाएं : इन प्रयोगशालाओं का कार्य कलाकृतियों तथा कला शिल्पों का संरक्षण करना है।

वर्ष 1992-93 में जनपद सम्पदा प्रभाग के द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में की गई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया गया है।

कार्यक्रम क : मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह

प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त सामग्री

दृश्य सामग्री

चित्रकला छायाचित्र : जनजातीय कलाओं के 25 हाफ प्लेट दान किए गए साथ फोटोग्राफ प्राप्त किए गए। इन छायाचित्रों के प्रलेखन का कार्य पूरा हो चुका है।

मानवजाति वर्णनात्मक संग्रहों में वस्तुओं को अवस्थित करने और उनके प्रदर्शित करने के लिए कुछ पार्श्व स्थान दान किए गए कोलम के छायाचित्र अगस्त पहले चित्रकला में प्रदर्शित किए गए और पेंटिंग तथा फोटोग्राफी पर आधारित कार्यशालाओं में बच्चों ने भाग लिया।

अन्य अर्जित वस्तुएं

संगीत वाद्ययंत्र : केरल राज्य के दमन, नगारा, इकतारा, बांसुरी तथा एकतारा आदि श्रव्य दीर्घा में संग्रह के लिए प्राप्त किए गए।

अनुसंधान विधि श्रृंखलाएं

दृश्य : [illegible]

कार्यक्रम ख : बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा पतिविधियां

[illegible]

आदि दृश्य : शैल कला गीयां

[illegible]

प्रो. बी. एन. सरस्वती ने अगस्त-सितम्बर, 1992 में कैर्न्स (आस्ट्रेलिया) में शैल कला पर हुई 'इन्टरनेशनल' ऑग' कांग्रेस में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का प्रतिनिधित्व किया और उसमें *विश्वरचना: कैरीनॉजिकल कला* विषय पर एक शोधपत्र प्रस्तुत किया। इस कांग्रेस में भाग लेने के लिए डॉ. मठपाल को आर्थिक सहायता दी गई।

आदि श्रव्य : नाद दीर्घा

जैसा कि पूर्व वर्ष की रिपोर्ट में बताया गया था, आदि श्रव्य दीर्घा की व्यवहार्यता योजना को अंतिम रूप दिया जा रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त संकल्पनात्मक योजनाओं का सविस्तार अध्ययन किया जा रहा है ताकि दीर्घा के लिए एक व्यवहार्य योजना तैयार की जा सके। इस वर्ष, दिल्ली के साउंडस्केप पर डॉ. हिल्डेगार्ड वेस्टरकैंप द्वारा एक कार्यशाला संचालित की गई जो मैक्समूलर भवन द्वारा प्रायोजित की गई थी। जनपद सम्पदा प्रभाग के एक अधिकारी ने इसमें भाग लिया। कार्यशाला पर एक रिपोर्ट तैयार की गई। संगीत वाद्य यंत्र तथा नाद के ऑडियो प्राप्त करने के लिए एक योजना तैयार की गई है।

कार्यक्रम ग : जीवन शैली अध्ययन

लोक परम्परा

अब तक जनजातीय और लोक संस्कृति पर जो भी अनुसंधान अध्ययन हुआ है वह सब अधिकतर एक ही दिशा में और एकांगी ही हुआ है, चाहे वह मानवशास्त्रीय दृष्टि से किया गया हो अथवा समाज विज्ञान, अर्थशास्त्र, मनोवैज्ञानिक, इतिहास या कला इतिहास की दृष्टि से। इन विषयों ने जीवन अनुभव के कुछ अंगों या कुछ आयामों का ही ध्यान रखा है, जीवन अनुभव की समग्रता का नहीं। जनपद सम्पदा प्रभाग एक नया दृष्टिकोण एक नई पद्धति अपनाना चाहता है, और वर्तमान पद्धतियों की जांच करके जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक मॉडल तैयार करने का प्रयास कर रहा है। यह दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि जीवन एकल आयामों या इकाइयों में बंटा हुआ नहीं है और न ही कोई एक मॉडल किसी समुदाय के सांस्कृतिक जीवन की संपूर्ण झांकी प्रस्तुत कर सकता है। यह दृष्टिकोण संस्कृति को एक सीमांकित स्थान में एक बहुआयामी प्रक्रिया मानता है।

इन अध्ययनों का उद्देश्य प्राकृतिक परिवेश, दैनिक जनजीवन, धार्मिक संस्कार तथा जीवन चक्र, विश्व दृष्टिकोण, ब्रह्माण्ड विज्ञान, खेती तथा अन्य आर्थिक कार्य, सामाजिक संगठन, ज्ञान व कौशल, परंपरागत प्रौद्योगिकी और कला अभिव्यक्तियों के बीच कई प्रकार के संबंध खोजना है। ये अध्ययन स्वरूप में बहुविषयक हैं और कलाओं के क्षेत्र में कौशलों और तकनीकों के अन्योन्याश्रय, भिन्न भिन्न क्षेत्रों पर एक दूसरे के असर और जनजातीय समाजों तथा शहरी परंपराओं, मौखिक या लिखित के सांस्कृतिक प्रभाव को प्रकट करते हैं।

उपर्युक्त लक्ष्यों को सामने रखकर और बहुविषयक नीति अपनाते हुए कई प्रायोगिक परियोजनाएं प्रारंभ की गई हैं। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विद्वान देश की विभिन्न संस्थाओं के लिए गए बहुविषयक अध्ययन दलों के साथ सहयोग एवं समन्वय स्थापित कर रहे हैं। इन लोगों के साथ एक सार्थक संवाद स्थापित किया गया है जो जातीय वनस्पति विज्ञान, जातीय चिकित्सा, आयुर्विज्ञान, हिमालय तथा समुद्र विज्ञान के क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं।

उपर्युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, लोक परम्परा की प्रायोगिक परियोजनाओं के कार्यक्रम ने वर्ष 1992-93 के दौरान प्रगति की है, जिसका ब्यौरा नीचे दिया गया है।

1. मानव, पर्यावरण और कला

1. डॉ. एन. डी. सुभाषचन्द्रन ने 'उत्तर कन्नड़ के पवित्र उपवन तथा पवित्र वृक्ष' विषय पर अपना क्षेत्रकार्य पूरा कर लिया और उनकी रिपोर्ट प्राप्त हो गई है।

2. डॉ. माधव गाडगिल ने 'मानव पारिस्थितिकी तथा सांस्कृतिक धरोहर' विषय पर अपना कार्य पूरा कर लिया और उनकी रिपोर्ट प्राप्त हो गई।

3. डॉ. जैकब चैरियादास 'उत्तर कन्नड़ का वन्य इतिहास' विषय पर अध्ययन कर रहे हैं। उनकी रिपोर्ट सितम्बर, 1993 में प्राप्त होगी है।

4. प्रो. आर. एम. नेगी ने 'मनुष्य, पशु और प्रकृति के बीच बहुआयामी संबंध : भरण, पोषण तथा परिवर्तन अनुकूलन की मूल्य विषय के प्रयोगिक गवेषणा पर रिपोर्ट' संबंधी कार्य पूरा कर लिया और रिपोर्ट को अंतिम रूप दे दिया गया है।

5. डॉ. टी. आर. पुरोहित ने 'गढ़वाल का धार्मिक-लोक रंगमंच : पाण्डव लीला, खेलजागर और भाग्यजागर पर लोक रंगमंच का अध्ययन' संबंधी परियोजना का क्षेत्रकार्य पूरा कर लिया है और रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

6. डॉ. एम. एम. धन्यकुमार ने 'कर्नाटक की पंद्रहवीं शती में कर्मकाण्डीय नृत्य एवं सैनिक धर्मनिरपेक्ष दोनों कार्यक्रम' विषय पर क्षेत्रकार्य पूरा कर लिया है। रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

7. डॉ. डोमियास मिर्गियो द्वारा 'गोवा की बुद्ध कला का तथ्यात्मक अध्ययन' सम्पन्न हो गया। रिपोर्ट प्रकाशनाधीन है।

8. 'पंचमहाभूतों के विषय में विश्वकर्मा शिल्पी के विचार' विषय पर डॉ. आर. बोबर की रिपोर्ट की प्रतीक्षा है।

9. 'मुक्कुवर : तमिलनाडु का मछुआ समुदाय' पर डॉ. जॉ. ऑन मेन्नुअल की रिपोर्ट प्रकाशनाधीन है।

10. डॉ. मकरन्द जी ने 'लक्षद्वीप : द्वीपीय पारिस्थितिकी तथा सांस्कृतिक अवबोध' विषयक अध्ययन पूरा कर लिया। रिपोर्ट प्राप्त हो गई है।

11. 'राजस्थान के शुष्क अंचलों में वायु उगाने वाले समुदाय' विषयक परियोजना का कार्य श्री कोमल कोठारी को सौंपा गया था, उनकी अस्वस्थता के कारण रुका हुआ है। अब इस कार्य को आंशिक परियोजना के रूप में सम्पन्न किया जाने का कार्यक्रम चल रहा है।

12. 'प्रकृति की कल्पना' विषय पर डॉ. आर. के. मिश्र की प्रारंभिक रिपोर्ट प्राप्त हो चुकी है।

13. 'कलकत्ता के लोकगीत' विषय पर श्री पशुपति दत्ता ने क्षेत्रकार्य पूरा कर लिया है।

14. 'लोकसाहित्य के क्षेत्र में पारिस्थितिकीय और पर्यावरणीय अनुसंधान' का परियोजना पर कुछ मनुष्य मनोवृत्ति द्वारा आंशिक परियोजना के रूप में प्राप्त किया जा रहा है। इस संबंध में प्रारंभिक रिपोर्ट प्रस्तुत की जा चुकी थी। [illegible] अस्वस्थता के कारण परियोजना बीच में ही छोड़ दी गई और [illegible] समाप्त कर दी गई।

15. 'हिमाचल प्रदेश के नई सहस्राब्दी में [illegible] विकास' विषय पर आयोजित परिचर्चा तथा प्रस्तावों को औपचारिक रूप से स्वीकृत किया गया [illegible] द्वारा वर्ष 1993 में सम्बंधित क्षेत्र कार्य प्रारंभ किया जाएगा।

2. एकल समुदाय अध्ययन

संथाल:

1. 'संथाल संथमुर्मी तथा [illegible]' : मुर्मी [illegible] द्वारा [illegible] के रूप में किया जा रहा है। कोश तथा संथमुर्मी [illegible] प्रकाशन किया जा चुका है।

2. 'संथाल [illegible]' : [illegible] प्रस्तुत द्वारा यह अध्ययन किया गया। [illegible] प्रकाशन हो चुकी है। [illegible] किया जा चुका है।

गुज्जर :

[illegible] के [illegible] भाषा तथा संस्कृति के अध्ययन का कार्य प्रारंभ कर लिया। [illegible] प्रकाशन की तैयारी है।

लाहुल :

[illegible] द्वारा [illegible] किया गया तथा [illegible] प्रकाशन [illegible] है।

[illegible] :

[illegible] के [illegible] है।

3. नई परियोजना

[illegible] के [illegible] है।

क्षेत्र सम्पदा

[illegible]

[illegible] इसलिए क्षेत्र नामपट्ट प्रकाशन के [illegible] और इसकी एकाइयों के अध्ययन की ही कल्पना नहीं की गई बल्कि एक केन्द्र विशेष के [illegible] धार्मिक तथा सामाजिक पक्षों को परखने और पढ़ने की प्रक्रिया को भी कार्यक्रम में शामिल किया गया है। इसका लक्ष्य राष्ट्रीय कला केन्द्र ने ही ऐसे केन्द्रों को अध्ययन के लिए चुना है जिनके नाम हैं : ब्रज-नाथद्वारा और मुक्तेश्वर।

1. ब्रज-नाथद्वारा परियोजना

यह परियोजना वृंदावन के श्री चैतन्य प्रेम संस्थान की श्री [illegible] जी के नेतृत्व में कार्यान्वित की जा रही है। इसमें सात मॉड्यूल हैं : (1) बहुभाषी शब्दकोश, (2) [illegible] तथा अर्थ, (3) व्याकरण तथा तुलनात्मक पक्ष, (4) धार्मिक विश्लेषण साहित्य, (5) [illegible] के रूप में, (6) धार्मिक परम्पराओं का [illegible], (7) ब्रज में मंदिर संगीत का अर्थ [illegible] तथा तालें प्रणालियाँ।

इस परियोजना में से निम्नलिखित पक्ष में कुछ [illegible] किया गया है :-

शब्द कोश

इस परियोजना के अन्तर्गत, एक संगणकीय [illegible] का कार्य सन् 1989 में प्रारंभ किया गया था। प्रथम [illegible] के लगभग 3000 परिभाषाओं के संपादन [illegible] चुका है।

[illegible] 'भक्तिरसामृतसिन्धु' का कार्य प्रारंभ किया गया था। इसका मूल रूप बंगला लिपि में उपलब्ध गीत [illegible] हिन्दी तथा अंग्रेजी में अनुवाद कार्य [illegible] है। [illegible] 'भक्तिरसामृतसिन्धु' और [illegible] इनमें से [illegible] का हिन्दी अनुवाद [illegible] और अंग्रेजी अनुवाद का कार्य प्रारंभ किया जा चुका है। [illegible] और [illegible] का हिन्दी में [illegible] किया जा रहा है। 'भक्तिरसामृतसिन्धु' के अंग्रेजी अनुवाद का [illegible] किया जा चुका है।

[illegible]

[illegible] प्रेम संस्थान के [illegible] प्रकाशनार्थ तैयार किया जा रहा है। 2,045 पाठों के 1,503 [illegible] तथा 327 पाठों के [illegible] के 65 टेपों को कम्प्यूटर योग्य फॉर्मेट में [illegible] कार्य प्रारंभ किया गया है। [illegible] में गाए जाने वाले भजनों का समग्र कार्यक्रम इस [illegible] में सम्मिलित है। [illegible] कीर्तनों, [illegible] जाने वाले [illegible] कीर्तनों, त्यौहारों का कैलेंडर बनाने की [illegible] किया जाएगा।

[illegible] तथा तुलनात्मक पक्ष, धार्मिक विश्लेषण साहित्य

[illegible] के [illegible] है। संस्थान के [illegible] के [illegible] जी ने [illegible] दिल्ली के [illegible] विद्यालय की [illegible] के नेतृत्व में [illegible] किया था। इस परियोजना का नई, 1992 में [illegible] 'चैतन्य चरितामृत' पदावली में [illegible] 'चैतन्य चरितामृत' तथा 'कृष्ण किशोर' नामक दो [illegible] की [illegible] कम्प्यूटर योग्य फॉर्मेट में [illegible] किया जा चुका है।

ब्रजमंडल के [illegible] प्रमुख मन्दिरों के मंदिरों का [illegible]

ब्रजमंडल के स्थानीय [illegible] संस्थान [illegible] के डॉ. [illegible] नाथ द्वारा तैयार किया जा रहा है। इस परियोजना पर [illegible] कार्य पूरा किया जा चुका है। [illegible] भी प्राप्त हो चुकी है। [illegible] कार्य चल रहा होगा है।

गोविन्द देव मंदिर पर संगोष्ठी

गोविन्द देव मंदिर को चतुःशती मनाने के लिए अप्रैल, 1992 में इसी मंदिर के निकट में वृन्दावन में एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए शोधपत्रों को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। इन शोधपत्रों के सम्पादन का कार्य अंतिम अवस्थाओं में है।

मंदिर : एक जीवंत आस्तित्व के रूप में

'मांडो कला' के प्रलेखन का कार्य श्री अमीर कृष्ण दास द्वारा पूरा किया जा चुका है। इस प्रलेख में ब्रजमंडल के मंदिर मंडपों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। 'मांडो' तैयार करने की विधि और 'कथा कृष्ण' विषय को लेकर की गई मंच प्रकाश की डिजाइनों का व्यौरेवार प्रलेखन किया गया है। इस पुस्तक का आलेख और इसके व्यवस्थीकरण के लिए प्रस्तुत किए जाने वाले चित्र छायाचित्र प्राप्त हो चुके हैं। इस समय इस पुस्तक का सम्पादन चल रहा है और यह अगले वर्ष तक प्रकाशित कर दी जाएगी।

मौखिक परम्परा

ब्रज के मंदिरों के कर्मकांडों अनुष्ठानों के विषय में मौखिक परम्परा, जिसे 'ब्रज पुराण' कहा गया है, के प्रलेखन का कार्य प्रारंभ हो गया है। चुनरावन के 35 मंदिरों के पुजारियों तथा अन्य संबंद्ध व्यक्तियों के साक्षात्कार लेने से संबंधित क्षेत्रकार्य पूरा हो चुका है। संकलित डेटा के विश्लेषण का कार्य प्रारंभ हो गया है।

2. बृहदीश्वर परियोजना

ग्यारहवीं शताब्दी के तंजौर मंदिर का लम्बे समय तक चलने वाला यह अध्ययन कार्य 1989 में प्रारंभ किया गया था।

इस परियोजना के समन्वयकर्ता डॉ. आर. नागस्वामी हैं और इसमें निम्नलिखित कार्यक्रम शामिल हैं : (1) पीण स्तोत्रों में बहुभाषी ग्रंथसूची, (2) पुराणेतिहासों तथा शिलालेखों संबंधी सामग्री, (3) पुरातत्वीय रेखाचित्रों तथा छायाचित्रों का प्रलेखन, (4) मंदिर की मूर्तियों, प्रस्तर कलाकृतियों, कांस्य प्रतिमाओं, भित्तिचित्रों का अध्ययन, (5) अनानों और कर्मकांडों की जीवंत परम्पराओं के संदर्भ में कानू तथा शिल्प पक्षों का अध्ययन (जिसमें जीवंत अस्तित्व का सांस्कृतिक रूप सम्मिलित है), (6) भौतिक एवं मानसिक, अतिभौतिक स्तर से संबंधित अध्ययन, अर्थात् पंच तथा पर्वों की विभिन्न अवस्थाओं का प्रलेखन, (7) संगीत तथा नृत्य की परंपरा का संपूर्ण सर्वेक्षण, और (8) 18वीं तथा 19वीं शताब्दियों के दौरान तंजावुर तथा बृहदीश्वर मंदिर का सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पारिस्थितिक इतिहास।

इन मॉड्यूलों में से निम्नलिखित छः का काम शुरू हो चुका है और इनकी प्रगति का ब्यौरा इस प्रकार है :

पीण स्तोत्रों से बहुभाषी ग्रंथ सूची

प्राथमिक तथा पीण दोनों प्रकार के स्तोत्रों की बहुभाषी ग्रंथसूची तैयार की जा रही है। लगभग 1000 संदर्भों का एक कोशसंबंधी ग्रंथसूची सहारा में तैयार की जा चुकी है। इसे संशोधन करने के लिए अंतिम रूप दिया जाएगा।

पुराणेतिहासों तथा शिलालेखों संबंधी सामग्री

मंदिर के भीतर शामिल ग्रंथ देवकानी लिपियों में उत्कीर्ण पुराणेतिहासों की सामग्री का अध्ययन मैसूर में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के डॉ. के. एम. रमेश के मार्गदर्शन में किया जा रहा है। संभिल मूर्तियों के लिप्यंतरण का काम लगभग पूरा हो गया है।

स्थापत्यकलात्मक रेखाचित्रों तथा छायाचित्रों का प्रलेखन

बृहदीश्वर मंदिर के स्थापत्यकलात्मक रेखाचित्रों का कार्य ई. एफ. ई. ओ. पांडीचेरी के प्रो. पिशर और वास्तुकलाविद् श्री अनूप दवे द्वारा सम्पन्न किया जा चुका है। ये चित्र 'पत्थरों में संवाद' शीर्षक प्रदर्शनी में रखे गए थे। इन रेखाचित्रों के विश्लेषण को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना बनाई गई है। प्रस्तावित पुस्तक का फ्रेंच संस्करण तैयार हो चुका है और इसके अंग्रेजी अनुवाद के भी शीघ्र तैयार हो जाने की आशा है। मूर्तियों, प्रस्तर कलाकृतियों के छायांकन का कार्य भी पूरा हो चुका है। प्रत्येक विज्ञान पर आलेख तैयार किया जा रहा है।

भित्तिचित्र

बृहदीश्वर मंदिर के गर्भगृह के भीतर के भित्तिचित्रों के छायांकन (फोटोग्राफी) का कार्य पूरा हो गया है। सभी भीतरी दीवारों तथा परिक्रमा की चौरेवार फोटोग्राफी की गई है। इसके फलस्वरूप 900 से भी अधिक स्लाइडें तैयार हुई हैं। इन स्लाइडों में से 482 चित्र चोल काल के हैं और 308 नायक काल के। भीतरी छत के किनारे, किनारे जो करण तथा मत्स्यकारी (स्टको) का रूप किया हुआ है, इसके भी फोटो लिए गए हैं। इन सभी स्लाइडों के प्रलेखन का कार्य किया जा रहा है।

मंदिर : एक जीवंत अस्तित्व के रूप में

(दिवं.) श्री के. पट्टाभिराम की फिल्मों का जो संग्रह प्राप्त किया गया था उसकी एक दूसरी प्रति भी तैयार कर ली गई है। 'कुंभाभिषेकम्' शीर्षक फिल्म का चयन किया जा रहा है। बृहदीश्वर मंदिर के विषय में अगले वर्ष मद्रास में होने वाली संगोष्ठी के अवसर पर इस फिल्म को दिखाया जाएगा।

संगीत एवं नृत्य की परम्परा का प्रलेखन

(दिवं.) श्री अनन्तराम पारवनार का हस्तिकथा संग्रह प्राप्त किया गया। श्रीमती तिरुकन का संग्रह भी प्राप्त किया गया जिसमें पारंपरिक संगीतज्ञों तथा नर्तकों द्वारा गाए गए पुराने गीतों की ऑडियो रेकार्डिंग है।

कार्यक्रम घ : बाल जगत

इस कार्यक्रम का उद्देश्य पुत्तलिका-कला, पहेलियों तथा खेलों जैसे विभिन्न कार्यकलापों के माध्यम से बच्चों को जन जातीय तथा ग्रामीण कला की समृद्ध धरोहर से परिचित कराना है जो इस समय स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल नहीं है।

पुत्तलिका-कला

साहित्य की खोज और ग्रंथ सूची

साहित्य की खोज को अद्यतन बनाने का कार्य चालू रहा। ग्रंथ सूची में 100 नए शीर्षक जोड़े गए। इस प्रकार दूसरे खंड के लिए इस वर्ष के अन्तर्गत कुल प्रविष्टियों की संख्या बढ़कर 2000 हो गई।

थिएटर संबंधी कार्यशाला

'भारतीय पुत्तलिकला में समसामयिक प्रवृत्तियाँ' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें थाई, इंडोनेशिया के दो पुत्तलिकलाकारों के साथ साथ अनेक पारंपरिक भारतीय पुत्तलिकलाकारों ने भाग लिया। दोनों एक दूसरे की पुत्तलिकला की तकनीकें सीखकर लाभान्वित हुए। भारतीय पुत्तलिकलाकारों ने महसूस किया कि उन्हें पुत्तलि संचालन

[illegible]

[illegible] के [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible]

3. [illegible] द्वारा [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]

भाषांकित व्याख्यान

[illegible] ने विभिन्न क्षेत्रों के विख्यात विद्वानों के निम्नलिखित व्याख्यानों का आयोजन किया:

1. 'मुहल्ले में बच्चे तथा महिला' विषय पर डॉ. [illegible] [illegible], [illegible] की [illegible];
2. 'मनुष्यों के मध्य मानव [illegible]' [illegible] के [illegible] [illegible] के साथ [illegible] [illegible] पर [illegible] [illegible] की [illegible];
3. [illegible] [illegible] पर [illegible], [illegible] [illegible] के व्याख्यान—
   (1) 'हमारे लिए [illegible] विज्ञान क्यों आवश्यक है';
   (2) 'मनुष्य [illegible] व्यवहार को [illegible]';
   (3) 'मधुमेह [illegible] क्या है [illegible] महामारी विज्ञान'।

घटनाएं

1. [illegible] से [illegible] [illegible] [illegible]

आवश्यकता है। इसी प्रक्रिया में, विभिन्न स्रोतों से बहुमूल्य सामग्री प्राप्त हो जाती है। यह सामग्री कला दर्शन प्रभाग का महत्वपूर्ण संग्रह है, जो संग्रहणीय महत्व का होने के साथ-साथ अनुसंधान की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। अन्य सांस्कृतिक संगठनों से भी इस आशय के निवेदन प्राप्त हुए हैं कि उनकी प्रदर्शनियों तथा प्रस्तुतियों में शामिल करने के लिए इसमें से कुछ सामग्री उपलब्ध कराई जाए।

कार्यक्रम ख : संगोष्ठियां और प्रदर्शनियां

कला दर्शन प्रभाग हर दूसरे वर्ष अन्तर्वैषयक कार्यक्रम आयोजित करता है जिसके द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों तथा बहु-माध्यमिक प्रदर्शनियों के माध्यम से एक समीकृत विषय पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। अब तक चार ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं: 'खम्' (आकाश) 1986 में, 'आकार' (रूप) 1988 में, 'काल' (समय) 1990 में और 'पंचमहाभूत' 1992 में।

पंचमहाभूत कार्यक्रम के अन्तर्गत, पांच प्रारंभिक संगोष्ठियां की गई जिनकी परिणति 'प्रकृति तथा मानव: एक समकालीन दृष्टि' शीर्षक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में हुई, जिसमें भारत तथा विदेशों से विद्वानों ने भाग लिया। इसके साथ ही 'प्रकृति : मनुष्य का पंचमहाभूतों के साथ सामंजस्य', विषय पर एक प्रदर्शनी हुई : यह प्रदर्शनी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र परिसर के खुले वातावरण में प्रकृति के सौन्दर्य में आयोजित की गई। अपनी विषय वस्तु तथा डिजाइन दोनों ही दृष्टियों से इस प्रदर्शनी को एक अद्वितीय प्रस्तुति के रूप में प्रशंसा मिली। इस प्रदर्शनी के पर्यावरण संरक्षण तथा पारिस्थितिक संतुलन के दोहरे संदेश की ओर भी दर्शकों का ध्यान आकर्षित हुआ : कुछ विचार टिप्पणियां नीचे प्रस्तुत की जा रही हैं:-

''साधारण किन्तु दृश्य प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से विस्फोटकता हमें अन्य उद्भवों तक ले जाती है और हम सोचने को बाध्य हो जाते हैं : यह सब कैसे''।

लीला चन्द्र

''सृष्टि की जटिलताएं अर्थ सहित सुसंगत रूप में स्पष्ट नहीं की जा सकती। यह प्रदर्शनी इस दिशा में एक साहसिक एवं कल्पनाशील प्रयास है। अत्यन्त प्रभावोत्पादक''।

अर्जुन सिंह

''अपने मूल को जानने पहचानने के लिए एक अत्यन्त लाभप्रद अनुभव''।

सी. जी. सोमैया

''एक और विचारपूर्ण एवं तार्किक प्रदर्शनी जिसे मैंने अत्यन्त प्रेरणादायक एवं शान्तिप्रद भी पाया। इसमें पढ़ने तथा देखने को बहुत कुछ है और इस पर चिन्तन करने के लिए समय चाहिए''

गोवर्द्धन आयंगर

''सदा की तरह अत्यन्त प्रेरणाप्रद एवं शैक्षणिक अनुभव : हम आपसे सदा कुछ परिवर्तन ही सीखते हैं''।

एलिना एवं वी.देसाई

''एक उत्कृष्ट अनुभव''।

एम. सी. जोशी

''एक सुन्दर अनुभव''

[illegible]

''एक अद्भुत प्रतीति : खुले वातावरण में आयोजित यह प्रदर्शनी बहुत आनंददायक रही। यदि यही 'प्रकृति' है तो यह किसी संग्रहालय की चारदीवारी के भीतर कैद नहीं हो सकती। यह विचारोत्तेजक है और इसके सफल आयोजन में कितना अधिक प्रयास एवं अनुसंधान करना पड़ा होगा''।

एम. एन. देशपाण्डे

केन्द्र के संग्रहों की प्रदर्शनियां

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने सांस्कृतिक अभिलेखागार (कला निधि का एक उप-विभाग) के अन्तर्गत बहुमूल्य संग्रह प्राप्त किए हैं। कला दर्शन जनसाधारण को इनसे अवगत कराने के लिए समय-समय पर प्रदर्शनियां आयोजित करता है। वर्ष 1992-93 के दौरान ''छायांकन के माध्यम से'' शीर्षक के अन्तर्गत छायाचित्रों की अनेक प्रदर्शनियां आयोजित की गईं। इस श्रृंखला की पहली प्रदर्शनी फलाकोनी द्वारा लिए गए 'मवारी' जनजाति के छायाचित्रों की थी जो 7 से 13 सितम्बर, 1992 तक इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित की गई थी। इसी श्रृंखला की दूसरी प्रदर्शनी हैनरी कार्टियर ब्रेसन द्वारा लिए गए फोटोग्राफों की प्रदर्शनी थी जो राष्ट्रीय आधुनिक कला वीथि में 11 से 25 नवम्बर, 1992 तक आयोजित की गई थी। इनका उद्घाटन इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा कुछ चुने हुए दर्शकों की उपस्थिति में किया गया था।

'रूपकथा' शीर्षक प्रदर्शनी, बंबई के राष्ट्रीय प्रदर्शनीय कलाकेन्द्र के सहयोग से उनकी दीर्घाओं में 21 जनवरी से 30 जनवरी, 1993 तक आयोजित की गई। हैनरी कार्टियर ब्रेस्सन के छायाचित्रों की प्रदर्शनी भी बंबई में उक्त केन्द्र की दीर्घाओं में 1 जुलाई से 31 जुलाई, 1993 तक प्रस्तुत की जाएगी।

नई पीढ़ी तक पहुंचने के उद्देश्य से 'कोलाज' शीर्षक एक अन्य प्रदर्शनी सरदार पटेल विद्यालय में 21 से 30 जनवरी, 1993 तक लगाई गई जिसमें माधव स्वामि द्वारा संग्रहीत चित्र प्रदर्शित किए गए। इसी विद्यालय में दो कार्यशालाएं भी आयोजित की गईं जिनमें से एक फोटोग्राफी पर और दूसरी 'मोल्डी' शिल्प पर थी। इनमें बड़ी संख्या में छात्रों ने सक्रिय भाग लिया। सरकारी के कुछ अन्य स्कूलों ने भी अपने यहां ऐसी प्रदर्शनियां लगवाने में रुचि दिखलाई है।

कार्यक्रम ग : प्रलेखन तथा प्रकाशन

विभिन्न कार्यक्रमों, विशेष रूप से प्रदर्शनियों का विभिन्न विधा रूपों में प्रलेखन किया जाता है जैसे आलेख चार्ट आदि के रूप में कागज पर प्रलेखन, फोटो प्रलेखन तथा ऑडियो प्रलेखन।

कला दर्शन प्रभाग संग्रहालयों में प्रस्तुत किए जाने वाले शोधपत्रों पर आधारित पुस्तकें प्रकाशित करता है, अब तक प्रकाशित पांच हैं *फॉर्मेटिव आर्ट्स ऑफ मणिपुर, तमशेंग एण्ड मांडेन*। आकाश की संकल्पना: प्रतीक एवं अभिव्यक्ति। और आकार तथा कला विषयक पुस्तकों का सम्पादन हो रहा है। एक अन्य पुस्तक *कल्पोज्जवल एण्ड रेमार्केबल* प्रकाशित की जा चुकी है, यह पुस्तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र भवन संकुल का इतिहास तैयार करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित परामर्शगोष्ठी में पढ़े गए शोधपत्रों पर आधारित है।

कार्यक्रम घ : वार्ताएं एवं व्याख्यान

बौद्धिक संवाद के लिए मंच उपलब्ध कराने के उद्देश्य से, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र विभिन्न प्रकार के विषयों

[illegible] कार्यालय का [illegible] कार्यालय है। यह [illegible] मसौदा प्रमाण द्वारा [illegible] पुनर्विचार तथा पुनर्विचार करने [illegible] कार्यालयों की पदधारिणियों तथा कार्यालयों को अधिसूचित करता है। यह जनता विधि में संशोधन और स्वयं केन्द्र द्वारा सेवा की [illegible] विधियों विकसित विस्तृत है। संक्षेप में, यह अपने अकादमिक प्रयासों द्वारा [illegible] किए जा रहे शोध कार्यों से लोगों को व्यापक रूप से लाभान्वित करता है।

आलोच्य वर्ष के दौरान [illegible], [illegible] कार्यालयों, [illegible] अनुसंधान संस्थानों और कानूनविदों [illegible] पर्याप्त मात्रा के [illegible] प्रमाण से संबंधित [illegible] कार्यों के [illegible]। इसका संबंध [illegible] केन्द्र से चार [illegible] संस्थानों [illegible] संस्थान [illegible], [illegible] पदधारिणी, दो [illegible] अधिसूचित [illegible] और चार प्रकाशनों का [illegible] किया तथा [illegible] किया गया। इस संबंध तथा [illegible] का ब्यौरा भी अनुबंध 5, 6 तथा 7 में दिया गया है।

सूत्रधार

सूत्रधार प्रमाण [illegible] विधियों, [illegible] तथा [illegible] कार्यों की [illegible] तथा [illegible] विधान है। यहाँ प्रमाण [illegible] के [illegible] किया [illegible] कार्यालय [illegible] है जिसमें केन्द्र का [illegible] किसी [illegible] और [illegible] करने का [illegible] प्रतीत है?

क. कार्मिक

[illegible] 1993-94 में [illegible] सचिव [illegible] कार्य [illegible] और [illegible] तथा [illegible] हुआ। केन्द्र का [illegible] पदधारी [illegible] कर्मचारी में [illegible] से [illegible] है [illegible] तथा [illegible] रूप से [illegible] और उनकी बदली [illegible] कार्यालयों [illegible] पदधारिणियों [illegible] किया गया था।

[illegible] कार्यालय [illegible] के [illegible] कार्यालय [illegible] के लिए [illegible] पदधारिणी [illegible] 1993 की [illegible] अधिसूचना [illegible] नियम [illegible] के लिए [illegible] प्रमाण [illegible] कार्य [illegible] केन्द्र [illegible] के [illegible] अधिनियम, 1993 की [illegible] अपनी [illegible] में [illegible] के [illegible] में [illegible] अनुभाग तथा [illegible] अधिकारियों का भी [illegible] किया।

ख. आपूर्ति तथा सेवाएं

[illegible] कार्यालय [illegible] कि [illegible] कार्यालयों को [illegible] तथा [illegible] प्रदान की। [illegible] कार्यालय [illegible] तथा [illegible] संस्थानों, [illegible], [illegible] और पदधारिणियों का [illegible] में भी [illegible] सेवाओं के साथ [illegible] करता रहा। [illegible] कार्यालय [illegible] के [illegible] है।

ग. शाखा कार्यालय

[illegible] 1993 में [illegible] कार्यालय [illegible] शाखा कार्यालय [illegible] की [illegible] पदधारिणी [illegible] कार्यालयों [illegible] पदधारिणियों [illegible] किया [illegible] कार्य [illegible]।

[illegible] : [illegible] 1993 में स्थापित किया गया था और तब से यह [illegible] अध्यक्षता के अधीन कार्य कर रहा है। इस कार्यालय के [illegible] [illegible] ?

घ. वित्त एवं लेखे

31. [illegible] 1992 को समाप्त हुए वित्तीय वर्षों के लेखों की जाँच करने पर [illegible] के अनुसार [illegible] अनुमोदित और स्वीकृत किया गया।

महालेखाकार ने [illegible] की निम्नलिखित [illegible] टिप्पणियाँ प्रदान करने एवं प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की हैं :

(i) [illegible] 1992 [illegible] के मुद्दे को [illegible] अधिनियम की धारा 12 (2) [illegible] के अनुसार [illegible] 1992 [illegible] संख्या [illegible] 1993 [illegible] ।

(ii) [illegible] विवरण में अनुसंधान के लिए [illegible] अधिनियम के [illegible] विवरण-2 की [illegible] अधिनियम की धारा [illegible] के अनुसार [illegible] । आयकर अधिनियम के अनुसार इस [illegible] के कारण, वित्तीय [illegible] के [illegible] की एक वैज्ञानिक [illegible] अनुसंधान संस्था के रूप में [illegible] । इस मामले में [illegible] के आयकर से छूट [illegible] ?

(iii) केन्द्र को किसी [illegible] अधिनियम, [illegible] के [illegible] के [illegible] अधिनियम [illegible] 1992 [illegible] के लिए [illegible] में मुद्दा [illegible] ?

(iv) [illegible] केन्द्र की [illegible] अधिनियम [illegible] 1992 [illegible] ?

(v) [illegible] 1992 [illegible] ?

(vi) [illegible] अधिनियम [illegible] 1992 [illegible] ?

(vii) [illegible] अधिनियम [illegible] ?

ङ. आवास

[illegible]

गति प्रदान करने की दृष्टि से अनुकूल नहीं रही है। साथ ही केन्द्र का बहुत तेजी से विकास तथा विस्तार हो रहा है। केन्द्र का स्थायी भवन बनने में अब भी कुछ वर्ष लगेंगे, इसलिए मौजूदा स्थान में वृद्धि करने के लिए अस्थायी रूप से कुछ निर्माण कार्य करवाया गया ताकि कर्मचारियों तथा स्टूडियो आदि के लिए स्थान की व्यवस्था की जा सके। इस प्रकार अगले छः महीनों में कार्यालय के लिए लगभग 10,000 वर्ग फुट अतिरिक्त स्थान उपलब्ध हो सकेगा। आशा है कि इससे भिन्न-भिन्न स्थानों पर बिखरे हुए एककों को एक स्थान पर लाने में सहायता मिलेगी।

च. शोधवृत्ति योजना

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शोधवृत्ति योजना इस वर्ष भी चलती रही और वर्ष 1992-93 के दौरान शोध अध्येताओं की संख्या इस प्रकार रही:—

(i) मुख्यालय कार्यालय : 11

(ii) मद्रास माइक्रोफिल्म एकक : 03

इनके अतिरिक्त, केन्द्र के विभिन्न प्रभागों में 14 अन्य अध्येता काम पर लगाए गए।

छ. राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संबंध स्थापन

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संगठनों तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ काफी व्यापक रूप से संबंध स्थापित किए।

कला निधि

केन्द्र का कला निधि पुस्तकालय भारतीय लिपिज्ञ पुस्तकालय संस्थान के सदस्य के रूप में अन्तर्पुस्तकालय उधार और कम्प्यूटरबद्ध आदान-प्रदान की अनेक प्रणालियों में भाग ले रहा है। कला निधि पुस्तकालय का देश के अन्य पुस्तकालयों संस्थाओं के साथ, नियमित रूप से आदान-प्रदान चलता रहता है। इनमें से कुछ हैं: भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण पुस्तकालय, राष्ट्रीय संग्रहालय पुस्तकालय तथा भारतीय पुस्तकालय संघ, दिल्ली; भारतीय लिपिज्ञ पुस्तकालय संघ, कलकत्ता; राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता; एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता; राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर, मणिपुर विश्वविद्यालय पुस्तकालय इत्यादि इत्यादि। केन्द्र को अपने माइक्रोफिल्म बनाने के कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न संस्थाओं के साथ, सूचनाओं का आदान-प्रदान करने, अध्येताओं विद्वानों को सहायता देने और परस्पर शोध कार्य के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए एक सुव्यवस्थित एवं नियमित कार्यक्रम स्थापित करना पड़ा है:—

भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे;
एशियाटिक ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना
एशियाटिक ओरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, मद्रास;
खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना;
ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट एंड मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, त्रिवेन्द्रम;
रामपुर रजा लाइब्रेरी;
सरस्वती भवन लाइब्रेरी, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी;
श्री रणवीर संस्कृत शोध संस्थान, जम्मू

कला कोश

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का कला कोश प्रभाग देशभर के अनुसंधान संगठनों एवं भारतीय संस्थाओं में उपलब्ध विशेषज्ञता का उपयोग करता रहा है। भारत के विभिन्न भागों के विद्वान कलाकोश संबंधी कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं। वे अपने अपने विषय क्षेत्र की राष्ट्रीय संस्थाओं से संबद्ध हैं। इन विद्वानों के माध्यम से, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र इन संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों में अनेक विषयों के विभागों के साथ संपर्क रख रहा है। इनमें से कुछ हैं:

> रवीन्द्र भारती; यादवपुर विश्वविद्यालय; एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता; भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता; बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी; उच्चतर तिब्बती अध्ययन का केन्द्रीय संस्थान; कलकत्ता विश्वविद्यालय; गोरखनाथ का विश्वविद्यालय, इलाहाबाद; भारत विद्या संस्थान, अहमदाबाद; बंगाल का प्राकृत अध्ययन संस्थान, हरियाणा; मैसूर विश्वविद्यालय का तुलनात्मक साहित्य विभाग और लोक साहित्य विभाग; मध्यप्रदेश ईमिजिएट ऑफ म्यूजिकोलॉजी। संगीत शास्त्र का सम्प्रदाय संस्थान, पटना, केन्द्रीय अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा संस्थान, हैदराबाद; भारतीय अध्ययन का अमेरिकी संस्थान, नई दिल्ली; खुदाबख्श लाइब्रेरी, पटना; आलीन्द्र म्यूजियमेंटो।

जनपद सम्पदा

जनपद सम्पदा प्रभाग ने देश के भिन्न भिन्न भागों में अनेक क्षेत्रगत अध्ययन प्रारंभ किए हैं। ये क्षेत्रगत अध्ययन विश्वविद्यालय तथा अन्य स्थानीय अनुसंधान संगठनों के माध्यम से चलते हैं। परियोजना निदेशक नियुक्त किए जा चुके हैं। वे परियोजना निदेशक अपने अपने विश्वविद्यालय या संस्थान के अनुसंधान कार्यकर्ताओं की सेवाएं लेते हैं। जनपद सम्पदा प्रभाग का कार्य बहु-विषयक स्वरूप का है। प्रभाग ने मूलभूत विज्ञानों तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों की अग्रणी संस्थाओं के साथ संपर्क एवं संवाद स्थापित किया है। इन संस्थाओं में शामिल हैं :- खगोल-भौतिकी केन्द्र, पुणे; विज्ञान संस्थान, बंगलौर, राष्ट्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विकास संस्थान; भारतीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली। केन्द्र के अनुसंधान कार्यक्रमों में अनेक विश्वविद्यालयों के मानव विज्ञान विभाग भाग ले रहे हैं। इनमें से कुछ हैं; श्री-लंका विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश के विभाग, लोक साहित्य विभाग, मैसूर विश्वविद्यालय, मानव विज्ञान विभाग, नार्थ ईस्ट विश्वविद्यालय, शिलांग, और मानव विज्ञान विभाग, मणिपुर। इनके अलावा, मानव संग्रहालय, भोपाल; मानव जाति अध्ययन संस्थान, उड़ीसा, मानव विज्ञान विभाग, कलकत्ता के सहयोग से भी बड़े कार्यक्रम चल रहे हैं। जनजातीय अध्ययन संस्थानों जैसे, आदिम जाति सेवा संघ, अरुणाचल प्रदेश, बिहार, राजस्थान तथा मध्य प्रदेश के जनजातीय संस्थानों के साथ भी पारस्परिक आदान-प्रदान तथा संपर्क संबंध चल रहे हैं।

अपने क्षेत्र गतिविधि कार्यक्रम में, जनपद सम्पदा प्रभाग ने राज्यों के पुरातत्व तथा पुरालेख विभागों के साथ और आई. सी. एच. आर., आर. सी. एम. एस., आर. तथा आई. सी. पी. आर. राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ भी नियमित रूप से संपर्क संबंध बनाए रखा है। विशेष रूप से पुरातत्व कला तथा संगीत के क्षेत्र में अपने कला अध्ययन के कार्यक्रमों के लिए जनपद सम्पदा प्रभाग राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्थाओं के साथ संपर्क एवं सहयोग बनाए रखता है, जैसे संगीत नाटक अकादमी, प्रदर्शनकारी कला संस्थान, दीनदयाल और गांधी स्मृति तथा गांधीदर्शन, नई दिल्ली (गांधी जी पर पुस्तक कार्यक्रमों के लिए)।

कला दर्शन

इसके पश्चात कला दर्शन प्रभाग ने भी अपनी प्रदर्शनियों तथा अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं के साथ घनिष्ठ संबंध बना लिए हैं। अब तो राष्ट्रीय प्रदर्शनियां चलने लगे, बंबई के साथ नियमित रूप से आदान-प्रदान

का कार्यक्रम बना रहा है। नए कार्यक्रमों निदेशक श्री [illegible] तथा अकादमिक निदेशक ने एक दल के साथ एक [illegible] व्यापक सहयोग कार्यक्रम पर विचार विमर्श किया है।

ज. अन्तर्राष्ट्रीय संवाद

[illegible] सांस्कृतिक कला केन्द्र का मानना है कि सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम पाइकोलिन्स, पाइकोलिन्स, परिसंवाद, [illegible] आदि [illegible] के उद्देश्य को और अन्य कार्यक्रमों को पूरा करने के सहायक साधन हैं। 1997 में, इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत कोई 45 देशों के साथ सांस्कृतिक आदान प्रदान करने की व्यवस्था हुई। इन 45 में से 27 सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रमों की औपचारिक हैसियत। 1997 तक समाप्त हो गई, किन्तु ऐसे 18 सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम अभी चालू हैं।

यद्यपि इन 27 सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रमों की पुनर्रचना की आवश्यकता समाप्त हो गई है फिर भी इन देशों के साथ संपर्क तथा सहयोग एक सतत प्रक्रिया के रूप में चल रहा है। सोवियत संघ के विघटन के साथ हमने उजबेकिस्तान, [illegible], तुर्कमेनिस्तान और किर्गिज़ गणराज्य के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों में समर्थकारी खर्चों अनुच्छेदों की व्यवस्था कर दी है। भारत सरकार के [illegible] अन्य सोवियत गणराज्यों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रम नहीं चलाए हैं। इस बीच भारत सरकार उनके साथ सांस्कृतिक आदान प्रदान के समझौते करने का निर्णय लेगी, एवं समुचित अनुच्छेदों का प्रस्ताव करने पर विचार करेगी।

कोरिया का दूतावास कि [illegible] के लिए प्रस्तुत की गई है। [illegible] कला केन्द्र द्वारा इस अनुदान का उपयोग 1997 में [illegible] 30 जून, 1998 को समाप्त होने वाला दो वर्ष की अवधि में किया जाएगा। केन्द्र द्वारा इसका उपयोग अपने यहां [illegible] अनुसंधान सुविधाओं के विकास के लिए और विशेष रूप से विदेशों में अनुसंधान विद्वानों के रूप में [illegible] प्राप्त करने के लिए और प्रशिक्षण कार्यशालों तथा उपस्कारों को स्थापित करने के लिए किया जाएगा।

[illegible] कला केन्द्र ने एक [illegible] सांस्कृतिक [illegible] के [illegible] के लिए [illegible] सहायता की [illegible] सुविधा को [illegible] करने की एक योजना तैयार की थी। यह योजना [illegible] अनुसंधानकों के अनुसंधान के [illegible] सांस्कृतिक [illegible] के साथ [illegible] तथा [illegible] करने की [illegible] के लिए [illegible] विचार, जिस मंत्रालय के [illegible] के [illegible] के [illegible] के [illegible] के [illegible] विचार किया [illegible] के लिए [illegible] के [illegible] विचार किया जाता है कि [illegible]।

[illegible] के [illegible] के [illegible] के [illegible] के [

इटली के एकतोकी सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में एक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करने की परियोजना संबंधी प्रस्ताव तैयार करके दिसम्बर, 1992 में संस्कृति विभाग के पास भेजा गया था, इसलिए यह तो इससे पहले ही इस प्रस्ताव पर सिद्धान्त रूप में सहमत हो चुका था। इस परियोजना पर कुल मिलाकर 43.59 लाख रुपए खर्च होने का अनुमान है।

त्रिएस्ते के अन्तर्राष्ट्रीय कला समालोचक मंच ने डॉ. कपिला वात्स्यायन, सदस्य सचिव को "केन्द्र तथा परिषद" शीर्षक परिचर्चा में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया था। यह कार्यक्रम 31 मई, 1992 से 12 जून, 1992 तक चला। डॉ. वात्स्यायन ने इस अवसर का उपयोग त्रिएस्ते स्थित अनेक भारतविद्या विषयक संस्थाओं से बहुमूल्य संपर्क स्थापित करने में भी किया। उनके इस दौरे के फलस्वरूप, केन्द्र को अपने विषयक सामग्री का बहुमूल्य प्रदर्शन प्राप्त हुआ। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की ओर से डॉ. कपिला वात्स्यायन ने बालि, इंडोनेशिया में उसे 6 जुलाई, 1992 तक आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय समाधान सम्मेलन के लिए भारतीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया। वहां उन्होंने केन्द्र के कार्य के लिए बहुत से इंडोनेशियाई संस्थाओं से संपर्क स्थापित किए, इन संस्थाओं में अनेक पुस्तकालय एवं संग्रहालय तथा विद्वान लोग भी शामिल थे। डॉ. कपिला वात्स्यायन इस भारतीय प्रतिनिधि मंडल की सदस्य थी, जिसने 14 से 19 सितम्बर, 1992 तक जिनेवा में शिक्षा विषय पर आयोजित यूनेस्को के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के 43 वें सत्र में भाग लिया था। विदेश मंत्रालय की ओर से उन्होंने भारत जनेवा परामर्श समूह की बैठक में भी भाग लिया।

डॉ. कपिला वात्स्यायन को टोरोंटो (कनाडा) में वहां के कलाविदों ललित कला सम्मेलन तथा अन्तर्राष्ट्रीय नृत्यांकन में मुख्य अभिभाषण देने के लिए एक विख्यात कला इतिहासविद तथा कलामर्मज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया। भारत-अमेरिका उप-आयोग और फिल्म डेल्फिक संग्रहालय ने डॉ. कपिला वात्स्यायन को, भारतीय कला परिचयों के दीपक, महान कला इतिहासविद स्टेला क्रैमरिश के सम्मान में एक विशेष व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया।

संलग्न अनुबंध 1 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्यों की सूची, अनुबंध 2 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची; अनुबंध 3 में केन्द्र के अधिकारियों की सूची; अनुबंध 4 में अनुसंधान अध्येताओं और परामर्शदाताओं की सूची; अनुबंध 5 में वर्ष 1992-93 के दौरान हुई संगोष्ठियों कार्यशालाओं की सूची; अनुबंध 6 में वर्ष 1992-93 के दौरान हुई प्रदर्शनियों की सूची; अनुबंध 7 में 31 मार्च, 1993 तक केन्द्र के प्रकाशनों की सूची; अनुबंध 8 में केन्द्र में हुए ऑडियो तथा वीडियो प्रलेखन की सूची, अनुबंध 9 में अप्रैल, 1992 से 31 मार्च, 1993 तक हुई घटनाओं की तालिका; अनुबंध 10 में विभिन्न सम्मेलनों संगोष्ठियों कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए भेजे गए अधिकारियों का ब्यौरा; और अनुबंध 11 में सदस्य सचिव द्वारा भारत में तथा विदेशों में आयोजित संगोष्ठियों बैठकों में भाग लिए जाने का ब्यौरा दिया गया है।

भवन परियोजना

[illegible] केन्द्र को भवन परियोजना नई दिल्ली में मेहरौली विकास क्षेत्र में लगभग 25 एकड़ के भूखंड में कार्यान्वित की जा रही है। यह अपने ही किस्म की एक अनोखी परियोजना है जो विश्व के अत्यन्त आधुनिक कला केन्द्रों में से एक की संकल्पना को मूर्त रूप देने वाली है। इस केन्द्र की आवश्यकताएं भी अपने अलग ही किस्म की हैं, जहां अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का परिपालन भारतीय कलाओं तथा शिल्पों के साथ सम्मिश्रण होगा और साथ ही स्वतंत्र भारत का आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करते हुए, इसका निर्माण का संपूर्ण चिन्तन के पर्यावरण के साथ सामंजस्य सुनिश्चित किया जायेगा।

एक अन्तर्राष्ट्रीय डिजाइन प्रतियोगिता के माध्यम से वास्तुविद् के चुनाव के बाद, दिसम्बर, 1988 में [illegible] राज्य अभियंता के पैनल वाले को वास्तुविद् नियुक्त किया गया। वास्तुविद् ने परियोजना की एक संकल्पनात्मक योजना का मसौदा तैयार की और [illegible] की कीमतों पर इस भवन पर 152 करोड़ रुपए, 137.34 करोड़ रुपए, [illegible] प्रतिशत आकस्मिक व्यय की लागत आने का अनुमान लगाया। वर्ष 1991-92 की कीमतों पर इस परियोजना के लिए स्थापन का अनुमान लगभग 213 करोड़ रुपया है।

निर्माण कार्य के बहुत से पारंपरिक कार्यकलाप जैसे निर्माण स्थल की सफाई, निर्माण स्थल तक पहुंच की सुविधा को दृष्टि में रखते हुए वर्तमान समय के मानदंडों को भी तथापि, भवन परियोजना के निर्माण के लिए स्थानीय निकायों का अनुमोदन तथा निर्माण पूर्वक प्राधिकरण [illegible] की निर्माण आदि सभी कार्य पूरा किया जा चुके हैं। निर्माण स्थल पर विभाग संबंधी कार्य जैसे निर्माण सामग्री को रखने के लिए अस्थायी रूप से भंडार घर की व्यवस्था, निर्माण हेतु आवश्यक पानी प्राप्त करने के लिए नलकूप निर्माण आदि का कार्य पूरा हो चुका है।

निर्माण [illegible] तथा [illegible] के साथ की लगातार विचार विमर्श करने के बाद परियोजना के अलग अलग संघटकों का विस्तृत प्रारूपण [illegible] है। अंतिम रूपांकन किए गए तथा वास्तुविद् के साथ उन पर चर्चा की गई। इस संबंध में वास्तुविदों को सहायता प्रदान करते हुए, वास्तुविद् ने डिजाइन सेवाएं और उनके अधीनस्थ परामर्शदाताओं की सेवाएं अनुमोदन के लिए प्रस्तुत किया। परियोजना की संवेदनशीलता तथा इसके स्थान पर विचार करते हुए, स्थानीय परामर्शदाताओं के कार्यालयों ने बहुत सावधानी से परियोजना तथा इसकी डिजाइन की सभी प्रस्तावों की और बहुमंजिला [illegible] तथा संरचनाओं के [illegible] तथा [illegible] अनुमोदन की गई। वास्तुविदों के साथ [illegible] [illegible] परामर्शदाता [illegible] कार्य संचालन संबंधी योजना तथा [illegible] होने से परियोजना का कार्यान्वयन की प्रक्रिया [illegible] इस संशोधित प्रारूपण में [illegible], नवीकरण संयुक्त राज्य अमेरिका के [illegible] डिजाइन का कार्यान्वयन [illegible] परिष्कृत संकल्पना [illegible] [illegible] वास्तुविद् [illegible] और नई दिल्ली के वास्तुविद् श्री [illegible] [illegible] के साथ परियोजना निष्पादन के व्यापक कलात्मक परिवेशन का कार्यभार सौंपा गया। [illegible] के लिए [illegible] किये जा चुके हैं और प्राप्त भी हो चुके हैं और आशा की जाती है कि [illegible] कार्य [illegible] के प्रारंभिक महीनों में शुरू हो जायेगा।

अनुबन्ध 1

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य

1. श्रीमती सोनिया गांधी — न्यास अध्यक्ष
   10, [illegible]
   नई दिल्ली [illegible]

2. श्री [illegible]
   [illegible]
   [illegible]

3. श्री [illegible]
   [illegible]
   [illegible]

4. [illegible]
   [illegible]
   [illegible]
   [illegible]

5. श्री [illegible]
   [illegible]
   [illegible]
   [illegible]

6. [illegible]
   [illegible]
   [illegible]
   [illegible]

7. श्री [illegible]
   [illegible]
   [illegible]

8. [illegible]
   [illegible]
   [illegible]

9. श्री [illegible]
   [illegible]
   [illegible]

10. श्री रामनिवास मिर्धा
अध्यक्ष, ललित कला अकादमी,
रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली

11. प्रो. यशपाल
अध्यक्ष, शिक्षा संसद के लिए अंतर्विश्वविद्यालय केंद्रों का संघ
नाभिकीय विज्ञान केन्द्र,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय परिसर, नई दिल्ली

12. प्रो. जी. राम रेड्डी
अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली
(पदेन)

13. प्रो. नसीरुद्दीन अहमद
उप कुलपति, जामिया मिलिया इस्लामिया,
जामिया नगर, नई दिल्ली
(पदेन)

14. श्री के. नटवर सिंह
डी 1137, वसंत विहार
नई दिल्ली-110 057

15. श्रीमती पुपुल जयकर
हिम्मत निवास, भूमि तल,
31, डेगमो रोड, मालाबार हिल्स,
बंबई 400 006

*16. प्रो. डी. एस. कोठारी
बी 247, ग्रेटर कैलाश भाग-1,
नई दिल्ली 110 048

17. श्री एच. वाई. शारदा प्रसाद
19, पैट्रो अपार्टमेंट्स,
ए. 3, पश्चिम विहार
नई दिल्ली 110 063

---

* प्रो. डी. एस. कोठारी 4 फरवरी, 1993 को दिवंगत हो गए और न्यास उनके बहुमूल्य सहयोग-साहचर्य से वंचित हो गया।

18. श्री सत्यम जी. पित्रोदा
प्रौद्योगिकी मिशन के संबंध में प्रधान मंत्री के सलाहकार
दूर-संचार विभाग,
संचार भवन, नई दिल्ली-110 001

19. श्री अशोक वाजपेयी
संयुक्त सचिव, संस्कृति विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय,
शास्त्री भवन, नई दिल्ली 110 001

20. श्री जे. स्वामिनाथन
सी-53, नई दिल्ली साउथ एक्सटेंशन भाग 1,
नई दिल्ली-110 049

21. डॉ. कपिला वात्स्यायन — सदस्य-सचिव
डी. 1.23 सत्य मार्ग,
नई दिल्ली 110021

अनुबन्ध 2

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्य

1.	श्री [illegible] न्यास सदस्य	अध्यक्ष
2.	[illegible] न्यास सदस्य	सदस्य (पदेन)
3.	श्री [illegible]	सदस्य
4.	श्री [illegible] न्यास सदस्य	सदस्य
5.	श्री [illegible] न्यास सदस्य	सदस्य
6.	[illegible]	सदस्य
7.	[illegible] न्यास सदस्य	सदस्य-सचिव

अनुबंध 3

अधिकारियों की सूची

डॉ. कपिला वात्स्यायन,
सदस्य सचिव

कला निधि प्रभाग

(क)

1.	[illegible]	[illegible]
2.	[illegible]	[illegible]
3.	[illegible]	[illegible]
4.	[illegible]	[illegible]
5.	[illegible]	[illegible]
6.	[illegible]	[illegible]
7.	[illegible]	[illegible]
8.	[illegible]	[illegible]

(ख)

9.	[illegible]	[illegible]

(ग)

10.	[illegible]	[illegible]

कला कोश प्रभाग

मुख्यालय

1.	[illegible]	[illegible]
2.	[illegible]	[illegible]
3.	[illegible]	[illegible]
4.	[illegible]	[illegible]
5.	[illegible]	[illegible]
6.	[illegible]	[illegible]
7.	[illegible]	[illegible]
8.	[illegible]	[illegible]

वाराणसी कार्यालय

9.	[illegible]	[illegible]
10.	[illegible]	[illegible]

11. डॉ. उर्मिला शर्मा — अनुसंधान अधिकारी
12. डॉ. सुकुमार चट्टोपाध्याय — अनुसंधान अधिकारी

इम्फाल कार्यालय

13. श्री अरिबाम श्याम शर्मा — अवैतनिक समन्वयकर्ता

जनपद सम्पदा प्रभाग

1. पं. वैद्यनाथ मिश्र — अनुसंधान प्रोफेसर
2. कु. कृष्णा दत्त — समन्वयकर्ता
3. डॉ. कनक मोल्ल — अनुसंधान अधिकारी
4. श्रीमती शोभना राधाकृष्णन हुन — अनुसंधान अधिकारी
5. डॉ. सोनी कौशल

कला दर्शन प्रभाग

1. श्री बसंत कुमार — संयुक्त सचिव
2. श्री ज्ञानेन्द्र कृष्ण सरकार — कार्यक्रम निदेशक

सूत्रधार प्रभाग

1. श्री मन्मथनाथ जोशी — अपर सचिव
2. श्री एम. एल. लकड़ा — उप-सचिव
3. श्री बी. एम. बुद्ध — उप सचिव
4. श्री सिंह राज जयराथ — मुख्य लेखा अधिकारी
5. श्री डी. राजगोपालन — वरिष्ठ लेखा अधिकारी
6. श्री ओम प्रकाश गोयल — वरिष्ठ लेखा अधिकारी
7. श्री पी. पी. माथिकन — प्रधान निजी सचिव
8. श्री आर. सी. मतीजा — निजी सचिव
9. श्री डी. डी. डोगरा — निजी सचिव
10. श्री एन. के. बर्मन — अपर सचिव

अनुबन्ध 4

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं / कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं और परामर्शदाताओं की सूची

शोध अध्येता

1. कला निधि

संदर्भ पुस्तकालय

1. डॉ. जयश्री, वरिष्ठ अध्येता
2. श्री जे. मोहन, कनिष्ठ अध्येता

सांस्कृतिक संग्रहालय

3. कु. नवोना लापा, कनिष्ठ अध्येता

नीजी- भारतीय अध्ययन कक्ष

4. कु. भाग्यलक्ष्मी, कनिष्ठ अध्येता
5. कु. गंधा बनर्जी, कनिष्ठ अध्येता

2. कला कोश

6. श्री अरुण वासुदेव नन्दा, कनिष्ठ अध्येता
7. श्रीमती अंजु उपाध्याय, कनिष्ठ अध्येता
8. श्री विजय शंकर शुक्ल, कनिष्ठ अध्येता

3. जनपद सम्पदा

9. कु. विभा जोशी, कनिष्ठ अध्येता
10. कु. मधुका पिनाकुणान, कनिष्ठ अध्येता

4. क्षेत्र कार्यालय इम्फाल

11. श्री खुमजुम रतनकुमार सिंह, कनिष्ठ अध्येता

परामर्शदाता

1. [illegible]
   [illegible]
   [illegible]

2. [illegible]
   [illegible]
   [illegible]

3. [illegible]
   [illegible]
   [illegible]

4. [illegible]
   [illegible]
   [illegible]

5. [illegible]
   [illegible]
   [illegible]

अनुबन्ध 5

वर्ष 1992-93 के दौरान हुई संगोष्ठियां/कार्यशालाएं

क्रम सं.	संगोष्ठी/कार्यशाला का शीर्षक	अवधि	प्रभाग का नाम
1 क.	"[illegible]" विषय पर संगोष्ठी, नई दिल्ली में हुई	[illegible] 10 से 13, 1992	[illegible]
1 ख.	"[illegible]" पर संगोष्ठी, पुणे में हुई	मार्च 2 से 4, 1992	[illegible]
1 ग.	"[illegible]" पर संगोष्ठी, नई दिल्ली में हुई	मार्च 12 से 14,	[illegible]
1.	"[illegible]" विषय पर संगोष्ठी, पुणे में हुई	[illegible] 24 से 27, 1992	[illegible]
2.	"[illegible]" पर एक "[illegible]" कार्यशाला नई दिल्ली में हुई	[illegible] 5, 1992	[illegible]
3.	"[illegible]" विषय पर संगोष्ठी, नई दिल्ली में हुई	[illegible] 9 से 12, 1993	[illegible]
4.	"[illegible]" विषय पर संगोष्ठी, नई दिल्ली में हुई	[illegible] 25 से 28, 1993	[illegible]

[illegible]

अनुबन्ध 6

वर्ष 1992-93 के दौरान हुई प्रदर्शनियां

क्रम सं.	शीर्षक	अवधि	प्रभाग का नाम
1.	''पत्थरों में संवाद''-बृहदीश्वर और गोविन्द देव मंदिरों में स्थापत्य कलात्मक चित्रकारियों की प्रदर्शनी, नई दिल्ली में हुई	8 मई से 7 जून, 1992	जनपद सम्पदा
2.	''छायाकार के माध्यम से'' - मथुरी जनजाति के छायाचित्रों की प्रदर्शनी, एन. जी. एम. ए., नई दिल्ली में हुई	सितम्बर 7 से 13, 1993	कला दर्शन
	एन. सी. पी. ए., बंबई में हुई	जनवरी 23 से 31, 1993	कला दर्शन
3.	''छायाकार के माध्यम से''-हेनरी कार्टियर ब्रेस्सन द्वारा लिए गए छायाचित्रों की प्रदर्शनी, नई दिल्ली में हुई।	नवम्बर 11 से 25, 1992	कला दर्शन

अनुबन्ध 7

मार्च, 1993 तक के प्रकाशनों की सूची

क. कलातत्त्वकोश ग्रन्थमाला

1. *कलातत्त्वकोश* : भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का कोश, खण्ड-1

यह एक आदर्श (मॉडल) खण्ड है जिसमें भारतीय कलाओं की आठ आधारभूत संकल्पनाओं अर्थात् *ब्रह्मन्, पुरुष, आत्मन्, शरीर, प्राण, बीज, लक्षण,* और *शिल्प* का विवेचन किया गया है। ये परिभाषिक शब्द बहुत व्यापक अर्थ लिए हुए हैं। इन शब्दों ने कलाओं के सिद्धान्त तथा व्यवहार दोनों पक्षों को प्रभावित किया है। सुयोग्य विद्वानों तथा विशेषज्ञों द्वारा समालोचनात्मक पद्धति पर किए गए इन संकल्पनाओं के विवेचन में उनके प्रयोग तथा उद्धरणों के माध्यम से उनके बहुस्तरीय अर्थों को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है।

प्रधान सम्पादक : डॉ. कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : डॉ. वेदिना चॉमर
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू. ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007.
1988 : पृष्ठ : xxxviii + 189 मूल्य : 200 रुपए

2. *कलातत्त्वकोश* : भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का कोश, खण्ड-2

इस खण्ड में "दिक्" और "काल" विषयक बीजभूत पारिभाषिक शब्दों का विवेचन शामिल है। इन पारिभाषिक शब्दों का तत्त्वमीमांसा से लेकर विज्ञान तथा कलाओं तक के विभिन्न क्षेत्रों में संबंधित प्राथमिक ग्रंथों की व्यापक छानबीन के द्वारा विवेचन किया गया है। इन शब्दों पर लिखे गए निबंधों को पढ़कर पाठक विभिन्न संदर्भों में इन संकल्पनाओं के बहु स्तरीय अर्थ समझ सकता है। इस खण्ड में सम्मिलित किए गए शब्द हैं : *बिन्दु, नाभि, चक्र, क्षेत्र, लोक, देश, काल, क्षण, क्रम, संधि, मुहूर्त, ताल, मान, नग, शून्य, पूर्ण।*

प्रधान सम्पादक : डॉ. कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : डॉ. वेदिना चॉमर
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली 110007
1992 : पृष्ठ : xxxiii + 478, मूल्य : 450 रुपए

ख. कलामूलशास्त्र ग्रन्थमाला

3. *मात्रालक्षणम्* (क. मू. शा. ग्रन्थमाला सं. 1)

यह ग्रन्थ [illegible] कृति की पूर्ण रूप में उपलब्ध दो पाण्डुलिपियों पर आधारित है। इसे साथ में [illegible] अनुवाद तथा विस्तृत टिप्पणियाँ भी दी गई हैं। यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योंकि संगीतज्ञ, विशेष रूपसे वीणा के विद्यार्थी तथा मात्रा का संकल्पना पर विचार किया गया है साथ ही वीणा के लिखित रूप पर [illegible] तथा [illegible] करने तथा उनका अन्यान्य पाठ करने की शैली को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का यह प्रथम प्रयास है।

यह ग्रंथ संगीतज्ञों, संगीतशास्त्रियों, सामवेद के पाठकों, यहाँ तक कि इस शोधकार्य के लिए की अन्वेषण रूप से पाठकों के लिए भी अत्यन्त उपयोगी है। इसे वैदिक संगीत के स्वरों तथा उनका भारत के शास्त्रीय और लोक संगीत पर प्रभाव विषय पर शोधकार्य में अत्यंत लाभदायक है।

प्रधान सम्पादक : डॉ. कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : डॉ. वेन्ना शर्मा
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.
41 यू.ए., बंगला रोड,
दरियागंज, दिल्ली - 110 007
1988 : पृष्ठ : xxi + 95 मूल्य : 150 रुपए

4. *दर्पणम्* (क. मू. शा. ग्रन्थमाला सं. 2)

यह "मध्यकालीन" काल में संगीत के वैदिक संगीत का परिवर्तन का परिचय है। इसे अर्वाचीन संगीत का प्रवेशद्वार है। यह भारतीय संगीत की चर्चित का एक अनुपम ग्रंथ है। अतः इसलिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। संगीत [illegible] के [illegible] में चिन्तन तथा इस विषय के शोधकार्य का निर्णायक प्रस्तुत करता है। और साथ ही एक बात से [illegible] अनुवादक भी है।

प्रधान सम्पादक : डॉ. कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : डॉ. सुकुमार [illegible]
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.
41 यू.ए., बंगला रोड,
दरियागंज, दिल्ली - 110 007
1988 : पृष्ठ : xxiii + 236 मूल्य : 300 रुपए

5. *श्रीहस्तमुक्तावली* (क. मू. शा. ग्रन्थमाला सं. 3)

भारत के विभिन्न भागों में [illegible] अनेकों [illegible] तक संगीत, नृत्य और नाट्य भाषाओं पर अनेक पुस्तकें [illegible] 12वीं से 16वीं सदी के बीच क्षेत्रीय शैलियों [illegible] हुई। [illegible] में [illegible] श्रीहस्तमुक्तावली ही पूर्ती [illegible] है। यद्यपि इसके [illegible] के लिए [illegible] है, [illegible] संगीत [illegible]

समाविष्ट परिस्थितियों में पाया गया है। लेखक ने अपने कृतित्व को "[illegible]" [illegible] के चित्रण तथा [illegible] की मीमांसा [illegible] है। डॉ. मोहिनी [illegible] ने बड़ी सावधानी से इसका सम्पादन तथा अनुवाद किया है। [illegible] तथा मौलिकता की समग्रता से [illegible] की दर्शाया है। [illegible] की भाषा का [illegible] है जो संस्कृत तुर्की पदों से [illegible] है।

प्रथम सम्पादक : [illegible]
सम्पादक : डॉ. मोहिनी [illegible]
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.
41 यू.ए. बंगला रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली 110 007
1992 : पृष्ठ : XII+205 मूल्य : 200 रुपए

6. *कविकर्णरसायन*, 4 खण्डों में (क. मु. शा. ग्रन्थमाला सं. 4,5,6,7)

[illegible] के [illegible] में [illegible] भाषा में रचित कविकर्ण के 'रसायन' यानी मल्लसमाधान के मूलग्रन्थ के 10 पर्वों का गान मध्यकालीन [illegible] में जनपद स्तर से प्रचलित है। मल्लसमाधान की कुल और बृहत्कथा का कथन तथा उसके पश्चात् 'शिवा' नाम किस्म के मुस्लिम [illegible] का चित्रण ही 'मल्लसमाधान' जैसे कि पाठ पर्वों में मल्लसमाधान को कहा गया है। को [illegible] गया है, भाषा में सर्वत्र हिन्दुओं द्वारा इसी समीकरण प्रक्रिया को अपनाया जाता है। [illegible] सहित, सभी भारतीय भाषाओं में [illegible] कथाओं का [illegible] रूपान्तर के रूप में [illegible] आया है। परन्तु 'मल्लसमाधान' शब्द चित्रों का अन्य कथा में नहीं मिलता। केवल कविकर्ण के पालाओं में ही प्रयुक्त हुआ है। [illegible] मुस्लिम [illegible] को [illegible] तथा पालाओं में [illegible] करके और 'शिवा' को 'मल्लसमाधान' के रूप पर [illegible] कविकर्ण ने [illegible] तथा [illegible] पालाओं पर [illegible] समन्वय स्थापित करने का [illegible] प्रयत्न किया है जो राष्ट्रीय एकता की दिशा में एक [illegible] योगदान है। कविकर्ण ने अपने 10 पालाओं को जिस क्रम से लिखा था उसी क्रम को इस पुस्तक में अपनाया गया है।

प्रथम सम्पादक : डॉ. कपिल [illegible]
सम्पादक : डॉ. [illegible]
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगला रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली 110 007,
1992 : पृष्ठ : [illegible]82, मूल्य : [illegible]200 रुपए (4 खण्ड)

7. *बृहद्देशी खण्ड - I* (क. मु. शा. ग्रन्थमाला सं. 8)

संगीत के क्षेत्र में बृहद्देशी एक [illegible] ग्रन्थ है। [illegible] का [illegible] किया गया है, 'मार्गिणी' के विषय में बताया गया है, [illegible] प्रकार, [illegible] आदि के बारे में [illegible] परिचर्चा प्रस्तुत किया गया है और 'देशी' तथा उसके परिचय 'मार्गी' का मीमांसा को [illegible] किया गया है।

यद्यपि पाण्डुलिपि की खोज के अभाव में, यह ग्रंथ अभी तक अपूर्ण है, तथापि यह संस्करण, जहां तक इसका व्याप्ति क्षेत्र है जो कि पर्याप्त रूप से व्यापक है, अध्ययन एवं शोध के प्रयोजन से काफी उपयोगी होगा। संपूर्ण कृति तीन खंडों में प्रकाशित की जाएगी।

प्रधान सम्पादक : डॉ. कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : डॉ. प्रेमलता शर्मा
सह-प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41, यू.ए. बंगले रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-110 007,
1992 : पृष्ठ : xviii+194, मूल्य : 275 रुपए

ग. कलासमालोचन ग्रन्थमाला

8. *राम लेंजंड् एण्ड रिलीफ्स इन इंडोनेशिया*

विलियम स्टटरहाइम द्वारा 1925 में लिखित "राम लेंजंड् एण्ड राम रिलीफ्स" पुस्तक अपनी पुरातत्वीय मर्मज्ञता के कारण तथा एशियाई कला के अध्ययन के लिए भाषायी विश्लेषण के सिद्धान्तों को लागू करने की नई विधि का सूत्रपात करने के कारण भी एक उच्च कोटि की कृति माना गया है। इसमें इंडोनेशिया के प्रम्बनन मंदिर का विवेचन किया गया है।

लेखक : विलियम स्टटरहाइम
आमुख : डॉ. कपिला वात्स्यायन
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई. 37 हौजखास,
नई दिल्ली 110 016,
1989 : पृष्ठ : xxx+287+230 प्लेटें, मूल्य : 600 रुपए

9. *द थाउजेंड आर्म्ड अवलोकितेश्वर*

कला मर्मज्ञों एवं इतिहासज्ञों ने अवलोकितेश्वर की संकल्पना की नानाविध व्याख्या की है। यद्यपि अवलोकितेश्वर का मूल संस्कृत पाठ लुप्त हो गया फिर भी इसकी संकल्पना तथा छवि तिब्बत, चीन तथा जापान तक पहुंच गई। पुस्तक का मूल पाठ लिखित तथा मौखिक अनेक रूपों में उपलब्ध है।

प्राक्कथन : डॉ. कपिला वात्स्यायन
मूलपाठ : डॉ. लोकेश चन्द्र
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई. 37, हौजखास,
नई दिल्ली-110 016,
1988 : पृष्ठ : viii+303, मूल्य : 300 रुपए

10. *सिलेक्टेड लेटर्स ऑफ आनन्द के. कुमारस्वामी*

डॉ. आनन्द के. कुमारस्वामी की लेख मात्र के संग्रह इस लेखक के संदेशों तथा पत्रिकाओं के रूप, विभिन्नरूप सुव्यवस्थित रूप में प्रकाशित किए जाएँगे। इस ग्रंथ माला में उनके द्वारा श्रीलंका, भारत, एशिया तथा यूरोप के विभिन्न कलाओं शैलियों तथा भू विकास पर लिखे गये गहन शोधपूर्ण अभिलेखों को रखा है। "सिलेक्टेड लेटर्स ऑफ आनन्द कुमारस्वामी" इस ग्रंथ माला का पहला खण्ड है। इस खण्ड में सम्मिलित किए गए पत्र जो पहले कभी एक शिल्प में रहे हैं, उनमें इस विलक्षण मनीषी के असमसीय व्यक्तित्व का पता चलता है। जो किसी प्रकार के सिद्धान्तों, विचारों, नीतियों अथवा राजनीतिक या दार्शनिक मतों व वादों में विश्वास नहीं करता था। एक भू वैज्ञानिक के रूप में अपने प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त वैज्ञानिक सुझाव के साथ अपनी संवेदनशीलता का समन्वय करते हुए डॉ. आनन्द के. कुमारस्वामी ने इतिहास, दर्शन, धर्म, कला एवं शिल्प की विभिन्न दिशाओं का अध्ययन किया है।

सम्पादक : [illegible] डॉ. आनन्द के. कुमारस्वामी
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स प्रा. लि.,
[illegible],
[illegible],
1988 : पृष्ठ : xxxiii+[illegible] मूल्य 250 रुपए

11. *सिलेक्टेड लेटर्स ऑफ गेमांगेलां*

ये पत्र गेमांगेलां का [illegible] उनके [illegible] को मुर्शिदाबाद के [illegible] हैं। ये पत्र इस परिस्थिति को प्रकाशित करते हैं कि [illegible] कला की परिभाषा में नहीं बंधा है।

सम्पादक : [illegible]
प्रकाशक : डॉ. [illegible]
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स प्रा. लि.,
[illegible],
[illegible],
1992 : पृष्ठ : xxiii+[illegible] मूल्य : 125 रुपए

12. *वॉट इज सिविलाइजेशन?*

इस खण्ड में प्रकाशित पत्रों में [illegible] डॉ. आनन्द के. कुमारस्वामी की [illegible] शैली में [illegible] होने के साथ साथ [illegible] है। [illegible] के [illegible] इसमें [illegible] को [illegible]

भाषाओं में गहराई तक खोज की गई है। और एक साथ समग्र पाश्चात्य तथा प्राच्य सभ्यताओं का आदोपान्त विवेचन किया गया है।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
प्राक्कथन : सैयद हुसैन नस्र
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,
बाई. एम. सी. ए. स्टाइलेग बिल्डिंग,
जयसिंह रोड, नई दिल्ली 110 001.
1989 : पृष्ठ : xi+193, मूल्य : 250 रुपए

13. *इस्लामिक आर्ट एण्ड स्पिरिचुअलिटी*

यह अंग्रेजी भाषा में ऐसी पहली पुस्तक है जिसमें इस्लामिक कला, जिसमें स्थापत्य कला तथा संगीत भी शामिल है, के आध्यात्मिक महत्व का विवेचन किया गया है। इसने इस्लाम की विभिन्न कलाओं के इतिहास का विश्लेषण करने या उनका विवरण देने के बजाए, विद्वान लेखक ने इन कलाओं के रूप, विषय वस्तु, प्रतीकात्मक भाषा, अर्थ तथा उनकी उपस्थिति का इस्लामिक उद्भावना के मूल स्रोतों के साथ संबंध जोड़ा है।

लेखक : सैयद हुसैन नस्र
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,
बाई. एम. सी. ए. स्टाइलेग बिल्डिंग,
जयसिंह रोड, नई दिल्ली- 110 001
1990 : पृष्ठ : xv+213, मूल्य : 300 रुपए

14. *टाइम एण्ड ईटर्निटी*

हिन्दी-स्पिरिचुअलिटी में 1947 में मूलतः इसका प्रथम संस्करण कुमारस्वामी का अन्तिम ग्रंथ था जो उनके जीवनकाल में प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक में वे यह प्रतिपादन करते हैं कि यद्यपि हम काल की सीमा को ही मानते हैं पर हमारी मुक्ति अनन्त में ही निहित है। साथ ही वे यह प्रमाण करते हैं अर्थात् यह बताते हैं कि केवल आत्मा ही नित्यस्थायी वस्तु है और अनादि अनन्त वस्तु है।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
प्राक्कथन : डॉ. कपिला वात्स्यायन
सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मिलेनियर बुक्स, 35 B बिलिंग रोड, फ्रांस,
दिल्ली 110 001.
1992 : पृष्ठ : viii+107, मूल्य : 112 रुपए

15. *टाइम एण्ड ईटर्नल चेंज*

मिथक और पुराकथीय खगोल विज्ञान के अध्येता तथा भारतीय परंपराओं में पारंगत होने के साथ, लेखक विश्व में चलायमान काल एवं परिवर्तन के संबंध में अनेक कथनों के माध्यम से चक्रवाद का प्रतिपादन करते हुए बताते हैं कि काल के स्वरूप

के लिए में प्राचीन ग्रंथों को जो अन्वेषित हुए थे उनमें से कितनों को आधुनिक पोलिश तथा अंग्रेजी भाषा में अनुवाद है।

लेखक : [illegible]
पाठ्यक्रम : [illegible]
सह प्रकाशक : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
[illegible] 12, बीच पाम एन्क्लेव,
नई दिल्ली [illegible]
1992 : पृष्ठ : [illegible] मूल्य : [illegible]

16. *प्रिमियत्स ऑफ कॉम्पोजिशन इन हिन्दू स्कल्पचर*

इस पुस्तक में हिन्दू मूर्तिकला के अब तक अछूते रहे एक पक्ष को प्रस्तुत किया गया है। इसमें पुराणकालीन मूर्तिकला को विवेचित है और इस कला के ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक और संरचनात्मक पक्षों को न छूते हुए, इसमें अन्य कला से संरचना के कुछ पक्ष ही ध्यान केन्द्रित किया गया है।

लेखक : [illegible]
पाठ्यक्रम : [illegible]
सह प्रकाशक : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
[illegible] यू.ए. बंगलो रोड,
[illegible] दिल्ली [illegible]
1992 : पृष्ठ : [illegible] मूल्य : [illegible]

17. *इन सर्च ऑफ ऐस्थेटिक्स फॉर द पॉप्ट थिएटर*

पुनर्नव मिश्रण के एक [illegible] मूलतः [illegible] पत्रकारों द्वारा रचित यह पुस्तक पुरातनकाल काल के सौन्दर्यशास्त्र से संबंधित है। लेखक ने यह दर्शाया है कि पुरातनकाल में हिन्दू और [illegible] का विवेचन एक ही मंच पर किये किया जा सकता है। इसमें [illegible] और विभिन्न कलाकृतियों का विवेचन किया गया है।

लेखक : माइकेल [illegible] [illegible] मंत्रालय के सहयोग से
पाठ्यक्रम : [illegible]
सह प्रकाशक : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
[illegible] 12, बीच पाम एन्क्लेव,
नई दिल्ली [illegible]
1992 : पृष्ठ : [illegible] मूल्य : [illegible]

18. *एलोरा : कॉन्सेप्ट एण्ड स्टाइल*

यह ग्रंथ एलोरा की विश्वप्रसिद्ध शैलकृत गुफाओं के समन्वयात्मक विवेचन का विश्लेषणात्मक प्रयास है। इसका उद्देश्य भारतीय कला के अध्ययन के लिए एक रोचक विधि विकसित करने और कला के माध्यम से इतिहास के प्रति इनके महान योगदान की ओर आज आकर्षित करना है।

लेखक : कामील ज़ेवेल्स

अनुवाद : मुल्कराज आनन्द

सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37 हौज़खास,
नई दिल्ली-110 016

1992 : पृष्ठ : 392 + चित्र-270 : मूल्य : 750 रुपए

19. *अंडरस्टैंडिंग कुचिपुडी*

इस पुस्तक में कुचिपुडी को नई भारतीय नृत्य की विशिष्ट शैलियों में से कुचिपुडी नृत्य शैली का इतिहास, सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक पक्षों सहित एक अध्ययन के रूप में प्रस्तुत है। इसके अतिरिक्त इस शैली के विकास का इतिहास वर्णित किया गया है और इसका संबंध पुरातत्त्व एवं इसके सांस्कृतिक संदर्भों से स्थापित करते हुए विस्तृत प्रकाश डाला गया है। कुचिपुडी का इतिहास न केवल मंदिर तथा पर्दा के अन्योन्याश्रित संबंध को दर्शाता है अपितु स्थानीय एवं ग्रामीण, नगर एवं पुरुष तथा स्त्रियों तथा आंध्र प्रदेश के सामाजिक संघर्ष को भी प्रकट करता है।

लेखक : एन. सी. अस्थाना, आचार्य तथा सांस्कृतिक सलाहकार

प्राक्कथन : डॉ. कपिला वात्स्यायन

सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
एबन्स एंड डीएमपीएआईएस, अहमदाबाद,

1992 : पृष्ठ : 212, मूल्य : 220 रुपए

20. *ऐसेज इन अर्ली इंडियन आर्किटेक्चर*

भारत में स्थापत्य कला के इतिहास के प्रति कुछ सामान्यतः का योगदान प्रस्तुत करने हेतु यह पुस्तक लिखी गई थी। विशेष रूप से उत्तरी भारत के प्रारम्भिक स्थापत्य के पुनर्निर्माण के उद्देश्य से इसके द्वारा किए गए प्रयोग तथा स्थापत्य कृतियों का विश्लेषणात्मक विवेचन, साथ ही इस पुस्तक में प्रस्तुत मूल्यांकन या निष्कर्ष, कला जगत की एकरूप स्थापत्य परम्परा के साथ उसकी इतिहासों का निर्माण किया गया है।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी

सम्पादक : सिदहार्थ रमणु, बाइमान

प्राक्कथन : डॉ. कपिला वात्स्यायन

सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स प्रा. लि.,
ए-27, एम. सी. डी. मार्केट सिलेक्ट
सम्पूर्णा सेन्टर, नई दिल्ली-110 021

1992 : पृष्ठ : xxxiii+131 : मूल्य : 400 रुपए

21. *रिलीजन एण्ड द एनवाइरनमेंटल क्राइसिस*

[illegible] वर्ष पूर्व दिए गए एक व्याख्यान में, सैयद हुसैन नस्र ने पर्यावरण के इस संकट के कारण का मौलिक विवेचन किया था जिसमें आज विकसित तथा विकासशील दोनों देशों के विश्व को अपने चपेट में लिया लिया है।

लेखक : सैयद हुसैन नस्र

अनुवादक : डॉ. कपिला वात्स्यायन

मूल प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

अंतरराष्ट्र पब्लिकेशन्स,

ई-37 डीडीए, नई दिल्ली 16

1993 ; पृष्ठ : 32, मूल्य : ज्ञात

घ. कला दर्शन

22. *कॉन्सेप्ट्स एण्ड रेप्रॉजेक्ट्स* : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के लिए अन्तर्राष्ट्रीय वास्तुशिल्पीय डिजाइन प्रतियोगिता

[illegible] अंतर्राष्ट्रीय स्थापत्य प्रतियोगिता एक विशाल सांस्कृतिक संकुल जो नई दिल्ली में 120 हेक्टेयर क्षेत्र में बनाया जाना था के अनुरूप स्थापत्य करने के आह्वान के रूप में देश-विदेश से प्राप्त हुए, प्रतिकों पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को इस पुस्तक में सम्पूर्ण किया गया है। इस स्थापत्य प्रतियोगिता में 44 देशों से 103 प्रविष्टियां प्राप्त हुई। इस पुस्तक में कुल 50 पन्नों को पुस्तक सम्पूर्ण किया गया है, जिसमें पूरा काम दोनों भाषों के साथ प्रविष्टियां भी हैं जो विद्यालय आमंत्रित सम्पूर्ण थी, कलाकारों द्वारा सम्पूर्ण की गई थीं। यह पुस्तक आगे चलकर के छात्रों एवं कलाकारों के लिए उपयोगी सूचना का महत्वपूर्ण स्रोत है।

प्रकाशक : डॉ. कपिला वात्स्यायन

मूल प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

[illegible] पब्लिकेशन्स प्रा. लि.,

[illegible] अहमदाबाद 380013,

1992 ; पृष्ठ : 181, मूल्य : 1200 रुपए

ङ. छायांकन माध्यम ग्रन्थमाला

23. *गवारी : ए पेस्टॉरल कॉम्यूनिटी ऑफ कच्छ*

[illegible]

में यह एक उच्चकोटि की कला-कृति है और एक मनोवैज्ञानिक भाषणों के रूप में लेखन शैली की एक अभिनव अभिव्यक्ति है जिसमें लेखक ने अपनी मौलिक दृष्टि के बल पर विषय को पूर्ण न्यायसंगत की है, इसे पढ़ने में आनन्द आता है।

मूलपाठ एवं छायांकन : फ्रांसिस्को दि अंद्राडे फ्लावियो

प्राक्कथन : डॉ. कपिला वात्स्यायन

सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

अजन्ता प्रिन्ट्स प्रा. लि.,

[illegible], [illegible] इण्डस्ट्रियल एरिया,

फेज II, नई दिल्ली 110 020

1992 : पृष्ठ : xiii + 132 प्लेटें + [illegible] सूचियां, मूल्य : रु. [illegible]

च. आकाश / अंतरिक्ष की संकल्पना

24. *कॉस्मोप्टस ऑफ स्पेस : एनशंट एण्ड मॉडर्न*

इस ग्रंथ में अन्तरिक्षयान अध्ययन के क्षेत्र में नई खोजों की गई है जिनसे वह इन लोगों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गया है जो विज्ञान, धर्म की आन्तरिक शक्ति और संकल्पना तथा सांस्कृतिक को आधार बनाकर जीते हैं। इस द्विविध शैली का अत्यन्त संक्षेप और संपूर्णता का पूर्ण विषय भी इस खण्ड में सम्मिलित किया। यह विषयोन्मुख निबंधों का मूल्यपूर्ण संकलन का प्रयास है।

संपादक : डॉ. कपिला वात्स्यायन

सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

अभिनव पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली,

1991 : पृष्ठ : xxxvi + 668 प्लेटें, मूल्य : 1200 रुपए

छ. शैलकला ग्रन्थमाला

25. *रॉक आर्ट इन द अल्ड वर्ल्ड*

इस पुस्तक में [illegible] नये लेख प्रकाशित किया गया है जो 1988 में [illegible] में आयोजित [illegible] महासम्मेलन [illegible] में प्रस्तुत किया गया था। पहली बार, अफ्रीका, एशिया तथा यूरोप महाद्वीपों के प्रमुख चित्रकला शैलों की प्रमुख कला का एक ही पुस्तक में विवेचन करने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक में समाविष्ट प्रत्येक लेख इस बात के विश्वसनीय प्रमाण हैं कि शैलकला का अध्ययन के क्षेत्र पुरातत्व का दृष्टि से ही नहीं अपितु मानव जाति, चित्रकला तथा शैली अध्ययन के लिए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसका [illegible] यह दर्शाता है कि यदि भी ऐसा कला अन्वेषण का भी एक इतिहास है जो एक नई सोच दिशा के रूप में नया विकास [illegible] विषयक सामग्री को [illegible] से संकलन है। बहुत से शोध पत्रों से भारत में हुए व्यापक शोध कार्यों का पता चलता है।

यह परिवर्तनीय स्थान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शैल कला अध्ययन संबंधी [illegible] को [illegible] है। यह प्रमाण [illegible] तथा कला से संबंध रखने वाले छात्रों तथा विभिन्न विषयों के विद्वानों के लिए भी उपयोगी है।

पुस्तक सम्पादक : [illegible], कपिला वात्स्यायन

सम्पादक : डा. माइकेल लोरब्लांश

सह प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

विमोचक : [illegible] [illegible] इण्डस्ट्रियल [illegible], नई दिल्ली,

1991 : पृष्ठ : xxxvi + 342, मूल्य : 132 रुपए, 32 [illegible] विदेश में।

विवरणिकाएं, रिपोर्ट, फोल्डर एवं पुस्तिकाएं

विवरणिकाएं

1. इन्दिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर दि आर्ट्स : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र।
2. कला निधि
3. कला कोश
4. अनहद समय

रिपोर्ट

1. वार्षिक रिपोर्ट 1987-88
2. वार्षिक रिपोर्ट 1988-89
3. वार्षिक रिपोर्ट 1989-90
4. वार्षिक रिपोर्ट 1990-91

फोल्डर

1. आई. जी. एन. सी. ए.
2. आई. जी. एन. सी. ए., दि कॉन्सेप्ट एण्ड दि परिकल्पना

पुस्तिकाएं

1. [illegible] : [illegible] फेस्टिवल
2. [illegible] : [illegible]
3. [illegible] : [illegible] ऑन [illegible]

चित्र पोस्टकार्ड

प्रथम श्रृंखला

1. [illegible]
2. [illegible] की [illegible]
3. [illegible] चित्र
4. [illegible]

द्वितीय श्रृंखला

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]

तृतीय श्रृंखला

1. [illegible]
2. [illegible]

अनुबंध 8

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में वीडियो व ऑडियो प्रलेखन

कला निधि (सांस्कृतिक अभिलेखागार) में वीडियो ऑडियो प्रलेखन

(क) वर्तमान कला विभूतियां

1. गुरु अम्मनूर माधव चाकियार

[illegible]

2. संगीत कलानिधि श्रीमती टी. वृन्दा

[illegible]

(ख) नृत्य नाटक (बैले)

गीत गोविन्दम् का प्रलेखन

[illegible]

(ग) विभिन्न कलारूपों (शास्त्रीय, कर्मकाण्डीय तथा लोक) का प्रलेखन

श्री एन. जनार्दनन् द्वारा प्रस्तुत अष्टपदी

[illegible]

(घ) प्रलेखन (नृत्य तथा संगीत)

1. वृद्ध गुरुजनों के संकीर्तन की रिकार्डिंग

[illegible]

(1) [illegible] ... 05 [illegible]

(2) [illegible] ... 05 [illegible]

(3) [illegible] ... 05 [illegible]

2. जलतरङ्गम्

[illegible]

अनुबन्ध 9

अप्रैल, 1992 से 31 मार्च, 1993 तक हुई घटनाओं की तालिका

क्रम सं.	आयोजित वार्ताएं / समारोह	दिनांक
1.	"भूतान में वस्त्र एवं लोग" विषय पर डॉ. [illegible] की वार्ता	7.4.1992
2.	"भारत तथा दक्षिण पूर्व एशिया के बीच सांस्कृतिक संबंधों की खोज" विषय पर पी. [illegible] की वार्ता	22.4.1992
3.	"एशिया में अन्तर्राजनीतिक संबंधों के पन्द्रह वर्ष" विषय पर प्रो. [illegible] की वार्ता	28.4.1992
4.	"[illegible] की भी विकास [illegible]" विषय पर [illegible] की वार्ता	30.4.1992
5.	"बदलते समाज तथा सांस्कृतिक परिवर्तन : [illegible] विचार" विषय पर पी. [illegible] की वार्ता	29.5.1992
6.	"[illegible] के मध्य मानव [illegible]; [illegible] के [illegible] के साथ मुलाकातें" विषय पर [illegible] की वार्ता	10.6.1992
7.	"[illegible] में [illegible]" विषय पर [illegible] की वार्ता	15.6.1992
8.	"[illegible] का [illegible]" विषय पर [illegible] की वार्ता	19.6.1992
9.	"[illegible] की [illegible] : [illegible]" विषय पर [illegible] की वार्ता	2.7.1992
10.	"[illegible]" विषय पर [illegible] के साथ	2.7.1992
11.	"[illegible]" विषय पर [illegible] की वार्ता	2.7.1992

12	''[illegible]'' विषय पर डॉ. [illegible] की वार्ता	12.8.1992
13	''[illegible]'' विषय पर प्रो. [illegible] की वार्ता	14.8.1992
14	''[illegible]'' विषय पर डॉ. [illegible] की वार्ता	20.8.1992
15	''[illegible] 2000 तक [illegible] के विषय में एक [illegible] का [illegible]'' विषय पर श्री [illegible] की वार्ता	12.8.1992
16.	''[illegible] समस्या और भारत की [illegible] एकता'' विषय पर प्रो. [illegible] की वार्ता	12.8.1992
17	''[illegible]'' विषय पर डॉ. [illegible] की वार्ता	18.8.1992
18	''[illegible]'' विषय पर डॉ. [illegible] की वार्ता	19.8.1992
19	''[illegible]'' विषय पर डॉ. [illegible] की वार्ता	25.8.1992
20.	''[illegible]'' विषय पर प्रो. [illegible] की वार्ता	28.8.1992
21.	''[illegible]'' विषय पर श्री [illegible] की वार्ता	31.8.1992
22	''[illegible]'' विषय पर डॉ. [illegible] की वार्ता	12.9.1992
23	''[illegible]'' विषय पर श्री [illegible] की वार्ता	21.9.1992
24	''[illegible]'' विषय पर श्री [illegible] की वार्ता	22.9.1992

25.	''[illegible]'' विषय पर श्री [illegible] की गयी	23.9.1992
26.	''[illegible]'' विषय पर [illegible] की गयी	24.9.1992
27.	''[illegible]'' विषय पर श्री [illegible] की गयी	25.9.1992
28.	''[illegible]'' विषय पर [illegible] की गयी	9.10.1992
29.	''[illegible]'' विषय पर श्री [illegible] की गयी	12.10.1992
30.	''[illegible]'' : [illegible] विषय पर [illegible] की गयी	14-16.10.1992
31.	''[illegible]'' विषय पर श्री [illegible] की गयी	19.10.1992
32.	''[illegible]'' पर श्री [illegible] द्वारा [illegible] प्रस्तुति	26.10.1992
33.	''[illegible]'' विषय पर [illegible] की गयी	27.10.1992
34.	''[illegible]'' विषय पर श्री [illegible] द्वारा [illegible] प्रस्तुति	30.10.1992
35.	''[illegible]'' विषय पर [illegible]	[illegible]
36.	''[illegible]'' विषय पर [illegible] की गयी	[illegible]
37.	''[illegible]'' विषय पर [illegible] की गयी	[illegible]
38.	''[illegible]'' विषय पर श्री [illegible] की गयी	[illegible]

39.	''चारु की कहानी'' शीर्षक से [illegible]	19.11.1992
40.	''[illegible]'' विषय पर [illegible]	24.11.1992
41.	''[illegible]'' विषय पर [illegible]	2.12.1992
42.	''[illegible]'' विषय पर [illegible]	3.12.1992
43.	''[illegible]'' विषय पर [illegible]	8.1.1993
44.	''[illegible]'' विषय पर [illegible]	10.1.1993
45.	''[illegible]'' [illegible]	11.1.1993
46.	''[illegible]'' विषय पर [illegible]	15.1.1993
47.	''[illegible]'' विषय पर [illegible]	28.1.1993
48.	''[illegible]'' विषय पर [illegible]	2.2.1993
49.	''[illegible]'' विषय पर [illegible]	8.2.1993
50.	''[illegible]'' विषय पर [illegible]	15.2.1993
51.	''[illegible]'' विषय पर [illegible]	18.2.1993
52.	''[illegible]'' विषय पर [illegible]	22.2.1993

53.	''ऐतिहासिक शोध शैलियों के अध्ययन की मान्यताएं एवं पद्धति'' विषय पर डॉ. [illegible], प्रेक्षिप्त अंशों की बातें	5.3.1993
54.	''भारत में तथा यूरोप में आधुनिक सामाजिक विज्ञान शोध : भारत-भवन पर आधुनिक एवं यूरोपीय बौद्धिकों के कतिपय निष्कर्ष'' विषय पर प्रो. ई. [illegible] की बातें	12.3.1993
55.	''प्राचीन इतिहास के विभिन्न स्वरूपों की गाथाओं के लिख तथा प्रक्षेप'' विषय पर श्रीमती [illegible] की बातें	29.3.1993

अनुबन्ध 10

विभिन्न सम्मेलनों/संगोष्ठियों/कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए भेजे गए अधिकारियों का ब्यौरा

भाग लेने वाले का नाम	प्रयोजन एवं स्थान का नाम	अवधि
	अन्तर्राष्ट्रीय	
श्री डी. एल. बी. एस. [illegible] कनिष्ठ आयकर अधिकारी	बहुस्तर अभिलेखागारीय सामग्री केन्द्र (मल्टीमीडिया, आर्काइवल मैटीरियल सेंटर) हैदराबाद, आ. प्र. में पारंपरिक सामग्री के संरक्षण का प्रशिक्षण	5.9.1992 से 15.5.1993
	राष्ट्रीय	
डॉ. सी. ए. का. मुर्ति पुस्तकालयाध्यक्ष	58वीं इकाई साधारण सम्मेलन, नई दिल्ली	अगस्त 30 सितम्बर 3, 1992
	इन्सडोक कला पुस्तकालय कार्यशाला, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र	सितम्बर 3, 1992
	दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया देश के सदस्य देशों के विशेषज्ञों का द्वितीय बुनियादी प्रावधान बैठक, नई दिल्ली	फरवरी 24-28, 1993
	अन्तर्राष्ट्रीय फाउण्डेशन की संगोष्ठी, [illegible] तथा [illegible] विकास, [illegible], नई दिल्ली	मार्च 10, 1993
	[illegible] पर संगोष्ठी, चंडीगढ़	जनवरी 14-17, 1993
श्री ओमप्रकाश पकसंद पुस्तकालयाध्यक्ष	58वीं इकाई साधारण सम्मेलन, नई दिल्ली	अगस्त 30 से सितम्बर 5, 1992
	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आयोजित इकाई कला पुस्तकालय कार्यशाला में "दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के [illegible] संग्रह में, [illegible]	सितम्बर 3, 1993

	[illegible] के संयुक्त [illegible] तथा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] विषय पर [illegible] [illegible]	
	"[illegible]" देशों के बीच सांस्कृतिक, [illegible] [illegible] तथा [illegible] के लिए [illegible] ने [illegible] विषय पर [illegible] में अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तथा [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

श्री वी. सी. केसी	नेटवर्क स्थापित करने के लिए दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र के सदस्य देशों के विशेषज्ञों की द्वितीय पुनर्च्छा [illegible] बैठक, नई दिल्ली; "सांस्कृतिक धरोहर सूचना" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया गया।	फरवरी 24-28 1993
श्रीमती विमला गोयल	महाराजा विज्ञान कन्वेंशन्स, राष्ट्रीय संग्रहालय द्वारा संचालित, नई दिल्ली	दिसम्बर 22, 1992 से जनवरी 3, 1993

अनुबन्ध 11

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की सदस्य-सचिव डॉ. कपिला वात्स्यायन द्वारा वर्ष 1992-93 के दौरान भाग लिए गए सम्मेलनों/संगोष्ठियों की सूची

[illegible] 1992	[illegible]
[illegible] 1992	[illegible]
[illegible] 1992	[illegible]
[illegible] 1992	[illegible]
[illegible] 1992	[illegible]
[illegible] 1992	[illegible]
[illegible] 1992	[illegible]
[illegible] 1993	[illegible]
[illegible] 1993	[illegible]